साहित्य लहरी

तेलंगाणा ओपन स्कूल - इंटरमीडियेट हिंदी पाठ्यपुस्तक

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

प्रधान सलाहकार

श्रीमती वाकटि करुणा, आई.ए.एस.,

विशेष प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, तेलंगाणा राज्य

प्रधान संपादक

प्रो. शकीला ख़ानम,

आचार्य, कला संकाय, हिंदी विभाग, डॉ.बी.आर. अंबेड्कर ओपन यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

(Dean, Faculty of Arts Director, UGC–DEB Affairs and Campus Development)

प्रधान समन्वयक

श्री सय्यद मतीन अहमद

हिंदी समन्वयक व लेखक, एस.सी.ई.आर.टी व तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी - तेलंगाणा राज्य

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती ए. श्रीदेवसेना आई.ए.एस.,

निदेशक, स्कूली शिक्षा, तेलंगाणा राज्य

श्री पी.वी. श्रीहरी

निदेशक, तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

श्री मारासानि सोमी रेड्डी

संयुक्त निदेशक, तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

प्रकाशन

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद

© Government of Telangana State, Hyderabad

New Edition

First Published 2022

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Sarvatrika Vidya Peetham, Telangana, Hyderabad.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad, Telangana.

आमुख

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी (TOSS) का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा के माध्यम से सहयोग देना है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए Intermediate -TOSS शिक्षार्थियों के लिए इस नई पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। तेलंगाणा राज्य में हिंदी का शिक्षण प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा व तृतीय भाषा (अन्य भाषा) के रूप में किया जाता है। इन तीनों रूपों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का मुख्य उद्देश्य भाषा कौशलों और व्यावसायिक कुशलता का विकास करना तथा उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण करना है। इसीलिए इन तीनों रूपों का सम्मिलन करते हुए तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी की हिंदी की नवीन पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। इस नवीन पाठ्यपुस्तक के निर्माण में एनईपी -2020 के आधार पर सीखने की संप्राप्ति के अर्जन का ध्यान रखा गया है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण के समय शिक्षार्थियों की आयु, रुचि, योग्यता, स्तर, स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं और जीवनकौशल के साथ-साथ शिक्षार्थियों के समग्र विकास का विशेष ध्यान रखा गया है।

पाठों के चयन में विशेष सावधानी रखते हुए शिक्षार्थियों की रुचि व स्तर के अनुरूप पाठ्यपुस्तक में कविता, गीत, संवाद, निबंध, कहानी, साक्षात्कार, एकांकी, आत्मकथा जैसी विविध विधाओं का संकलन व सृजन किया गया है। इन पाठों की विषयवस्तु शिक्षार्थियों के द्वारा अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने में पूर्णतः सहयोग दे सकती है। इसमें भाषा के मौखिक व लिखित दोनों रूपों के विकास पर बल दिया गया है और शिक्षार्थियों की भाषायी दक्षता, सृजनशीलता, तार्किक चिंतन तथा अवलोकन व विश्लेषण की क्षमता के विकास हेतु बोध-प्रतिक्रिया, सृजनात्मक-अभिव्यक्ति और भाषा की बात शीर्षक के अंतर्गत भिन्न-भिन्न अभ्यास दिए गए हैं। सीखने की संप्राप्ति तथा जीवन कौशल पाठ की संरचना के प्रतिबिंब है।

आरंभ से अंत तक पाठ की संरचना की शैली शिक्षार्थियों के 'स्व-अधिगम' की पूर्ति करती है। क्योंकि ओपन स्कूल के शिक्षार्थी मुख्यतः 'स्व-अधिगम' पर अधिक निर्भर रहते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में 'जीवन-कौशल' के अंतर्गत दिए गए अभ्यास शिक्षार्थियों के सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ व्यावसायिक गुणों के विकास में सहायक होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में सरल, सुबोध, रोचक और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है, जो पूर्णतः मौखिक व लिखित भाषार्जन के सु-अवसर प्रदान करती है।

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी उन सभी के प्रति आभार प्रकट करती है, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक के लेखन, संपादन, टंकण, चित्रांकन, मुद्रण और प्रकाशन में विशेष सहयोग दिया है। साथ ही उन रचनाकारों के प्रति भी आभारी है जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में मुख्य सलाहकार के रूप में श्रीमती वाकटि करुणा आई.ए.एस., विशेष प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग तेलंगाणा राज्य सरकार का सहयोग अभिनंदनीय है। साथ-साथ श्रीमती ए.श्रीदेवसेना, आई.ए.एस., निदेशक, स्कूली शिक्षा, तेलंगाणा राज्य का सहयोग अभिनंदनीय है। इसके निर्माण में प्रधान समन्वयक के रूप में संपूर्ण सहयोग देने में श्री मारसानि सोमी रेड्डी का सहयोग प्रशंसनीय है। डीन व अध्यक्ष प्रो. शकीला ख़ानम डॉ. बी.आर.अंबेड्कर ओपन यूनिवर्सिटी का भरपूर सहयोग मिला है। डॉ. राजश्री मोरे विभागाध्यक्ष, तेलंगाणा महिला विश्वविद्यालय, हैदराबाद का विशेष सहयोग प्राप्त है। श्रीमती राधा रेड्डी निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. का महत्वपूर्ण सहयोग मिला है। हिंदी समन्वयक सय्यद मतीन अहमद का विशेष योगदान सराहनीय रहा है। श्रीमती जी. किरण और श्रीमती कविता का सृजनशील सहयोग प्राप्त है। डॉ. योगिता भाटिया और श्रीमती आरीफ़ा सुल्ताना का समृद्ध पूर्ण सहयोग प्राप्त है। इस तरह संपादक मंडल, लेखक गण सभी ने विशेष सहयोग दिया है। जिला शिक्षा अधिकारियों, उप-शिक्षाधिकारियों और प्रधानाचार्यों आदि सभी मेधावी गण का प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सहयोग प्राप्त हुआ है। आप सभी को तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी सहर्ष, साभार धन्यवाद देती है। आशा है कि यह पाठ्यपुस्तक सुनिश्चित उद्देश्यों के साथ शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास में सार्थक सिद्ध होगी।

निदेशक
तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

शिक्षार्थियों के लिए सूचनाएँ

प्रिय शिक्षार्थियो...

हिंदी की नवीन पाठ्यपुस्तक के साथ हम आपके समक्ष उपस्थित हैं। आपने Intermediate - TOSS के अंतर्गत हिंदी विषय पढ़ने के लिए चुना, इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। हम इस नवीन पाठ्य पुस्तक की विशेषताओं के बारे में आप से बात कर रहे हैं। जैसे कि आप जानते हैं कि भाषा के सहारे ही हम एक दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान मौखिक और लिखित दोनों रूपों में करते हैं। दूसरों की बात को हम सुनकर और पढ़कर ग्रहण करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रक्रिया के लिए भाषा-कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) की नितांत आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता के अनुरूप हमने इस पाठ्य पुस्तक के द्वारा इन भाषा-कौशलों को अधिक सशक्त, प्रभावी और सृजनशील बनाने का प्रयास किया है ताकि आप भाषा पर पकड़ हासिल कर सकें और जीवन के हर क्षेत्र में भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें। भाषार्जन का अर्थ केवल लिखित रूप का ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि मौखिक रूप का ज्ञान व विकास भी करना है। अतः हमें हिंदी में सुनने-बोलने के मौखिक भाषा विकास का अधिक ध्यान रखना चाहिए।

इस नवीन पाठ्य पुस्तक में 5 कविता पाठ, 5 गद्य पाठ और उपवाचक के रूप में 1 महत्वपूर्ण कहानी है। इसके साथ-साथ व्यावहारिक व्याकरण, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, प्रयोजन मूलक हिंदी और काव्य सौंदर्य (रस, छंद, अलंकार) हैं। आपके सुनने-बोलने के कौशल को विकसित करने, पठन कौशल को विकसित करने, तार्किक चिंतन को बढ़ावा देने, मनोरंजन करने तथा विश्लेषण की क्षमता का विकास करने के लिए यह पाठ्यपुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। प्रत्येक पाठ का निर्माण एक निश्चित संरचना के आधार पर किया गया है। पाठ का आरंभ सीखने की संप्राप्तियों से होता है। इसमें आपके द्वारा पाठ-पठन से अर्जित की जाने वाली दक्षताओं का उल्लेख है। हर पाठ के अंतर्गत क्रमशः उद्देश्य, विधा विशेष, प्रस्तावना, कवि/लेखक परिचय, विषयवस्तु, सारांश, शब्दार्थ और अभ्यास दिए गए हैं। आपको प्रत्येक पाठ अच्छी तरह से पढ़ना है। पढ़ते समय जिन शब्दों के अर्थ आपको समझ में नहीं आते, उन्हें रेखांकित करना है। इन शब्दों के अर्थ पाठ में दिए गए शब्दार्थ में ढूँढ़ना है। यदि इन शब्दों के अर्थ शब्दार्थ में भी नहीं मिलते हैं तो आपको शब्दकोश की सहायता लेनी है। मनोयोगपूर्वक पाठ-पठन के पश्चात् सारांश पढ़कर पाठ को अच्छी तरह समझना है। इसके पश्चात् अभ्यासों पर ध्यान देना है। ये अभ्यास- बोध-प्रतिक्रिया, बोध-अभिव्यक्ति, सृजन एवं जीवनकौशल और भाषा व्याकरण जैसे शीर्षकों के अंतर्गत दिए गए हैं।

''**बोध-प्रतिक्रिया**'' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आपको पाठ के विषय में शिक्षकों, सहपाठियों व मित्रों से चर्चा करनी चाहिए और पाठ बार-बार पढ़ना चाहिए। इन्हीं प्रश्नों में एक प्रश्न अपठित गद्यांश/पद्यांश से संबंधित है। आपको गद्यांश/पद्यांश अच्छी तरह से पढ़ना है, समझना है और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं।

“**बोध-अभिव्यक्ति**” के अंतर्गत स्वरचना से संबंधित प्रश्न (लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) हैं। इन प्रश्नों के उत्तर आपको सोच-विचार कर अपने शब्दों में लिखना हैं।

“**भाषा व्याकरण**” के अंतर्गत व्याकरणांशों के अभ्यास दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ से संबंधित व्याकरणांश अभ्यासों में निहित हैं।

अंत में “**सृजन एवं जीवन-कौशल**” से संबंधित प्रश्न भी है। इसमें जीवन कौशल तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति (विधाओं) से संबंधित प्रश्न हैं। इनके उत्तर भी आपको सोच-विचार कर अपने शब्दों में स्पष्ट करना है। इन प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य मौखिक और सामाजिक जीवन के विकास के साथ-साथ व्यावसायिक गुणों और क्षमताओं का विकास कर आप को सशक्त बनाना है।

आशा है भाषायी कौशलों और व्यावसायिक अवसरों से परिपूर्ण यह नवीन पाठ्यपुस्तक सुनिश्चित उद्देश्यों के साथ सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

निदेशक
तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

शिक्षकों के लिए सूचनाएँ

आदरणीय शिक्षको ...

- इस पुस्तक के सदुपयोग के लिए पूर्णतः मनोयोगपूर्वक पुस्तक पढ़ें। पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में ही ‘आमुख’, शिक्षार्थियों के लिए सूचनाएँ तथा पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता (अंग्रेज़ी में) दी गयी है।
- ‘आमुख’ के पठन से आपको पाठ्यपुस्तक संबंधी मौलिक जानकारी प्राप्त होगी। ‘शिक्षार्थियों के लिए’ जो सूचनाएँ दी गई हैं उन्हें पहले आप स्वयं पढ़ें फिर छात्रों से पढ़वायें। ये सूचनाएँ छात्रों को समझ में आयीं या नहीं, देखें। इन सूचनाओं के अंतर्गत ‘बोध-प्रतिक्रिया’ ‘बोध-अभिव्यक्ति’, ‘भाषा व्याकरण’ और ‘सृजनात्मकता-जीवन-कौशल’ के अंतर्गत दिए गए अभ्यासों का उल्लेख हैं। आपको इन शीर्षकों के अंतर्गत दिए गए अभ्यासों को क्रमबद्ध रूप में छात्रों से करवाना है।
- प्रत्येक पाठ में पाठ का नाम, सीखने की संप्राप्तियाँ, उद्देश्य, विधा-विशेष, प्रस्तावना, कवि/लेखक परिचय, विषय-वस्तु और अभ्यास-कार्य दिए गए हैं। अभ्यास-कार्यों में सृजनात्मकता-जीवन कौशल से संबंधित प्रश्न हैं। इन्हें शिक्षार्थियों से अनिवार्य रूप से करवाना है। शिक्षण केंद्र में आबंटित दिनों की संख्या के आधार पर एक-एक पाठ के लिए कालांश-विभाजन कर लें।
- स्वरचना के प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले कक्षा में चर्चा करवायें। तत्पश्चात् अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रेरित करें।
- इस बात का सदा ध्यान रहें कि भाषा विकास का अर्थ केवल भाषा के लिखित रूप का ही नहीं

बल्कि मौखिक रूप का भी विकास करना है। अतः इस नवीन पाठ्य पुस्तक में लिखित भाषा के साथ-साथ मौखिक भाषा के विकास के लिए भी विशेष स्थान दिया गया है।

- **भाषा व्याकरण** के प्रश्नों के लिए अनेक उदाहरण शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करें।
- **बोध-अभिव्यक्ति** के प्रश्नों के लिए भी चर्चा करवायें और अिपने शब्दों में लिखने के लिए शिक्षार्थियों को प्रेरित करें।
- सृजन एवं जीवन कौशल के प्रश्नों में विविध विधाओं से संबंधित प्रश्न हैं। शिक्षार्थियों को विधाओं के सृजन के लिए प्रेरित करें।
- शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए प्रत्येक शिक्षण केंद्र में एक शब्दकोश की व्यवस्था हो।
- प्रत्येक पाठ के अभ्यास एक पुस्तिका (note book) में लिखवायें। समय-समय पर उनकी जाँच करें तथा उनमें सुधार के लिए अपनी सलाह दें।
- कक्षा-कक्ष शिक्षण के साथ ऑनलाईन शिक्षण की व्यवस्था की जायेगी। इस सुविधा का अध्ययन-अध्यापन में भरपूर सहयोग लें।
- पाठों में अभ्यासों के अंतर्गत दिए गए प्रश्न ज्यों-के-त्यों परीक्षा में पूछे नहीं जा सकते, इसीलिए शिक्षार्थियों को स्व-लेखन के लिए प्रेरित करें। स्व-लेखन का कार्य शिक्षार्थियों के लिए परीक्षा उपयोगी तो सिद्ध होगा ही, साथ ही उनके भाषायी कौशलों के विकास में भी सहायक होगा।
- शिक्षार्थियों की पठन समग्रता के विकास के लिए बाल-साहित्य, समाचार-पत्र,मैगज़ीन और अन्य पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
- शिक्षण केंद्र में शिक्षार्थियों के लिए वाद-विवाद, भाषण, क्विज़, निबंध लेखन, गीत-संगीत, नाटक, अभिनय जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन करें।
- सदा इस बात का स्मरण रहें कि शिक्षार्थियों के भाषा व समग्र विकास में पाठ्य पुस्तक एक उत्तम साधन मात्र है, साध्य नहीं। इसे भाषा विकास के विविध संसाधनों से जोड़ने का भरपूर प्रयास करें। जैसे-पुस्तकालय, कंप्यूटर, दूरदर्शन, सिनेमा, भाषा संबंधी खेल आदि।
- हिंदी शिक्षण में मातृभाषा या माध्यमिक भाषा का यथासंभव कुछ हद तक सहारा लिया जा सकता है। परंतु पूर्णतः अनुवाद शिक्षण न हो। आवश्यकता के अनुसार बहुभाषिकता का सीमित प्रयोग भी किया जा सकता है।
- इस नवीन पाठ्य-पुस्तक का मुख्य उद्देश्य भाषा के मौखिक व लिखित दोनों रूपों के विकास के साथ-साथ शिक्षार्थियों को सृजनशील बनाना है और उनका समग्र विकास करना है।

आशा है कि आदरणीय शिक्षक गण इन बातों को अच्छी तरह समझकर Intermediate - TOSS शिक्षार्थियों के भाषा, सृजन और समग्र विकास में भरपूर सहयोग देंगे।

निदेशक
तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा राज्य

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

प्रधान संपादन

प्रो. शकीला ख़ानम,

आचार्य, कला संकाय, हिंदी विभाग, डॉ.बी.आर. अंबेड्कर ओपन यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

(Dean, Faculty of Arts Director, UGC–DEB Affairs and Campus Development)

समन्वय, सह-संपादन, सह-समन्वय व सहभागिता

श्री सय्यद मतीन अहमद

हिंदी समन्वयक व लेखक, एस.सी.ई.आर.टी व तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी - तेलंगाणा राज्य

डॉ. मल्ला सर्ज मंगोडी

क्षेत्रीय निदेशक, दूरविद्या निदेशालय, महात्मा गांधी
अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. रमेश कुमार

सह आचार्य, प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
एन सी ई आर टी, नई दिल्ली

श्रीमती जी. किरण

सह-समन्वय, लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

श्रीमती कविता

सह-समन्वय, लेखिका, एस.आर.जी., तेलंगाणा राज्य

डॉ. राजश्री मोरे

हिंदी विभागाध्यक्ष, महिला महाविद्यालय, कोठी, हैदराबाद

डॉ. योगिता भाटिया

हिंदी लेखिका, नई दिल्ली

सहयोगिता

डॉ. शक्तिराज

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

डॉ. शशिकांत मिश्रा

हिंदी विभागाध्यक्ष, ए.वी.कॉलेज, दोमलगुड़ा, हैदराबाद

डॉ. मंजू शर्मा

हिंदी विभागाध्यक्ष, चिरक इंटरनेशनल हाईस्कूल, हैदराबाद

श्री. मोहम्मद सलीम

संपादक, डेली हिंदी मिलाप, हैदराबाद.

श्रीमती टी. अनुराधा

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य

श्री मोहम्मद यूसुफुद्दीन

एस. आर. जी., तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद.

डी.टी.पी., ले आउट & डिज़ाइन

श्रीमती आरीफ़ा सुल्ताना, तेलंगाणा हिंदी अकादमी, हैदराबाद

Mail Id: telanganagraphics@gmail.com; ✆ : 7095337078

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्यविधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत भाग्यविधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं उसकी, यह गुलसिताँ हमारा।।
पर्वत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, जिसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकटा सुब्बाराव

विषय-सूची

क्र.सं. विषय पृष्ठ संख्या

इकाई - I पद्य लहरी

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	नीति दोहे (दोहे)	1-5
2.	स्नेह संवाद (चौपाई)	6 -12
3.	झाँसी की रानी (कविता)	13-19
4.	कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती (कविता)	20-25
5.	है प्रीत जहाँ की रीत सदा (गीत)	26-32

इकाई - II गद्य लहरी

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	कृत्रिम मेधा (संवाद)	33-42
2.	एक कहानी यह भी (आत्मकथा)	43-54
3.	कृषि जगत (निबंध)	55-63
4.	एक तोले अफ़ीम की क़ीमत (एकांकी)	64-81
5.	प्राकृतिक आपदा प्रबंधन (साक्षात्कार)	82-97

इकाई - III उपवाचक- ताई (कहानी) - 98-107

इकाई - IV सरल हिंदी व्याकरण और प्रयोजनमूलक हिंदी - 108-160

इकाई - V हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास और काव्य सौंदर्य - रस, छंद, अलंकार - 161-183

इकाई-I

1. नीति दोहे

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- दोहे पढ़कर उनका रसास्वादन करेंगे।
- दोहा छंद के बारे में बताएंगे।
- मीठी वाणी का महत्व बताएंगे।
- अपने जीवन में सद्गुणों का महत्व समझेंगे।
- नैतिक जीवन का महत्व बताएंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- कविता पाठ का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखेंगे।
- मीठी वाणी का महत्व बताएंगे।
- दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- भाषा व्याकरण संबंधित प्रश्नों के उत्तर बताएंगे।
- दिए गए शब्दों के पर्यायवाची, शुद्ध रूप, विलोमार्थी लिखेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- जीवन में नैतिकता का महत्व बताएंगे।
- दोहों के आधार पर सूक्तियाँ लिखेंगे।

उद्देश्य

काव्य रचना में दोहा छंद से परिचित कराना।
दोहे सृजन करने की प्रेरणा देना।
जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास करना।

विधा विशेष

पद्य रचना में दोहा एक विशेष छंद है। दोहा अद्र्धसम मात्रिक छंद है। यह दो पंक्तियों का होता है। इसमें चार चरण माने जाते हैं। इसके विषम चरणों प्रथम तथा तृतीय में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों द्विवितीय तथा चतुर्थ में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे बहुत प्रभावशाली होते हैं।

प्रस्तावना

इस पाठ में, नीति और लोक व्यवहार संबंधी दोहे दिए गए हैं। इनमें सद्भावना, विनम्रता और नैतिकता पर बल दिया गया है। कबीर के दोहे बाह्याडंबर का खंडन करते हैं। रहीम के दोहों से मानव स्वभाव व व्यवहार को स्पष्ट किया गया है। दोहे समाज सुधार में भी सहायक होते हैं। इनसे व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक गुणों का विकास होता है। व्यक्तित्व का विकास होता है। करुणा, दया, भाईचारा आदि भावनाओं का विकास होता है।

कबीरदास

कवि परिचय

कबीरदास निर्गुण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। इन्होंने ज्ञान को साधना का मार्ग बनाया था। कबीर का जन्म सन् 1399 ई में हुआ था। ये हिंदु-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। इनके गुरु रामानंद थे। गुरु से इन्होंने राम नाम की दीक्षा ली थी। ये पढ़े-लिखे नहीं थे। लेकिन इन्होंने खूब देशाटन किया था। पंडितों और फकीरों के सत्संग से ज्ञान का संपादन किया था। ये प्रेम, सत्य और हृदय की अनुभूति पर जोर देते थे। आडम्बरों का खंडन करते थे। अंधविश्वासों का तीव्र विरोध करते थे।

संत कबीर कपड़े बुनकर पेट पालते थे। ये करघे पर बैठकर कविता कहते थे। इनके शिष्य उसको लिखते थे। इस प्रकार बीजक नामक ग्रंथ तैयार हुआ था। इसके तीन भाग हैं - 1 साखी 2 सबद 3 रमैनी। इसमें कबीर के अनेक रूप हैं। जैसे ज्ञानी, भक्त, सुधारक और कवि। इनके दोहे और पद हमारी संस्कृति की बहुमूल्य विरासत हैं। इनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहते हैं। वे अंतकाल में काशी छोड़कर मगहर में जाकर बस गए। वहीं सन् 1528 में इनका निधन हुआ था।

कबीर के दोहे

1) ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।

2) दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।

रहीम

कवि परिचय

भक्ति काल के प्रसिद्ध कवि रहीम का जन्म 17 दिसंबर सन् 1556 को लाहौर में हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना है। इनके पिता बैरम खाँ थे। वे अकबर के संरक्षक थे। रहीम बचपन से ही विद्या प्रेमी थे। इन्होंने फारसी, अरबी, तुर्की, संस्कृत, हिंदी आदि भाषाएँ सीखीं। इनकी बुद्धिमता व व्यक्तित्व को देखकर अकबर बहुत प्रभावित थे और अधिकांश समय रहीम को वे अपने साथ ही

रखते थे। आगे चलकर वे अकबर के दरबारी कवि, सेनापति और मंत्री बने। अपनी प्रतिभा के कारण उनको अकबर के दरबार के नवरत्नों में स्थान मिला। रहीम की प्रमुख रचनाएँ रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, श्रृंगार सोरठा, नगरशोभा और खेट कौतुकम आदि हैं। रहीम ने हिंदी साहित्य की अद्‌वितीय सेवा की। उनके भक्ति, नीति और लोक व्यवहार संबंधी दोहे अधिक लोकप्रिय हैं। उनके नीति संबंधी दोहे के मूल में मानव स्वभाव और व्यवहार से संबंधित कोई न कोई सत्य छिपा रहता है। रहीम ने अवधी, ब्रज दोनों भाषाओं में कविताएँ लिखीं। इनका देहांत सन् 1627 ई. में हुआ।

रहीम के दोहे

1) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारी।

2) रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. कवि ने मीठी वाणी पर क्यों बल दिया है?
2. पानी के संबंध में रहीम के क्या विचार है?

कबीर के दोहों का भाव

1) ऐसी वाणी ....आपहु शीतल होय।

भावः इस दोहे के माध्यम से कबीरदास कहना चाहते हैं कि मनुष्य को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वाले व्यक्ति का क्रोध कम हो जाए तथा वह मन में शीतलता का अनुभव करें। ऐसा करने से ना केवल सुनने वाले व्यक्ति का मन शीतल होगा बल्कि अपना भी मन शीतल होगा और मन की शांति प्राप्त होगी।

सीखः क्रोध का जवाब मीठी वाणी से देना चाहिए। क्रोध में भी हमें अपनी वाणी को शीतल ही रखना चाहिए।

2) दुःख में सुमिरन ....काहे होय।

भाव : कबीरदास कहते हैं कि जब मनुष्य पर दुःख या विपदा आती है तभी वह ईश्वर का स्मरण करता है। सुख में वह कभी भी ईश्वर को याद नहीं करता है। कबीर कहते हैं कि यदि मनुष्य सुख के समय में भी ईश्वर का स्मरण करेगा तो उसे कभी भी दुःखों का सामना करना नहीं पड़ेगा।

सीख : इस दोहे में कबीर ने मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव का वर्णन किया है। दु:ख हो या सुख हर समय ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

रहीम के दोहे-

1) रहिमन देखि .... कहा करे तलवारि।

भाव : रहीम कहते हैं बड़े व्यक्ति (उच्च कुल के धनी) को देखकर छोटे व्यक्ति (साधारण) का त्याग नहीं करना चाहिए। बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जहाँ कपड़े सीने में सुई काम आ सकती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता है। जो काम छोटी सी सुई से हो सकता है वह काम बड़ी तलवार से नहीं हो सकता।

सीख : जीवन में छोटे-बड़े सभी को महत्व देना चाहिए। सभी अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण हैं।

2) रहीमन पानी राखिये, ... मानुष, चून।।

भाव : इस दोहे में रहीम ने पानी का तीन अर्थो में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है। इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होनी चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए।

सीख : मनुष्य विनम्रता से उन्नति करता है। यहाँ विनम्रता से महान् बनने की बात बताई गई है।

नए शब्द

1.	शीतल	=	ठंडा	आपहु	=	स्वयं
	आपा	=	गुस्सा	वाणी	=	वचन
2.	सुमिरन	=	स्मरण	कोय	=	कोई भी
	काहे	=	क्यों	होय	=	होगा
3.	देखि	=	देखकर	लघु	=	छोटा
4.	मानुष	=	मनुष्य	चून	=	आटा, चूना

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. दुःख में .... दुःख काहे को होय।।
2. रहीमन पानी राखिये, ... मानुष, चून।।

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

कहो सच किसी को कभी मत सताओ।
करो लोकहित प्रीति प्रभु से लगाओ।
भली चाल चल चित्त-ऊँचा बनाओ।
बुरा मत करो पाप भी मत कमाओ।
बहुत बातें हैं इस तरह की सुनाती।
कि जो सार हैं सब मतों का कहाती।

प्रश्नः

1. कवि ने किसके प्रति स्नेह दर्शाने के लिए कहा है?
2. चित्त को किस प्रकार ऊँचा बनाना है?
3. व्यक्ति को क्या नहीं कमाना चाहिए?
4. सुनायी गयी बातें किसका सार है?
5. 'चित्त' का क्या अर्थ है?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. मीठी वाणी की विशेषता बताइए।
2. छोटे-बड़े सभी को समान महत्व देना चाहिए। पुष्टि कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. हमारे जीवन में नीति दोहों का क्या महत्व है? स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ में दिए गए दोहों में से किन्हीं दो दोहों के बारे में अपने विचार लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए।** 1) कोय 2) आपहु 3) डारि 4) सुमिरन

(आ) **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।** 1) मन 2) शीतल 3) दुःख 4) नर

(इ) **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।** 1) शीतल 2) दुःख 3) लघु 4) ऊँचा

(ई) **किन्हीं दो दोहों के अलंकार बताइए।**

IV सृजन - जीवन कौशल

1. नीति वचनों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. नैतिकता से संबंधित सूक्तियाँ लिखिए।

2. स्नेह संवाद

– तुलसीदास

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- क्रोध के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में बताएंगे।
- पाठ की पंक्तियों का भाव स्पष्ट करेंगे।
- अपठित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- पाठ का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखेंगे।
- पाठ की विधा – 'चौपाई' के बारे में लिखेंगे।
- पाठ में आए विनय, संयम, साहस आदि गुणों का महत्व बताएंगे।
- तुलसीदास का परिचय अपने शब्दों में लिखेंगे।
- पाठ में आए पात्रों का चरित्र चित्रण करेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।
- पाठ की समीक्षा अपने शब्दों में करेंगे।

भाषा व्याकरण

- दिए गए शब्दों के पर्यायवाची और विलोम शब्द लिखेंगे।
- सामासिक शब्दों का प्रयोग समझेंगे।
- अलंकारों की पहचान करेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- संवाद लेखन करेंगे।
- जीवन में संयम, विनय आदि सद्गुणों को अपनाएंगे।

उद्देश्य

भक्ति काव्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना। चौपाई शैली से अवगत करवाना। काव्य सृजन की प्रेरणा देना। क्रोध से उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों से अवगत कराना। अलंकारों का परिचय कराना। विनय, संयम, साहस आदि गुणों का विकास करना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ चौपाई शैली में है। यह एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। हर एक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के आखिर में जगण (IIS) और तगण (SII) नहीं होना चाहिए। पहले चरण की तुक दूसरे से और तीसरे चरण की तुक चौथे से मिलती है। यति हर चरण के अंत में होती है। चरण के आखिर में गुरु (S) स्वर या लघु (I) स्वर नहीं होने चाहिए। लेकिन दो गुरु स्वर और दो लघु स्वर हो सकते हैं।

प्रस्तावना

यह संवाद रामचरितमानस के बालकांड से लिया गया है। बालकांड में राम-लक्ष्मण की बाल लीलाओं तथा उनके विवाह आदि का वर्णन है। इस कांड में सीता स्वयंवर का भी वर्णन है। सीता स्वयंवर में राम द्‌वारा शिवधनुष भंग करने के बाद का वर्णन है। शिवधनुष को खंडित देखकर परशुराम आपे से बाहर हो जाते हैं। राम के विनयी स्वभाव और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर अंततः उनका गुस्सा शांत होता है। इस बीच राम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उसका वर्णन यहाँ किया गया है।

कवि परिचय

इस पाठ के कवि तुलसीदास हैं। तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा ज़िले के राजापुर नामक गाँव में सन् 1532 में हुआ था। रामभक्ति परंपरा में तुलसी अतुलनीय है। रामचरितमानस काव्य कवि की अनन्य रामभक्ति और इनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। भक्ति के द्‌वारा इन्होंने समाज को नीति मार्ग दिखाया और भारतीय संस्कृति की रक्षा की। रामचरितमानस के अलावा कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, हनुमान बाहुक आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। सन् 1623 में काशी में इनका स्वर्गवास हुआ था।

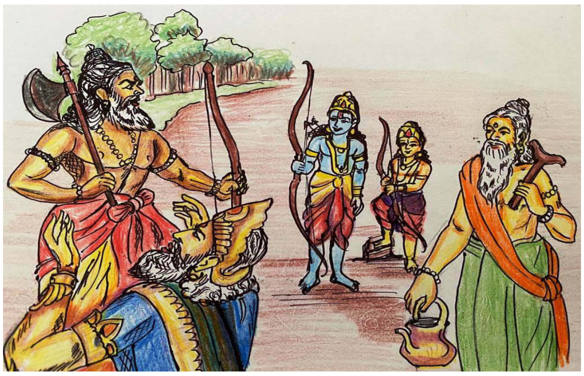

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार।।

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. शिवधनुष के तोड़े जाने का कारण क्या है?
2. परशुराम क्यों क्रोधित हुए? आपके विचार में क्या यह उचित है? क्यों?
3. क्रोध के कारण कैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं?
4. इस पाठ में कौनसा पात्र आपको अच्छा लगा और क्यों?

सारांश : यह कविता रामचरितमानस के बालकांड से ली गई है। श्रीराम के शिवधनुष तोड़ने के पश्चात श्रीराम लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो बातचीत हुई है उसी प्रसंग का यहाँ वर्णन किया गया है।

श्रीरामचंद्र परशुराम से कह रहे हैं कि - हे नाथ! शिवधनुष तोड़ने वाला आपका कोई एक दास ही होगा। आप आज्ञा दीजिए कि आप किस प्रयोजन से यहाँ आए हैं? क्रोधी मुनि यह सुनकर और अधिक क्रोधित होते हुए बोले- सेवक वही होता है जो सेवा का कार्य करता है। शत्रुता के कार्य करने वाले के साथ तो लड़ाई करनी चाहिए। हे राम! सुनो, जिस किसी ने भी यह धनुष तोड़ा है वह सहस्त्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। वह शीघ्र, अति शीघ्र इस समाज को छोड़कर अलग हो जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएंगे। मुनि के इस प्रकार के वचन सुनकर लक्ष्मण मुस्कुराए और परशुराम का अपमान करने के उद्देश्य से बोले, हे गोसाई! हमने बचपन में बहुत सी धनुहिया तोड़ डाली किंतु आपने इस प्रकार का क्रोध कभी नहीं किया। फिर इस धनुष पर इतनी ममता किस कारण से है? यह सुनकर रघुकुल की ध्वजा स्वरूप परशुराम ने क्रोधित होकर कहा - हे राजपुत्र! तुम काल के वश में हो इसलिए संभल कर होश में नहीं बोल रहे हो। समस्त संसार में विख्यात शिवधनुष क्या धनुहियों के समान है?

लक्ष्मण हंस कर कहते हैं - हे देव! सुनिए हमारी समझ में तो सभी धनुष एक जैसे हैं। इस पुराने धनुष को तोड़ने में क्या हानि और क्या लाभ। श्रीरामचंद्र ने तो इसे नए के भ्रम में देखा था। यह तो छूते ही टूट गया। इसमें रघुनाथ का कोई दोष नहीं है। हे मुनि! आप बिना कारण ही किसलिए इतना क्रोधित हो रहे हैं? परशुराम अपने फरसे की ओर देखकर बोले- अरे, दुष्ट तूने मेरा स्वभाव नहीं समझा है। मैं तुझे बालक समझकर नहीं मार रहा हूँ। हे मूर्ख! तुम मुझे केवल मुनि ही समझते हो। मैं बाल ब्रह्मचारी और अंत्यत क्रोधी हूँ। विश्व भर में मैं क्षत्रिय कुल के शत्रु के रूप में विख्यात हूँ। मैंने अनेक बार इस धरा को क्षत्रिय राजाओं से छीन लिया और बहुत बार उसे ब्राह्मणों को दे डाला है। हे राजकुमार! सहस्त्राबाहु की भुजाओं को छिन्न-भिन्न करने वाले इस फरसे की ओर देख।

नए शब्द

1.	संभुधनु	= शिव का धनुष	5.	आयेसु	= आज्ञा
2.	भंजनिहारा	= तोड़ने वाला	6.	काह	= क्यों
3.	होइहि	= होगा	7.	कहिअ	= कहते हो
4.	केउ	= कोई	8.	किन	= क्यों नहीं

9. मोही = मुझे
10. रिसाई = क्रोध करके
11. कोही = क्रोधी
12. सेवकाई = सेवा
13. अरिकरनी = शत्रुता का कर्म
14. करि = करके
15. लराई = लड़ाई
16. जेहि = जिसने
17. तोरा = तोड़ा
18. सो = वह
19. मेरा = मेरा
20. बिलगाऊ = अलग करके
21. बिहाइ = छोड़कर
22. जैहहिं = जाएंगे
23. लखन = लक्ष्मण
24. मुसुकाने = मुस्कुराने लगा
25. परसुधरहि = फरसा धारण करने वाले को
26. अवमाने = अपमान करके
27. बहु = बहुत
28. धनुही = धनुष
29. तोरी = तोड़े
30. लरिकाई = लड़कपन में
31. कबहुँ = कभी
32. असि = ऐसा
33. रिस = क्रोध
34. किन्ही = किया
35. केहि = किस
36. भृगुकुलकेतु = भृगु वंश के महान पुरुष
37. कालबस = मृत्यु के वश में
38. तोहि = तुझ से
39. सँभार = संभलकर
40. धनुही = छोटा धनुष
41. त्रिपुरारी धनु = शिव जी का धनुष
42. बिदित = परिचित
43. सकल = सारा
44. हसि = हँसकर
45. जाना = ज्ञानानुसार
46. का = क्या
47. छति = क्षति, हानि
48. जून = पुराना
49. तारे = तोड़ने में
50. कत = क्यों
51. रोसू = रोष, गुस्सा
52. चितै = देखकर
53. परसु = फरसा
54. सठ = मूर्ख
55. बधौं = वध
56. जड़ = मूर्ख
57. कोही = क्रोधी
58. बिस्वबिदित = संसार में प्रसिद्ध
59. द्रोही = दुश्मन
60. महिदेवन्ह = ब्राह्मणों को

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।
   आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनिए रिसाई बोले मुनि कोही।।
2. बहु धनुही तोरी लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
   येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगु कुलकेतू।।

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो
पुरुष क्या पुरुषार्थ हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो
सुलभ कौन तुम्हें ना पदार्थ हो
प्रगति के पथ में विचारों उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है
कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख-शांति भरो उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

प्रश्नः

1. पुरुष में पुरुषार्थ होने का क्या अर्थ है?
2. कवि ने किसे तजने के लिए कहा है?
3. पुरुषार्थ होने का क्या लाभ है?
4. पुरुषार्थ के बिना क्या-क्या नहीं है?
5. कवि कहाँ सुख-शांति भरने के लिए कह रहे हैं?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए? अपने शब्दों में लिखिए।
2. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का होना आवश्यक होता है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।
3. परशुराम का क्रोध करना उचित है या अनुचित। अपने विचार लिखिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. पाठ के आधार पर राम-लक्ष्मण और परशुराम के संवादों की तुलना कर अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1. मुनि, 2. रिपु, 3. नृप

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1. सेवक, 2. संयम, 3. देव

(इ) निम्नलिखित शब्दों का सामासिक रूप लिखिए।

1. क्षत्रिय कुल, 2. भुजबल

(ई) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए।

1. सेवकु सो जो करै सेवकाई।
2. बालकु बोलि बधौं नहीं तोही।

IV सृजन - जीवन कौशल

1. इस पाठ की कोई दो चौपाइयों को संवाद रूप में लिखिए।
2. जीवन में विनय और संयम का महत्व क्या है?

3. झाँसी की रानी

– सुभद्रा कुमारी चौहान

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- कविता पढ़कर कविता का रसास्वादन करेंगे।
- कविता पढ़कर अर्थग्रहण करेंगे।
- कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में बताएंगे।
- कविता विधा के बारे में बताएंगे।
- कविता में आए पात्रों के बारे में चर्चा करेंगे।
- कविता में दर्शाई गई घटनाओं के बारे में चर्चा करेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखेंगे।
- सुभद्रा कुमारी चौहान का परिचय अपने शब्दों में लिखेंगे।
- कविता के बारे में अपने विचार लिखेंगे।
- कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- कविता में आए शब्दों का अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग करेंगे।
- कविता में आए विशेषण शब्दों की पहचान करेंगे और लिखेंगे।
- कविता में आए प्रत्यय शब्दों की पहचान करेंगे और लिखेंगे।
- पुनरुक्ति शब्द पहचान कर लिखेंगे।
- उपसर्ग शब्द पहचान कर लिखेंगे।
- शब्दों का शुद्ध रूप लिखेंगे।
- समास पहचान कर नाम लिखेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- देश भक्ति से संबंधित नारे लिखेंगे।
- अपने अधिकारों का उपयोग करने में सक्षम बनेंगे।

उद्देश्य

झाँसी की रानी की वीरता से साहसी बनने की प्रेरणा देना। देश प्रेम की भावना जागृत करना। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का परिचय देना।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक गेय कविता है। कविता साहित्य की एक सशक्त विधा है। कविता वह विधा है जिसमें मनोभावों को कलात्मक रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। इसमें लय, ताल, राग, गीत, संगीत, मधुरता आदि होते हैं।

प्रस्तावना

'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' अपनी वीरता और साहस के लिए चिरपरिचित हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध किए गए संघर्ष के कारण ही स्वतंत्रता संग्राम की नींव पड़ी थी। एक साहसी नारी के रूप में लक्ष्मीबाई ने अपना परिचय दिया।

कवि परिचय

इस कविता की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी जगत की सुप्रसिद्ध कवयित्री एवं लेखिका हैं। ''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'' कविता से उन्हें राष्ट्रीय चेतना की कवयित्री के रूप में पहचान मिली। वे स्वतंत्रता आंदोलन में कई बार जेल गई। इनका जन्म 16 अगस्त 1904 में प्रयागराज में हुआ। सुभद्रा कुमारी और महादेवी वर्मा दोनों बचपन की सहेलियाँ थीं। गाँधीजी के आह्वान पर सन् 1921 में वे असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली पहली महिला थी। सन् 1913 में जब वे मात्र 9 वर्ष की थी तब उनकी पहली कविता 'मर्यादा' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इनकी रचनाएँ मुकुल और त्रिधारा के नाम से दो कविता संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। इनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ''सीधे-साधे चित्र'' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा एवं अंतिम कहानी संग्रह है जो सन् 1947 में प्रकाशित हुआ था। इसमें कैलाश नानी, बिआल्हा, दो साथी, तांगेवाला, राही आदि 14 कहानियों का संग्रह है।

भारतीय डाक विभाग ने सन् 1976 में इनके नाम पर 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया था। इनके राष्ट्रप्रेम को सम्मानित करने के लिए भारतीय तटरक्षक सेना ने 9 वर्ष 2006 में एक तटरक्षक जहाज़ का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान रखा। 43 साल की अल्पायु में 15 फरवरी 1948 के दिन एक गाड़ी दुर्घटना में इनका निधन हो गया।

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको
जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह

हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसीवाली रानी थी।।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. जनरल स्मिथ को पराजित करने के बावज़ूद भी रानी क्यों हार गयी?
2. तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी - से क्या तात्पर्य है?

सारांश : प्रस्तुत कविता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "झांसी की रानी" का अंश है। इस कविता में कवयित्री ने सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा दिखाए गए अदम्य शौर्य का उल्लेख किया है।

उन्हें बचपन से ही तलवारबाज़ी, घुड़सवारी, तीरंदाजी और निशानेबाजी का शौक था। वह बहुत छोटी उम्र में ही युद्ध-विद्या में पारंगत हो गई थीं। अपने पति की असमय मृत्यु के बाद उन्होंने एक कुशल शासक की तरह झांसी का राजपाट संभाला।

अंग्रेज़ जब भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में आये तो वे साधारण व्यापारी थे। उस समय वे यहाँ के राजाओं की दया चाहते थे। डलहौजी ने धीरे-धीरे अंग्रेज़ी शासन का विस्तार किया और धीरे-धीरे परिस्थितियाँ उनके पक्ष में आ गई। जिन राजाओं और नवाबों से वे दया की भीख मांगते, उन्हीं को अंग्रेज़ों ने पैरों से ठुकरा दिया। अब ये राज्य अंग्रेज़ी राज्य के दास थे और दासों के समान रहने वाली अंग्रेज़ी शासन की विक्टोरिया अब हमारे देश की महारानी बन गई।

जब अंग्रेज़ों ने झाँसी को अपने राज्य में मिलाया, तब रानी ने उनसे अनेक तरह से विनम्र प्रार्थना की परंतु सब बेकार रहा। उस युद्ध में लक्ष्मीबाई ने अपने अद्भुत युद्ध कौशल और साहस का परिचय देकर बड़े-बड़े वीर योद्धाओं को भी हैरान कर दिया था। उनकी वीरता और पराक्रम से उनके दुश्मन भी प्रभावित थे। अपनी अंतिम सांस तक अपने राज्य को बचाने के लिए अंग्रेज़ों से अत्यंत वीरता से लड़ती रहीं। उनके पराक्रम की प्रशंसा उनके शत्रु भी करते थे।

जनरल स्मिथ ने सेना की कमान संभाल ली थी। रानी लक्ष्मीबाई का साथ देने के लिए उनकी दो सहेलियाँ काना और मंदरा युद्ध मैदान में उतर गई थीं। इन तीनों ने अपनी वीरता और साहस के दम पर कई अंग्रेज़ सैनिकों की लाशें बिछा दी थी। परंतु तभी पीछे से जनरल ह्यूरोज ने आकर रानी को घेर लिया था और यहीं रानी उसके शिकंजे में फँस गई थीं।

रानी जैसे-तैसे बचते हुए दुश्मनों के बीच से निकल कर बाहर आ ही गई थीं, लेकिन अचानक उनके सामने एक चौड़ा नाला आ गया। उनका घोड़ा नया होने के कारण उसे पार नहीं कर पाया और वहीं अड़ गया। बस यहीं शत्रुओं ने मौका देखकर अकेली रानी पर कई वार पर वार किए और झांसी की रानी ने यहीं अपनी अंतिम सांस तक लड़ते हुए वीर-गति प्राप्त की।

रानी अब परलोक सिधार चुकी थीं, परंतु उनके चेहरे पर सूरज के समान चमक छाई हुई थी। उनकी उम्र केवल तेईस साल थी। इतनी छोटी-सी उम्र में वह एक अवतारी-नारी की तरह आकर हम सभी देशवासियों को जीवन का सही मार्ग दिखा गई थीं। क्रांति की चिंगारी का बीज सही मायनों में उन्होंने ही देशवासियों के मन में बोया था।

रानी का यह बलिदान सभी देश वासी हमेशा याद रखेंगे। चाहे दुश्मन अपनी वीरता का परचम लहरा रहा हो या फिर वो अपनी तोप के गोलों से झांसी को ही मिटा दे, लेकिन झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हमारे मन में हमेशा बसी रहेंगी। चाहे उनका कोई स्मारक ना बने, लेकिन वो वीरता और साहस का एक उदाहरण बनकर हमारे इतिहास में हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहेंगी।

झाँसी की रानी उस युद्ध में वीर पुरुषों की भाँति लड़ी। उसकी यह कहानी हमने बुंदेलखण्ड के हरबोलों से सुनी थी।

नए शब्द

1. सन्मुख = समक्ष, सामने आया हुआ
2. पथ = रास्ता, मार्ग
3. अमिट = कभी न मिटने वाली
4. मनुज = मनुष्य
5. कृतज्ञ = उपकार मानने वाला

6.	मुँह की खाना	=	हारना
7.	वीरगति पाना	=	युद्ध में शहीद होना
8.	मदमाती	=	मस्त करने वाली
9.	अपार	=	असीम, जिसका पार न हो

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी

2. जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

आज राष्ट्र का मुक्ति पर्व है जागो कवि की वाणी,
फूंको शंख विजय का, जय हो भारत-भूमि भवानी।
फूलों फूल लताओं झूमो अंबर बरसो पानी,
मन-मयूर नाचो रे आई प्रिय स्वतंत्रता रानी।
वह स्वतंत्रता जिसकी खातिर जूझी लक्ष्मी रानी,
वीर पेशवा नाना ने कर दिया खून का पानी।
तांत्या टोपे ने जिस की असली कीमत पहचानी,
लड़ा गया संग्राम गदर का जिसकी अमर कहानी।

प्रश्नः

1. कविता में किसकी जय कही गई है?
2. कवि ने किनसे फूलने, झूमने और बरसने के लिए कहा है?
3. कविता में किस दिन की बात हो रही है?

4. स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए पेशवा ने क्या किया?

5. कवि कौनसा शंख फूंकने के लिए कह रहे हैं?

6. पद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. झाँसी की रानी ने अंग्रेज़ों का सामना किस प्रकार किया।

2. रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. कविता के आधार पर रानी लक्ष्मीबाई के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

2. कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1. विजय 2. वार 3. युद्ध 4. संकट

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1. स्वतंत्रता 2. विषम 3. विजय 4. शत्रु

(इ) कविता में आए विशेषण शब्द पहचान कर लिखिए।

(ई) कविता में आए प्रत्यय शब्द पहचान कर लिखिए।

(उ) निम्नलिखित शब्दों के समास पहचान कर नाम लिखिए।

1. युद्ध क्षेत्र 2. भारतवासी 3. वीर गति

IV सृजन - जीवन कौशल

1. देश भक्ति से संबंधित पाँच नारे लिखिए।

2. यदि कोई आपको अपने अधिकारों का उपयोग करने से रोके तो उसका सामना आप किस प्रकार करेंगे? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

4. कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

– सोहनलाल द्‌विवेदी

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- कविता धाराप्रवाह के साथ गाएंगे।
- कविता पढ़कर समझेंगे।
- कविता का भाव अपने शब्दों में लिखेंगे।
- पाठ का उद्‌देश्य समझेंगे।

बोध–अभिव्यक्ति

- प्रयत्न का महत्व समझेंगे, लिखेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- वाक्य प्रयोग करेंगे।
- पर्यायवाची लिखेंगे।
- उपसर्ग पहचानकर लिखेंगे।
- तुकांत शब्द पहचानकर लिखेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- कविता का सृजन करेंगे।
- पाठ के संदेश का व्यावहारिक उपयोग करेंगे।

उद्‌देश्य

काव्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना, कविता विधा से अवगत कराना, काव्य सृजन की प्रेरणा देना, कोशिश करने के महत्व से अवगत कराना और असफलता के बाद सफलता ज़रूर मिलती है इस बात से परिचित कराना इस पाठ का उद्‌देश्य है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक गेय कविता है। कविता साहित्य की एक सशक्त विधा है। कविता सौंदर्यानूभूति भाव तथा सौंदर्य ध्वनि का उदाहरण है। कविता साहित्य की वह विधा है जिसमें मनोभावों को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है।

प्रस्तावना

'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' कविता में कोशिश करने से सफलता प्राप्त करने का संदेश मिलता है। कवि कहते हैं कि जीवन की प्रतियोगिता में असफलता से विमुख न होते हुए अपनी कमियों को खुद पहचानकर स्वप्रयत्न से लगातार आगे बढ़ने से कभी हार नहीं होती है।

कवि परिचय

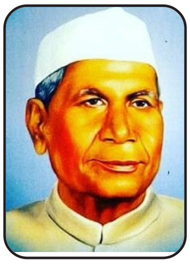

इस कविता के कवि सोहनलाल द्विवेदी हैं। वे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। आपका जन्म 22 फरवरी सन् 1906 में हुआ। आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., एल.एल.बी की डिग्री प्राप्त की और आजीविका के लिए जमींदारी तथा बैंकिंग का काम करते रहे। सन् 1938 से सन् 1942 तक आप राष्ट्रीय दैनिक पत्र 'अधिकार' के संपादक थे। कुछ वर्षों तक आपने अवैतनिक (बिना वेतन) बाल पत्रिका 'बाल सखा' का संपादन भी किया था। आप महात्मा गाँधी से अत्यधिक प्रभावित थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए देशभक्ति व ऊर्जा से ओतप्रोत आपकी रचनाओं की विशेष सराहना हुई तथा आपको 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन् 1969 में भारत सरकार ने आपको 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1988 में राष्ट्रकवि द्विवेदी का देहांत हो गया। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं - भैरवी, वासवदत्ता, कुणाल, पूजागीत, विषपान, युगाधार और जय गाँधी। बाँसुरी, झरना, बिगुल, बच्चों के बापू, दूध बताशा, बाल-भारती, शिशु भारती, नेहरू चाचा, सुजाता, प्रभाती आदि आपकी प्रमुख बाल साहित्य रचनाएँ हैं।

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. बार-बार चढ़कर फिसलने के बावजूद भी चींटी में साहस कहाँ से आता था?
2. गोताखोर की मुट्ठी हर बार खाली क्यों नहीं हो सकती है?
3. किसी कार्य में असफल होने पर व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

सारांश : 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' - कविता समाज को सही दिशा देने वाली, उसे जागरुक करने वाली और विशेष रूप से युवाओं को असफलता से हार न मानकर सफलता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने व विपरीत परिस्थिति में भी पूरे मनोयोग से संघर्ष करने की प्रेरणा देने वाली कविता है।

इस कविता में कवि कहते हैं कि - सतत प्रयत्नशील व्यक्ति को निश्चित रूप से जीत मिलती है। जीवन की प्रतियोगिता में असफलता से विमुख नहीं होकर लगातार आगे बढ़ते रहना चाहिए। कवि कहते हैं कि - लहरों से डरकर नौका कभी भी सागर को पार नहीं कर सकती। उसे लहरों से टकराना ही पड़ता है। छोटी सी चींटी जब दाना लेकर दीवार पर चढ़ती है तो सौ बार गिरती है लेकिन वह हार नहीं मानती है। आत्मविश्वास के कारण उसकी मेहनत रंग लाती है और वह दीवार पर चढ़ने में सफल होती है। क्योंकि कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

गोताखोर जब समुद्र में मोती के लिए गोता लगाता है तो कई बार खाली हाथ ही लौटकर आता है। लेकिन उसका उत्साह कम नहीं होता बल्कि दुगुना हो जाता है और उसकी मुट्ठी में मोती जरूर लगते हैं क्योंकि कोशिश करने वाला असफल नहीं हो सकता।

कवि कहते हैं कि असफलता से घबराना नहीं चाहिए। असफलता को चुनौती के रूप में लेना चाहिए। अपनी कमियों की ओर ध्यान देना चाहिए। जब तक सफलता नहीं मिल जाती चैन नहीं लेना चाहिए। संघर्ष का मैदान कभी नहीं छोड़ना चाहिए। दुनिया में उसकी ही जय होती है जो कुछ करके दिखाते हैं। कोशिश करने वाले कभी नहीं हारते हैं। उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।

नए शब्द

1. कोशिश = प्रयास
2. नौका = नाव
3. आखिर = अंत में
4. बेकार = व्यर्थ
5. सिंधु = सागर
6. सहज = आसानी से
7. हैरानी = परेशानी
8. चुनौती = ललकार
9. संघर्ष = टकराव
10. क्षेत्र = स्थान

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

1. नन्हीं चींटी जब .... हार नहीं होती।
2. असफलता एक .... हार नहीं होती

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

बाधाएँ आती है, आएँ
घिरे प्रलय की घोर घटाएँ
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों से हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।
उजियारे में, अंधकार में,
कल कछार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को दलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

प्रश्न:

1. कवि किस प्रकार चलने के लिए कह रहे हैं?
2. पद्यांश के आधार पर लिखिए कि जीत व हार कैसी हैं?
3. कवि कौनसी घटाएँ घिरने पर आगे चलने के लिए कह रहे हैं?
4. हँसते-हँसते क्या करने के लिए कहा गया है?
5. कवि ने किसे दलने के लिए कहा है?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि सोहनलाल द्विवेदी का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' - कविता का उद्देश्य क्या है?
3. कवि ने चींटी के उदाहरण के द्वारा क्या स्पष्ट किया है?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. 'मनुष्य को निरंतर प्रयास करते हुए, चुनौतियों को स्वीकार करते हुए तथा गलतियों को सुधार कर आगे बढ़ना चाहिए' - कथन की सार्थकता अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1. कोशिश 2. मन 3. सिंधु

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1. हार 2. चढ़ना 3. विश्वास 4. उत्साह 5.सफल

(इ) निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग लिखिए।

1. असहज 2. असफल 3. अविश्वास

(ई) तुकांत शब्द पहचानकर लिखिए।

1. चलती - ....
2. भरता - ....
3. लगाता - ....
4. पानी - ....
5. स्वीकार - ....
6. त्यागो - ....

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'परिश्रम' विषय पर छात्र व अध्यापक के बीच संवाद लिखिए।
2. असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार कर आप जीवन में किस प्रकार आगे बढ़ेंगे? उदाहरण सहित लिखिए।

5. है प्रीत जहाँ की रीत सदा

– इंदीवर

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- गीत पढ़ेंगे, भारत की महानता के बारे में चर्चा करेंगे।
- गीत विधा के बारे में चर्चा करेंगे।
- गीत के आधार पर विश्व में भारत के महत्व के कारण बताएंगे।
- पठित व अपठित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- भारत की सभ्यता के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- भाषा व्याकरण से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।
- दिए गए शब्दों के विलोमार्थी, पर्यायवाची शब्द लिखेंगे।
- गीत में से सामासिक शब्द पहचानकर लिखेंगे।
- सर्वनाम शब्द पहचानेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- दूसरों के प्रति स्वयं के व्यवहार के बारे में बताएंगे।
- सूचना लिखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य गीत विधा का परिचय देना और गीत लिखने की क्षमता का विकास करना है। भारत की महानता का परिचय देकर देशभक्ति की भावना का विकास करना है।

विधा विशेष

स्वर, पद और ताल से युक्त गान को गीत कहते हैं। गीत साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं। प्रत्येक अंतरे के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है।

प्रस्तावना

यह एक देशभक्ति गीत है। इसमें विश्व के लिए भारत की देन का वर्णन करते हुए विश्व में भारत की महानता को दर्शाया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि भारत की सभ्यता सबसे प्राचीन और महान है।

गीतकार का परिचय

इस गीत के गीतकार इंदीवर है। इनका जन्म 15 अगस्त सन् 1924 को उत्तर प्रदेश के झाँसी के बरूवा सागर नामक कस्बे में हुआ था। इनका वास्तविक नाम श्यामलाल बाबू राय था। इनके पिता का नाम हरलाल राय था। बचपन से ही इनकी रुचि गीत लेखन में थी। फक्कड़ बाबा के संपर्क में इंदीवर को गीत लिखने व गाने की रुचि जागृत हुई। इंदीवर बाबाजी का चिमटा लेकर राग बनाकर स्वलिखित गीत व भजन गाया करते थे। 20 वर्ष की आयु में वे मुंबई चले गए। सन् 1946 में फिल्म 'डबल फेस' में उनका पहला गीत दर्शकों तक पहुँचा। किंतु गीत चला नहीं। सन् 1949 में फिल्म 'मल्हार' के लिए लिखे गये गीत 'बड़े अरमान से रखा है बलम तेरी कसम' ने काफी शोहरत हासिल की।

इंदीवर को मुंबई में अपनी पहचान बनाने में लगभग एक दशक तक कठिन संघर्ष करना पड़ा। इंदीवर द्वारा रचित फिल्मी गीतों में कल्याणजी आनंदजी का ही संगीत हुआ करता था। ऐसी फिल्मों में उपकार, दिल ने पुकारा, सरस्वती चंद्र, यादगार, सफर, सच्चा झूठा, पूरब और पश्चिम, जॉनी तेरा नाम, हेराफेरी, धर्मात्मा, डॉन, कुर्बानी आदि फिल्में हैं।

उनके गीतों को किशोर कुमार, आशा भोंसले, मोहम्मद रफ़ी, लता मंगेश्कर जैसे चोटी के गीत कलाकारों ने अपने स्वर दिए। ऐसे महान गीतकार का स्वर्गवास 27 फरवरी सन् 1997 को हो गया। सारा देश इनके निधन से शोक सागर में डूब गया था। ऐसे महान गीतकार दुनिया में बिरले ही पाए जाते हैं।

जब ज़ीरो दिया मेरे भारत ने
भारत ने मेरे भारत ने
दुनिया को तब गिनती आयी
तारों की भाषा भारत ने
दुनिया को पहले सिखलायी

देता ना दशमलव भारत तो
यूँ चाँद पे जाना मुश्किल था
धरती और चाँद की दूरी का
अंदाज़ा लगाना मुश्किल था

सभ्यता जहाँ पहले आई
पहले जनमी है जहाँ पे कला
अपना भारत वो भारत है
जिसके पीछे संसार चला
संसार चला और आगे बढ़ा
यूँ आगे बढ़ा, बढ़ता ही गया
भगवान करे ये और बढ़े
बढ़ता ही रहे और फूले-फले।

है प्रीत जहाँ की रीत सदा
मैं गीत वहाँ के गाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ
भारत की बात सुनाता हूँ।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. **भारत की विश्व को क्या देन है?**
2. **भारत के लोगों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। स्पष्ट कीजिए।**
3. **कवि भारत के लोगों के समक्ष शीश झुकाने की बात क्यों कह रहे हैं?**

काले-गोरे का भेद नहीं
हर दिल से हमारा नाता है
कुछ और न आता हो हमको
हमें प्यार निभाना आता है
जिसे मान चुकी सारी दुनिया
मैं बात वो ही दोहराता हूँ।
भारत का रहने...

जीते हो किसी ने देश तो क्या
हमने तो दिलों को जीता है
जहाँ राम अभी तक है नर में
नारी में अभी तक सीता है
इतने पावन हैं लोग जहाँ
मैं नित-नित शीश झुकाता हूँ
भारत का रहने...

इतनी ममता नदियों को भी
जहाँ माता कह के बुलाते हैं
इतना आदर इन्सान तो क्या
पत्थर भी पूजे जाते है
इस धरती पे मैंने जनम लिया

ये सोच
ये सोच के मैं इतराता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ
भारत की बात सुनाता हूँ
है प्रीत जहाँ की रीत सदा
हो...हो...हो...

सारांश : 'है प्रीत जहाँ की रीत सदा' - गीत के गीतकार इंदीवर है। इस गीत में कवि ने विश्व को भारत की देन का वर्णन करते हुए भारत की महानता को दर्शाया है।

कवि कहते हैं कि भारत के द्‌वारा आविष्कृत ज़ीरो (शून्य) के कारण ही दुनिया में गिनती करना संभव हो सका। दुनिया को सबसे पहले तारों की भाषा भी भारत ने ही बतलाई है। भारत के द्‌वारा दिए गए दशमलव (dot) के कारण चाँद पर पहुँचना संभव हो सका और धरती और चाँद की दूरी को जानना भी संभव हो सका। सबसे पहले सभ्यता का विकास भी भारत में ही हुआ है और कला का जन्म भी यहीं पर हुआ है। इसीलिए भारत के पीछे संसार ने चलना शुरू किया और इस प्रकार संसार आगे बढ़ता गया। कवि की यह कामना है कि संसार इसी प्रकार आगे बढ़ता रहे अर्थात् तरक्की करता रहे और सुख संपन्न हो जाये। कवि ऐसे भारत के रहने वाले हैं और भारत की बात सुना रहे हैं जिसकी रीत प्यार करना है और जहाँ के गीत वे गाते हैं। कवि कहते हैं कि काले-गोरे के भेदभाव के बिना हर 'दिल' से अर्थात हर मानव से हमारा रिश्ता भाईचारे का रिश्ता है। हम चाहे और कुछ करना जानते हैं या न जानते हैं किंतु प्यार बखूबी निभाते हैं। ऐसी हमारी प्यार व भाईचारे की भाषा को दुनिया मान चुकी है। इसी बात को कवि दोहरा रहे हैं। चाहे लोगों ने कितने ही देश जीत लिए हों किंतु भारतीयों ने तो सभी के दिल जीत लिए हैं। वे आगे कहते हैं कि मैं ऐसे भारत देश का रहने वाला हूँ जहाँ हर नर में राम दिखाई देते हैं और प्रत्येक नारी में सीता दिखाई देती है। भारत के इतने पवित्र हृदय के लोगों के समक्ष कवि प्रतिदिन अपना शीश झुकाते हैं। यहाँ पर नदियों के प्रति भी इतनी ममता दर्शायी जाती है कि इन्हें माता कह कर पुकारा जाता है। यहाँ पर प्रत्येक मनुष्य में एक दूसरे के प्रति आदर की भावना होती है। यहाँ तक की पत्थर की भी पूजा की जाती है अर्थात पत्थर के प्रति भी आदर दर्शाया जाता है। कवि ने ऐसे पवित्र भारत में जन्म लिया है ऐसा सोच कर ही वे इतराते हैं। अर्थात गर्व करते हैं। कवि भारत के रहने वाले अर्थात भारतवासी हैं, और भारत की ही बात सुना रहे हैं।

नए शब्द

1. मुश्किल = कठिन
2. अंदाजा = अनुमान
3. फूले-फले = संपन्न होना, खुशहाल
4. भेद = अंतर, भेदभाव
5. पावन = पवित्र

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

1. तारों की भाषा .... अंदाजा लगाना मुश्किल था।

2. जीते हो किसी ने देश .... शीश झुकाता हूँ भारत का रहने वाला हूँ भारत की बात सुनाता हूँ।

(आ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे।
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महा जंगल रचा देते हैं वे।
भेद नभ-तल का उन्होंने बहुत बतला दिया।
हैं उन्होंने ही निकाली तार तार सारी क्रिया।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले फले।
बुद्धि, विद्या, धान, वैभव के हैं जहाँ डेरे डले।
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले।

प्रश्नः

1. किसे काटकर सड़कें बनाई जाती है?
2. बेड़ा कहाँ चलाने की बात हो रही है?
3. उन्होंने किसका भेद खोला हैं?
4. देशों में क्या विद्यमान है?
5. पद्यांश में बताये गये कार्यों के संभव होने का क्या कारण था?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. 'ज़ीरो' और दशमलव का महत्व बताइए।

2. कवि ने संसार के आगे बढ़ने की बात कही है। अपने शब्दों में लिखिए कि संसार किस प्रकार आगे बढ़ रहा है?
3. भारत के लोगों के बारे में लिखिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. भारत में सभी को स्नेह व समानता से देखा जाता है। कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखिए।
2. गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1) पहला 2) देना 3) जाना 4) जन्म 5) सभ्यता 6) पीछे 7) प्यार 8) जीतना 9) आदर 10) धरती

(आ) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1) दुनिया 2) चाँद 3) प्रीत 4) देश 5) पावन 6) इंसान

(इ) गीत में से सामासिक शब्द पहचानकर लिखिए।

(ई) भारत ने मेरे भारत ने। रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'भारत की विश्व को देन' विषय पर भाषण प्रतियोगिता के आयोजन के लिए एक सूचना लिखिए।
2. आप अपने साथियों, संबंधियों और अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार का व्यवहार करेंगे? अपने शब्दों में बताइए।

इकाई-II 1. कृत्रिम मेधा

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- संवाद पढ़ेंगे, समझेंगे और कृत्रिम मेधा के बारे में चर्चा करेंगे।
- संवाद विधा के बारे में अपने शब्दों में बताएंगे।
- विज्ञान के विभिन्न आविष्कारों के बारे में चर्चा करेंगे।
- पाठ की पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या करेंगे।
- पठित, अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- संवाद विधा के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- संवाद का उद्देश्य व संदेश लिखेंगे।
- दैनिक जीवन में कृत्रिम मेधा के उपयोग के बारे में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- समानार्थी और विलोमार्थी शब्दों की पहचान करेंगे और उनका वाक्य में प्रयोग करेंगे।
- कारक विभक्तियों की पहचान करेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- किसी संगणक वैज्ञानिक से साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली का निर्माण करेंगे।
- अपनी व्यावसायिक क्षमता के विकास के लिए कृत्रिम मेधा के विषय में दक्षता प्राप्त करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य संवाद विधा से परिचित होते हुए संवाद के मौखिक एवं लिखित रूप का विकास करना है। कृत्रिम मेधा के कार्यक्षेत्र और लाभों का परिचय देना तथा व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक संवाद पाठ है। संवाद हिंदी की गद्य विधाओं में से एक है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुए वार्तालाप को संवाद कहते हैं। संवाद का अर्थ बातचीत है। संवाद की भाषा सरल एवं व्यावहारिक होती है। विषय की अनुकूलता, रोचकता, स्पष्टता, सहजता आदि संवाद के अनिवार्य तत्व हैं। संवाद में पात्रों की प्रकृति और रुचि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्रस्तुत पाठ में कृत्रिम मेधा की विकास यात्रा और उससे होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत पाठ में कृत्रिम मेधा का महत्व दर्शाया गया है। कृत्रिम मेधा की आवश्यकता, उद्भव, लाभ, हानि आदि के बारे में सविस्तार चर्चा दो मित्रों के बीच संवाद के रूप में हुई है।

कविता और सुनीता दोनों सहेलियाँ हैं। दोनों ही इंटरमीडिएट की वार्षिक परीक्षा की तैयारी कर रही हैं। इसी सिलसिले में सुनीता कुछ नोट्स लेने कविता के घर जाती है। सुनीता घंटी बजाती है। कविता दरवाज़ा खोलती है।

कविता : हैलो सुनीता! कैसी हो? अचानक कैसे आना हुआ? अंदर आओ।

सुनीता : (अंदर आते हुए) हैलो कविता, बिना बताए आने के लिए माफी चाहती हूँ। लेकिन पढ़ते समय कई शंकाएँ उत्पन्न हो रही हैं। मुझे तुम्हारे नोट्स भी लेने हैं। मैं अपनी शंकाओं के समाधान के लिए तथा कुछ नोट्स लेने के लिए तुम्हारे पास आई हूँ।

कविता : अच्छा किया। चलो इस बहाने तुम मेरे घर तो आई। बताओ तो तुम्हें किस विषय में और क्या शंका है?

सुनीता : हाँ, हाँ बताती हूँ। (तभी उसकी नज़र कविता की माँ पर पड़ती है जो फोन पर कुछ बोल रही थी और उनके बोलते ही घर का पंखा चालू हो गया था। सुनीता यह देखकर चकित होती है। वह कविता की ओर आश्चर्य से देखने लगती है। कविता सुनीता के चेहरे के भावों को समझ जाती है।

कविता : (हँसते हुए कहती है) मुझे पता है तुम क्या सोच रही हो। तुम यह जानना चाहती हो कि माँ के फोन में बोलने से पंखा किस प्रकार चालू हो गया है। है ना, यही जानना चाहती हो न तुम?

सुनीता : हाँ, हाँ, कविता मैं यही जानना चाहती हूँ। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है।

कविता : अरे सुनीता! इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात है ही नहीं। यह कृत्रिम रूप से विकसित बुद्धि है जो एक ऐप के द्वारा संचालित है। बस इसे एक मानवीय नाम दे दिया गया है। यह मनुष्य की भाषा को समझ कर उसके निर्देशों पर काम कर सकती है।

सुनीता : तो क्या तुम अमेजॉन की एलेक्सा, एप्पल की सीरी या गूगल की गूगल असिस्टेंट की बात तो नहीं कर रही हो?

कविता : हाँ, मैं उसी की बात कर रही हूँ। मेरी माँ जो निर्देश दे रही है उनका पालन अमेजॉन की एलेक्सा कर रही है। यह कृत्रिम मेधा का अच्छा उदाहरण है।

सुनीता : अच्छा! कृत्रिम मेधा! मुझे एलेक्सा के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी है किंतु मैं अब कृत्रिम मेधा के बारे विस्तार से जानना चाहती हूँ। क्या, तुम मुझे बता सकती हो कि कृत्रिम मेधा क्या

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. **सुनीता और कविता कौन हैं? सुनीता कविता के घर क्यों आई थी?**
2. **कविता के घर क्या देखकर सुनीता आश्चर्यचकित हो जाती है?**
3. **सुनीता कविता से किस विषय के बारे में जानना चाहती है?**

है?

कविता : हाँ, हाँ, क्यों नहीं? तुमने तो मेरे दिमाग़ के तार छेड़ दिए हैं। यह तो मेरा पसंदीदा विषय है। आगे चलकर मैं कृत्रिम मेधा विषय पर पढ़ाई कर इस विषय में शोध भी करना चाहती हूँ। इसीलिए मैं इसके बारे में पढ़ती रहती हूँ। बताओ, तुम कृत्रिम मेधा के बारे में क्या जानना चाहती हो?

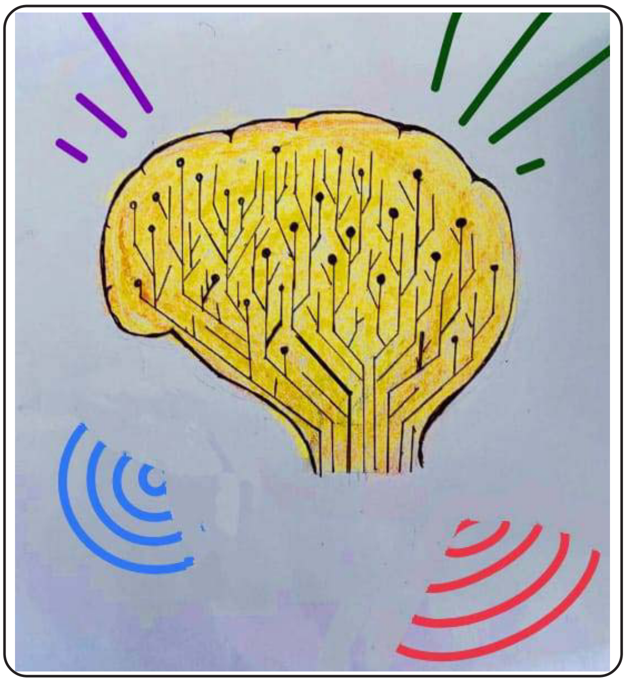

सुनीता : यह कृत्रिम मेधा क्या है? इसका आरंभ कैसे और कहाँ हुआ?

कविता : ठीक है, मैं तुम्हें बताती हूँ। यह कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है। इसका कार्य मानव जैसी बौद्धिक क्षमता वाले मशीनों और सॉफ्टवेयरों का विकास करना है। यह मुख्य रूप से मानव और अन्य जंतुओं द्वारा प्रदर्शित बुद्धि के विपरीत मशीनों द्वारा प्रदर्शित बुद्धि है। इसे अंग्रेज़ी में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' कहा जाता है। इसका नामकरण सन् 1955 में संगणक वैज्ञानिक 'जॉन मैकार्थी' ने किया था। इसीलिए उन्हें 'कृत्रिम मेधा' का जनक माना जाता है। (कविता ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा) सन् 1956 में जॉन मैकार्थी ने डॉर्टमाउथ कॉलेज में एक कार्यशाला का आयोजन किया और इस कार्यशाला में उन्होंने मुख्य रूप से कृत्रिम मेधा पर चर्चा की। उन्होंने जिस समय इस कार्यशाला का आयोजन किया था उस समय तकनीकी क्षेत्र में इतना विकास नहीं हुआ था किंतु उनकी पहल ने क्रांति का रूप लिया और इस क्षेत्र में विकास की प्रक्रिया आरंभ हो गई। कृत्रिम मेधा में अधिकांशतः रोबोट सिस्टम द्वारा काम किया जाता है। इसके द्वारा मशीनों में मानव जैसी बौद्धिक क्षमता के विकास का प्रयास किया जाता है।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. **कृत्रिम मेधा किसे कहते हैं?**
5. **कविता ने आज के युग को तकनीकी युग क्यों कहा होगा?**

सुनीता : कविता, तुम्हारी बातों से तो लगता है कि आने वाले समय में कृत्रिम मेधा का वर्चस्व स्थापित हो जाएगा। मैं तो अब तक यही समझती थी कि मानव के लिए बुद्धि ईश्वरीय वरदान है। मानव को ईश्वर ने जो वरदान दिया है ना तो कोई उसकी नक़ल कर सकता है और ना ही छीन सकता है। मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर बड़े-बड़े आविष्कार किए हैं। उसके बुद्धि बल के समक्ष कोई ठहर नहीं सकता है। फिर कृत्रिम मेधा की आवश्यकता क्यों...?

कविता : बहुत अच्छा प्रश्न किया सुनीता तुमने। यह सही है कि मानव को सबसे अलग बनाने वाली शक्ति बुद्धि ही है, किंतु यह भी सही है कि आज का युग तकनीकी युग है। पल - पल में परिवर्तित होते हुए युग में ऐसी तकनीकी की अनिवार्यता है जो मानव के लिए सरल, सहज और सुविधाजनक है। इसका विकास भी तो मानव बुद्धि से ही हो रहा है। मानव अपनी बुद्धि बल के सहारे ही कृत्रिम मेधा के विकास में लगा हुआ है। विश्व की बढ़ती जनसंख्या, आधुनिक परिवेश, आरामदायक जीवन शैली के कारण इसकी माँग बढ़ती ही जा रही है।

सुनीता : अच्छा कविता, अब मेरी समझ में आ गया है कि इस कृत्रिम मेधा को विकसित करने वाला मानव ही है। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि इसकी कितनी श्रेणियाँ हैं और इसके कार्य क्षेत्र क्या हैं?

कविता : कृत्रिम मेधा के अनुप्रयोग की पाँच श्रेणियाँ हैं। यह तर्क, ज्ञान, नियोजन, संचार और धारणा पर कार्य करती है। स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, ट्रेडिंग आदि इसके मुख्य कार्य क्षेत्र हैं। इसका उपयोग चिकित्सा निदान, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग, रोबोट नियंत्रण, रिमोट सेंसिंग के लिए किया जाता है। मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स इसके उप क्षेत्र हैं। कृत्रिम मेधा के द्वारा वह सब किया जा सकता है जो एक मनुष्य कर सकता है।

सुनीता : तो क्या फिर मनुष्य की आवश्यकता ही नहीं होगी। है ना?

कविता : ऐसा नहीं है सुनीता। अभी तक जो मशीनें बनी हैं या जिन सॉफ्टवेयरों का निर्माण हुआ है उनमें से अधिकांश मनुष्य के निर्देशों पर काम करते हैं। इनमें से कुछ स्वचलित भी होते हैं।

सुनीता : समझ में आ गया। ठीक ऐसे ही ना जैसे अभी आँटी निर्देश दे रही थी और उधर काम हो रहा था। हाँ, कविता एक बात मुझे भी याद आ रही है मैंने कुछ दिन पहले पढ़ा था कि अब

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

6. **कृत्रिम मेधा की पाँच श्रेणियों के नाम बताइए।**
7. **कृत्रिम मेधा से युक्त किसी मशीन का उदाहरण दीजिए और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में बताइए।**

गाड़ी चलाने के लिए मानव की आवश्यकता नहीं है। गाड़ी अपने आप चलती है। किस गाड़ी के बारे में पढ़ा था नाम याद नहीं आ रहा है।

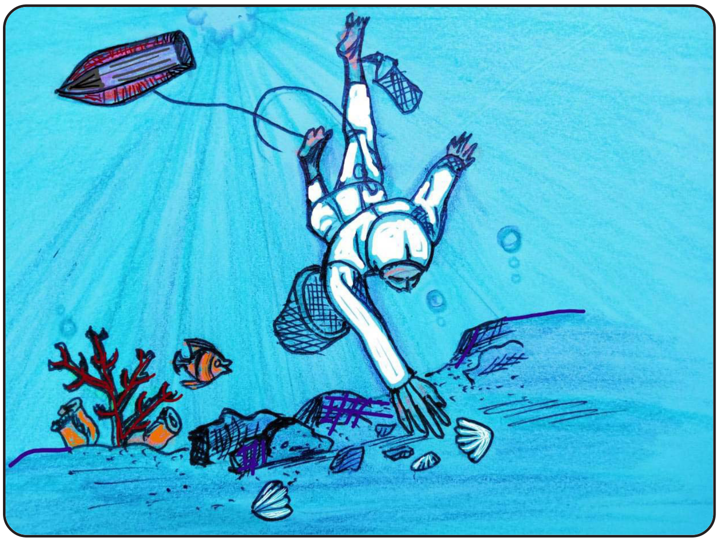

कविता : मुझे पता है। तुम किस गाड़ी की बात कर रही हो। तुम 'टेस्ला कार' की बात कर रही हो। हाँ, बिलकुल सही कह रही हो। यह कार किसी मानव के द्वारा नहीं बल्कि कृत्रिम मेधा के द्वारा ही चलाई जाएगी।

सुनीता : मुझे तो तुम्हारी बातों को सुनकर बड़ा मज़ा आ रहा है। बताओ तो, कृत्रिम मेधा से युक्त मशीन या सॉफ्टवेयर और क्या-क्या काम कर सकते हैं?

कविता : हाँ, हाँ, क्यों नहीं? अभी बताती हूँ। ये मशीनें मनुष्य की पहचान कर सकती हैं। एक भाषा का अनुवाद दूसरी भाषा में कर सकती हैं। स्वास्थ्य की देखभाल कर सकती हैं। खिलाड़ी के रूप में हमारे साथ खेल सकती हैं। रोबोट के रूप में हमारे हर काम का संचालन कर सकती हैं। अंतरिक्ष की यात्रा कर सकती हैं। घर के काम में हमारी मदद कर सकती हैं। डेटा की सुरक्षा कर सकती हैं। कार्यक्रमों का आयोजन कर सकती हैं। क्या, तुम जानती हो कि मुंबई में सन् 2017 में एशिया के सबसे बड़े फेस्ट का आयोजन किया गया था। इसमें डेविड हेनेसनेव द्वारा निर्मित सऊदी अरब की इंटेलिजेंट रोबोट 'सोफिया' ने साड़ी पहन कर भारतीय अंदाज़ में 'नमस्ते इंडिया, मैं सोफिया हूँ'' कहकर सभी का अभिवादन किया था और सभी के सवालों के जवाब हिंदी में बड़ी ही चतुराई से दिए थे। सुनीता, ये मशीनें अभी तक तो मानव निर्देशों पर कार्य कर रही हैं किंतु भविष्य में ऐसी मशीनों के विकास का प्रयास किया जा रहा है जो मानव निर्देशों के बिना काम कर सके और परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं ही निर्णय ले सकें।

सुनीता : कविता, तुम्हारी इन बातों को सुनकर तो मुझे बहुत खुशी हो रही है। अरे, यदि कृत्रिम मेधा

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

8. **कृत्रिम मेधा के विकास से होने वाली हानियों का उल्लेख कीजिए।**

के इतने लाभ हैं तो कहना ही क्या? पर कविता में एक बात कहना चाहती हूँ जो बहुत देर से मेरे दिमाग में चल रही है। मुझे लगता है कि कृत्रिम मेधा के विकास से मनुष्य की निष्क्रियता में बढ़ोतरी हो जाएगी। उसकी निर्भरता मशीनों पर बढ़ जाएगी। बेरोजगारी में वृद्धि होगी तथा मानवीय संवेदनाएँ नष्ट हो जाएँगी।

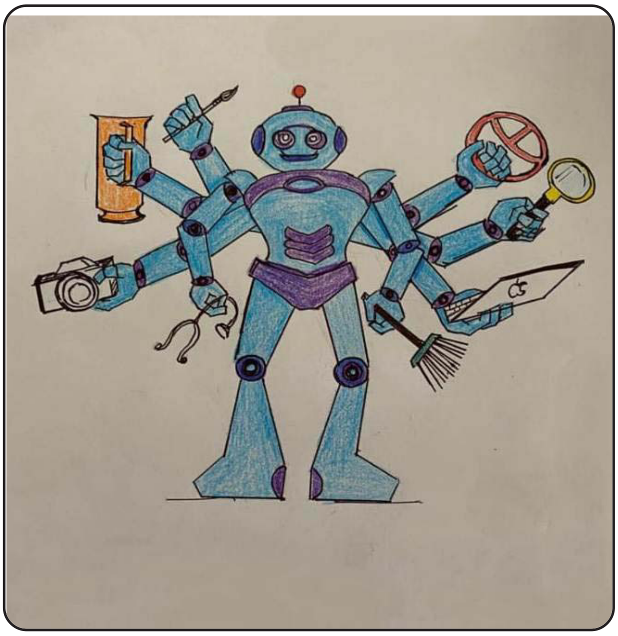

कविता : वाह सुनीता! तुम्हारी सोच का तो क्या कहना? तुम इस विषय पर गंभीरता से सोच रही हो। सच में हमें हर चीज के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू पर विचार करना चाहिए। यह आवश्यक भी है। इसी बात के बारे में गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने कहा है कि कृत्रिम मेधा हमारे लिए तभी फायदेमंद साबित हो सकती है जब हम इसके जोखिम से बचने के तरीके ढूँढ लेते हैं और यह हमारी सकारात्मक सोच और सकारात्मक कार्यों के रूप में हमारे पास विद्‌यमान है। कोरोना महामारी के काल में इस कृत्रिम मेधा द्‌वारा कई कार्य संभव हुए हैं। इसीलिए इससे लाभ ही अधिक हैं। सुनीता, क्या तुम्हें पता है कि इंटरमीडिएट की पढ़ाई के बाद मैं इसी की पढ़ाई करने वाली हूँ। यानी कंप्यूटर इंजीनियरिंग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विषय लेने वाली हूँ। तुम्हारा क्या विचार है?

सुनीता : (खुशी से उछलते हुए) नेकी और पूछ पूछ। मैं भी तुम्हारे साथ इसी विषय की पढ़ाई करूँगी। धन्यवाद कविता। तुमने मुझे नोट्‌स दिए। मेरी शंकाओं का निवारण किया और कृत्रिम मेधा के बारे में इतनी जानकारी दी चलो। अब मैं चलती हूँ। फिर मिलेंगे।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

9. **कृत्रिम मेधा हमारे लिए कब लाभकारी सिद्‌ध हो सकती है?**
10. **आगे की पढ़ाई के बारे में सुनीता और कविता ने क्या बताया?**

सारांश : प्रस्तुत पाठ एक संवाद पाठ है। इस पाठ में कृत्रिम मेधा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। सुनीता और कविता दोनों सहेलियाँ हैं। ये दोनों इंटरमीडिएट की पढ़ाई कर रही हैं। एक दिन सुनीता नोट्स लेने और अपनी पढ़ाई संबंधी शंकाओं का निवारण करने कविता के घर जाती है। वहाँ पर कविता की माँ के द्वारा फोन पर निर्देश देकर पंखा चालू करने की गतिविधि देखकर चकित हो जाती है। कविता उसके चेहरे के भावों को समझ जाती है। वह उसे बताती है कि यह सब कृत्रिम मेधा से संभव हुआ है। ऐसे अनेक ऐप, मशीनें और सॉफ्टवेयर विकसित हो चुके हैं जो कृत्रिम मेधा के द्वारा काम कर रहे हैं। वह बताती है कि कृत्रिम मेधा कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो मुख्य रूप से मानव और अन्य जंतुओं द्वारा प्रदर्शित बुद्धि के विपरीत मशीनों द्वारा प्रदर्शित बुद्धि है। इसे अंग्रेजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहा जाता है। जॉन मैकार्थी को कृत्रिम मेधा का जनक माना जाता है। उन्होंने ही 1955 में इसका नामकरण किया था। कृत्रिम मेधा का आधार तर्क, ज्ञान, नियोजन, संचार और धारणा है। मशीन लर्निंग और रोबोटिक्स इसके उपक्षेत्र हैं। इसका उपयोग चिकित्सा निदान, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग, रोबोट नियंत्रण और रिमोट सेंसिंग के लिए किया जाता है। इसकी सहायता से मशीनें मानव की वाणी की पहचान कर सकती हैं, हैंड राइटिंग समझ सकती है, एक खिलाड़ी के रूप में हमारे साथ खेल सकती हैं, कार्यक्रमों का आयोजन और संचालन भी कर सकती हैं। कविता से इन सब बातों को जान लेने के बाद सुनीता बहुत प्रसन्न होती है। फिर भी वह कहती है कि मुझे लगता है कि इसके विकास से मानव की निष्क्रियता, मशीनों पर निर्भरता तथा बेरोज़गारी जैसी समस्याओं में वृद्धि हो जाएगी। कविता हर वस्तुओं के दो पहलुओं की ओर संकेत करते हुए उसके सकारात्मक उपयोग करने के बात कहती है। वह भविष्य में इसी विषय में आगे की पढ़ाई करने के बात भी कहती है। कविता की इन बातों को सुनकर सुनीता भी आगे की पढ़ाई इसी विषय में करने का निर्णय लेती है। इस प्रकार इस पाठ में जहाँ एक ओर कृत्रिम मेधा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है वहीं दूसरी ओर आगे की पढ़ाई के लिए इस विषय के चुनाव की ओर भी संकेत किया गया है।

नए शब्द

1. शंका = संशय, संदेह
2. समाधान = किसी समस्या का हल निकालने की क्रिया
3. कृत्रिम = बनावटी
4. संगणक = कंप्यूटर
5. जनक = जन्म देने वाला
6. प्रक्रिया = कार्यप्रणाली, कार्यविधि
7. वर्चस्व = आधिपत्य

8. निष्क्रिय = क्रियाहीन, आलसी
9. अभिवादन = अभिनंदन, प्रणाम
10. प्रयास = प्रयत्न, कोशिश

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. यह कृत्रिम रूप से विकसित बुद्धि है जो ऐप के द्वारा संचालित है।
2. यह तो मेरा पसंदीदा विषय है। आगे चलकर मैं कृत्रिम मेधा विषय में पढ़ाई कर इस विषय में शोध भी करना चाहती हूँ।
3. कविता तुम्हारी बातों से तो लगता है कि आने वाले समय में कृत्रिम मेधा का वर्चस्व स्थापित हो जाएगा।

(आ) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

विज्ञान आज के मानव जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है। मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अभूतपूर्व आविष्कारों से अछूता नहीं रहा है। इसी कारण से आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। आज विज्ञान ने पुरुष और नारी, साहित्यकार और राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और कृषक, चिकित्सक और सैनिक, पूंजीपति और श्रमिक, अभियंता, शिक्षक और धर्मज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में अपने अप्रतिम कार्यों से अनुग्रहित किया है। आज समूचा परिवेश विज्ञानमय हो गया है। विज्ञान के प्रभाव किसी गृहणी के रसोईघर से लेकर बड़ी-बड़ी प्राचीरों वाले भवनों और अट्टालिकाओं में ही दृष्टिगत नहीं होते, अपितु वे जल थल की सीमाओं को लांघ कर अंतरिक्ष में भी विद्यमान हैं। वस्तुतः विज्ञान का अध्ययन मानव की सबसे बड़ी शक्ति बन गया है। इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणी जगत का शिरोमणि बन सका है। विज्ञान के अनुग्रह से वह सभी प्रकार की सुविधाओं एवं संपदओं का स्वामित्व प्राप्त चुका है। अब वह मौसम और ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत एवं संत्रस्त नहीं है। विद्युत ने उसे आलोकित किया है। उसे उष्णता एवं शीतलता दी है। बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत भी दी है। मनोरंजन के विभिन्न साधन उसे सुलभ हैं। यातायात एवं संचार के साधनों के विकसित एवं उन्नत होने से समय और दूरियाँ कम हो गई हैं और समूचा विश्व एक कुटुंब सा लगने लगा है।

प्रश्नः

1. आधुनिक युग को किस युग की संज्ञा दी गई है?

2. विज्ञान के प्रभाव कहाँ-कहाँ दृष्टिगत होते हैं?
3. विद्‌युत ने मानव को कौन सी सुविधाएँ प्रदान की हैं?
4. मानव को अब किसका भय नहीं है?
5. गद्‌यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. पाठ का उद्‌देश्य अपने शब्दों में लिखिए।
2. अपने दैनिक जीवन में आप कृत्रिम मेधा से युक्त किस वस्तु का प्रयोग कर रहे हैं। उसकी कार्यप्रणाली के बारे में संक्षिप्त में लिखिए।
3. कृत्रिम मेधा के विकास से मनुष्य की निष्क्रियता बढ़ सकती है। सुनीता के इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. आगे की पढ़ाई के लिए कृत्रिम मेधा विषय में पढ़ाई करने का सुनीता और कविता ने जो निर्णय लिया क्या वह सही है? अपनी हाँ या ना के कारण बताइए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थी शब्द लिखिए।

1. कृत्रिम 2. विस्तार 3. वरदान 4. संभव

(आ) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय पहचानिए और लिखिए।

1. वार्षिक 2. गंभीरता 3. विकसित 4. मानवीय 5. बेरोजगारी

(इ) निम्नलिखित वाक्यों में कारक विभक्तियों की पहचान कीजिए और कारक का नाम लिखिए।

1. कविता सुनीता के चेहरे के भावों को समझ रही थी।
2. इसका नामकरण जॉन मैकार्थी ने किया था।
3. इससे मशीनों पर निर्भरता बढ़ जाएगी।
4. कोरोना वायरस के काल में इस कृत्रिम मेधा के द्‌वारा कई कार्य संभव हुए हैं।
5. कृत्रिम मेधा से युक्त मशीनें क्या-क्या कर सकती हैं?

IV सृजन - जीवन कौशल

1. किसी महान संगणक वैज्ञानिक से साक्षात्कार लेने के लिए एक प्रश्नावली तैयार कीजिए।
2. 'व्यावसायिक क्षमताओं के विकास में कृत्रिम मेधा का योगदान' विषय पर अपने विचार लिखिए।

2. एक कहानी यह भी

– मन्नू भंडारी

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- पाठ पढ़ेंगे, समझेंगे और चर्चा करेंगे।
- आत्मकथा विधा के बारे में अपने शब्दों में बताएंगे।
- स्वतंत्रता आंदोलन की परिस्थितियों के बारे में चर्चा करेंगे।
- पाठ की पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करेंगे।
- पठित, अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- लेखिका मन्नू भंडारी का परिचय लिखेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।
- लेखिका मन्नू भंडारी की पारिवारिक परिस्थितियों के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- लेखिका के पिताजी और माताजी की स्वभावगत विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में करेंगे।

भाषा व्याकरण

- समानार्थी, विलोमार्थी, अनेकार्थी शब्द लिखेंगे और वाक्य में प्रयोग करेंगे।
- मुहावरों का अर्थ लिखेंगे और वाक्य प्रयोग करेंगे।
- संधि विच्छेद करेंगे और संधि की पहचान करेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- विभिन्न विषयों पर पत्र लिखेंगे।
- जीवन में चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे। सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में शिक्षा का महत्व समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य आत्मकथा विधा का परिचय प्रदान करते हुए आत्मकथा लेखन की क्षमता का विकास करना है। लेखिका मन्नू भंडारी के चरित्र के माध्यम से नारी सशक्तिकरण की भावना का विकास करना है तथा एक स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान देना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक आत्मकथा पाठ है। आत्मकथा का अर्थ है 'अपनी कहानी'। आत्मकथा में लेखक निष्पक्ष भाव से अपने गुण दोषों की सम्यक अभिव्यक्ति करता है और अपने चिंतन, संकल्प, विचार एवं अभिप्राय को व्यक्त करने हेतु जीवन के अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित करता है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि इस साहित्यिक विधा में लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन के ही खट्टे मीठे अनुभव को क्रमानुसार बाह्य सामग्रियों तथा स्मृति के आधार पर लिपिबद्ध करता है। इस तरह बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन आत्मकथा का मूल तत्व होता है। लेखिका ने इस पाठ में अपने संघर्षमय जीवन की घटनाओं को चुनौतियों के साथ सुंदर भाषा शैली में लिपिबद्ध किया है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत आत्मकथा पाठ में एक साधारण लड़की के असाधारण बनने की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं में लेखिका के पिताजी, कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल और उनकी माता जी का व्यक्तित्व विशेष रूप से उभारा गया है।

लेखक परिचय

मन्नू भंडारी एक कुशल लेखिका हैं। इनका जन्म सन् 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ था। इनके बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए इन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया था। लेखन का संस्कार इन्हें विरासत में मिला था। नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण करने, उनकी मानसिक स्थिति का विश्लेषण करने तथा युगीन समाज के यथार्थ का वर्णन करने में ये अत्यंत लोकप्रिय हैं। मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, अकेली, एक प्लेट सैलाब, यही सच है, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी मृत्यु 15 नवंबर 2021 में हुई।

जन्मी तो मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में थी, लेकिन मेरी यादों का सिलसिला शुरु होता है अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के उस दो-मंज़िला मकान से, जिसकी ऊपरी मंज़िल में पिताजी का साम्राज्य था, जहाँ वे निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली-बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अख़बारों के बीच या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे। नीचे हम सब भाई-बहिनों के साथ रहती थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी व्यक्तित्व विहीन माँ...सवेरे से शाम तक हम सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर। अजमेर से पहले पिताजी इंदौर में थे जहाँ उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ समाज-सुधार के कामों से भी जुड़े हुए थे। शिक्षा के वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, बल्कि उन दिनों आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया है जिनमें से कई तो बाद में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचे। ये उनकी खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।

पर यह सब तो मैंने केवल सुना। देखा, तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे। एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गये थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बल-बूते और हौंसले से अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश (विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरु किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी, पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरु कर दिया। सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम-से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

पर यह पितृ-गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव-गान करना है, बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन-सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने-बाने में गुँथी हुई हैं या कि अनजाने-अनचाहे किये उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया। मैं काली हूँ। बचपन में दुबली और मरियल भी थी। गोरा रंग पिता जी की कमज़ोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हँसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही, क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन-भाव की ग्रंथि पैदा नहीं कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पायी? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई

कुछ विशेषता लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का ज़िक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने-गड़ने को हो आती हूँ। शायद अचेतन की किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन-भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखायी देती है...बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं...कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाये बैठा रहता है!समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए...स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता!

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फर्ज़ समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने ज़िंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं...केवल दिया ही दिया। हम भाई-बहिनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका...न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता। खैर, जो भी हो, अब यह पैतृक-पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ।

पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले-सतोलिया, लँगड़ी-टाँग, पकड़म-पकड़ाई, काली-टीलो...तो कमरों में गुड्डे-गुड़ियों के ब्याह भी रचाये, पास-पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था

गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था। एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है। बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी, इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ। इतने वर्षों के अंतराल ने भी उनकी भाव-भँगिमा, भाषा किसी को भी धुँधला नहीं किया था और बिना किसी विशेष प्रयास के बड़े सहज भाव से वे उतरते चले गये थे। उसी समय के दा साहब अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही 'महाभोज' में इतने वर्षों बाद कैसे एकाएक जीवित हो उठे, यह मेरे अपने लिए भी आश्चर्य का विषय था...एक सुखद आश्चर्य का।

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिए अनिवार्य योग्यता थी- उम्र में सोलह वर्ष और शिक्षा में मैट्रिक। सन् 1944 में सुशीला ने यह योग्यता प्राप्त की और शादी करके कोलकत्ता चली गयी। दोनों बड़े भाई भी आगे पढ़ाई के लिए बाहर चले गये। इन लोगों की छत्र-छाया के हटते ही पहली बार मुझे नये सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिता जी का ध्यान भी पहली बार मुझ पर केंद्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे जुटाये जाते थे, पिता जी का आग्रह रहता था कि मैं रसोई से दूर ही रहूँ। रसोई को वे भटियारखाना कहते थे और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था। घर में आये दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय-पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् 1942 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर-दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था।

सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किये, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् 1945 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आयी, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल...जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया। मात्र पढ़ने

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. **मन्नू भंडारी जी के पिताजी का स्वभाव कैसा था?**
2. **मन्नू भंडारी में हीन भावना क्यों पैदा हो गई थी?**
3. **लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श क्यों नहीं बना पाई?**

को,चुनाव करके पढ़ने में बदला...ख़ुद चुन-चुनकर किताबें दीं...पढ़ी हुई किताबों पर बहसें कीं तो दो साल बीतते-न-बीतते साहित्य की दुनिया शरत-प्रेमचंद से बढ़कर जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा तक फैल गयी और फिर तो फैलती ही चली गयी। उस समय जैनेंद्र जी की छोटे-छोटे सरल-सहज वाक्यों वाली शैली ने बहुत आकृष्ट किया था। 'सुनीता' (उपन्यास) बहुत अच्छा लगा था, अज्ञेय जी का उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' पढ़ा ज़रूर पर उस समय वह मेरी समझ के सीमित दायरे में समा नहीं पाया था। कुछ सालों बाद 'नदी के द्वीप' पढ़ा तो उसने मन को इस कदर बाँधा कि उसी झोंक में शेखर को फिर से पढ़ गयी...इस बार कुछ समझ के साथ। यह शायद मूल्यों के मंथन का युग था...पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनायी धारणाओं के आगे प्रश्न चिह्न ही नहीं लग रहे थे, उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था। इसी संदर्भ में जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', भगवती बाबू का 'चित्रलेखा' पढ़ा और शीला अग्रवाल के साथ लंबी-लंबी बहसें करते हुए उस उम्र में जितना समझ सकती थी, समझा।

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरु किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् 1946-47 के दिन...वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आये लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध,सारी वर्जनाएँ, सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है,यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरु हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

यश-कामना बल्कि कहूँ कि यश-लिप्सा, पिता जी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी और उनके जीवन

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. पड़ोस कल्चर के बारे में लेखिका के क्या विचार थे?
5. लेखिका के पिताजी उन्हें बहसों में बैठने को क्यों कहा करते थे?
6. लेखिका का साहित्य से संबंध कैसे जुड़ा?

की धुरी था यह सिद्धांत कि व्यक्ति को कुछ विशिष्ट बन कर जीना चाहिए...कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उसका नाम हो, सम्मान हो, प्रतिष्ठा हो, वर्चस्व हो। इसके चलते ही मैं दो-एक बार उनके कोप से बच गयी थी। एक बार कॉलिज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें और बतायें कि मेरी गतिविधियों के कारण मेरे खिलाफ़ अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए? पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला। ''यह लड़की मुझे कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रखेगी...पता नहीं क्या-क्या सुनना पड़ेगा वहाँ जाकर! चार बच्चे पहले भी पढ़े, किसी ने ये दिन नहीं दिखाया।'' गुस्से से भन्नाते हुए ही वे गये थे। लौटकर क्या कहर बरपा होगा, इसका अनुमान था, सो मैं पड़ोस की एक मित्र के यहाँ जाकर बैठ गयी। माँ को कह दिया कि लौटकर बहुत कुछ गुबार निकल जाए, तब बुलाना। लेकिन जब माँ ने आकर कहा कि वे तो खुश ही हैं, चली चल, तो विश्वास नहीं हुआ। गयी तो सही, लेकिन डरते-डरते। ''सारे कॉलिज की लड़कियों पर इतना रौब है तेरा...सारा कॉलिज तुम तीन लड़कियों के इशारे पर चल रहा है? प्रिंसिपल बहुत परेशान थी और बार-बार आग्रह कर रही थी कि मैं तुझे घर बिठा लूँ, क्योंकि वे लोग किसी तरह डरा-धमकाकर, डाँट-डपटकर लड़कियों को क्लासों में भेजते हैं और अगर तुम लोग एक इशारा कर दो कि क्लास छोड़कर बाहर आ जाओ तो सारी लड़कियाँ निकलकर मैदान में जमा होकर नारे लगाने लगती हैं। तुम लोगों के मारे कॉलिज चलाना मुश्किल हो गया है उन लोगों के लिए।'' कहाँ तो जाते समय पिता जी मुँह दिखाने में घबरा रहे थे और कहाँ बड़े गर्व से कहकर आये कि यह तो पूरे देश की पुकार है...इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है भला? बेहद गद्गद् स्वर में पिता जी यह सब सुनाते रहे और मैं अवाक्। मुझे न अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था, न अपने कानों पर। पर यह हकीक़त थी।

एक घटना और। आज़ाद हिंद फ़ौज़ के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी-वर्ग चौपड़ (मुख्य बाज़ार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाजी। इस बीच पिता जी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिता जी की लू उतारी, ''अरे, उस मन्नू की तो मत मारी गयी है पर भंडारी जी आपको क्या हुआ? ठीक है, आपने लड़कियों को आज़ादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे-कैसे उलटे-सीधे लड़कों के साथ हड़तालें करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह। हमारे-आपके घरों की लड़कियों को शोभा देता है यह सब? कोई मान-मर्यादा, इज़्ज़त-आबरू का ख़याल भी रह गया है आपको या नहीं?''

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. **शीला अग्रवाल के व्यक्तित्व से लेखिका किस प्रकार प्रभावित हुई?**
8. **कॉलेज से पत्र आने पर लेखिका के पिताजी की क्या प्रतिक्रिया हुई?**

वे तो आग लगाकर चले गये और पिताजी सारे दिन भभकते रहे, ''बस, अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ। बंद करो अब इस मन्नू का घर से बाहर निकलना।''

इस सबसे बेखबर मैं रात होने पर घर लौटी तो पिता जी के एक बेहद अंतरंग और अभिन्न मित्र ही नहीं, अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ. अंबालाल जी बैठे थे। मुझे देखते ही उन्होंने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया, आओ, आओ मन्नू! मैं तो चौपड़ पर तुम्हारा भाषण सुनते ही सीधा भंडारी जी को बधाई देने चला आया। 'आई एम रिअली प्राउड ऑफ़ यू'...क्या तुम घर में घुसे रहते हो भंडारी जी...घर से निकला भी करो। 'यू हैव मिस्ड समथिंग, और वे धुआँधार तारीफ़ करने लगे वे बोलते जा रहे थे और पिता जी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। भीतर जाने पर माँ ने दोपहर के गुस्से वाली बात बतायी तो मैंने राहत की साँस ली।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा!यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो। पर पिता जी! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे। एक ओर 'विशिष्ट' बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है?

सन् 1947 के मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलिज वालों ने नोटिस थमा दिया-लड़कियों को भड़काने और कॉलिज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में। इस बात को लेकर हुड़दंग न मचे, इसलिए जुलाई में थर्ड इयर की क्लासेज़ बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया।

हुड़दंग तो बाहर रहकर भी इतना मचाया कि कॉलिज वालों को अगस्त में आखिर थर्ड इयर खोलना पड़ा। जीत की खुशी, पर सामने खड़ी बहुत-बहुत बड़ी चिर प्रतीक्षित खुशी के सामने यह खुशी बिला गयी।

शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि...15 अगस्त 1947

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

9. **मन्नू भंडारी जी के भाषण को सुनकर उनके पिता के मित्र ने क्या कहा?**
10. **15 अगस्त 1947 को लेखिका ने शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि क्यों कहा?**

सारांश : प्रस्तुत पाठ मन्नू भंडारी जी द्वारा कृत एक आत्मकथा पाठ है। इसमें लेखिका ने स्वयं के जीवन की घटनाओं का तथा उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले व्यक्तियों की चारित्रिक विशेषताओं का सजीव चित्रण किया है। लेखिका ने आज़ादी में युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी को भी अप्रत्यक्ष रूप से उजागर किया है। लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा में हुआ था। उनके माता-पिता कुछ दिनों बाद अजमेर आ गए थे। पिताजी अजमेर से पहले इंदौर में रहते थे जहाँ उनका बड़ा मान-सम्मान था। वे बेहद कोमल और संवेदनशील होते हुए भी क्रोधी और अहंवादी थे। उनके परिवार को आर्थिक संघर्ष करना पड़ा था। किंतु उनके पिताजी ने आर्थिक विषमता का प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ने नहीं दिया। लेखिका बताती हैं कि गोरा रंग इनके पिताजी की कमज़ोरी थी। इसीलिए वे उनसे गोरी उनकी बहन सुशीला की हमेशा हर बात में तुलना करते थे और उसकी प्रशंसा किया करते थे। लेखिका की माँ अत्यंत सीधी व सरल थी। उनमें धैर्य और सहनशीलता अधिक थी। वे जीवन भर पूरे परिवार की निस्वार्थ सेवा करती रही थी। सभी भाई-बहन पिता से अधिक माताजी को ही चाहते थे। लेखिका ने इस पाठ में पड़ोस कल्चर के बारे में भी बहुत कुछ बताया है। उनका कहना था कि पड़ोस कल्चर हमारे व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है। लेखिका के घर में राजनीतिक पार्टियों पर बहस होती रहती थी। इस कारण लेखिका को शहीदों की कहानियों को सुनने का मौका मिलता था। उनकी कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के व्यक्तित्व से वे बहुत प्रभावित थीं क्योंकि शीला अग्रवाल जी ने ही उनका साहित्य में प्रवेश करवाया था। उनकी प्रेरणा से लेखिका ने शरद, प्रेमचंद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, भगवती चरण वर्मा के साहित्य का अध्ययन किया था। शीला अग्रवाल जी ने उन्हें देश सेवा की भी प्रेरणा दी थी। उन्हीं की प्रेरणा से लेखिका प्रभात फेरियों, हड़तालों और जुलूसों में भाग लेने लगी थी। इस प्रकार उनका प्रवेश स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यों में होने लगा था। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के उनके इस कार्य को देखकर कॉलेज प्रशासन ने उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की। इस कार्यवाही के संबंध में घर पर एक पत्र भेजा गया। पत्र पढ़ते ही पिताजी आग बबूला हो गए। लेकिन बाद में उन्हें अपनी बेटी पर गर्व हुआ। वे प्रिंसिपल से कह आये कि यह तो पूरे देश की आवाज़ है। इस पर कोई कैसे रोक लगा सकता है? लेखिका ने हड़ताल में चौराहे पर भाषण दिया। शायद इसकी शिकायत पिताजी के एक दकियानूसी मित्र ने उनसे कर दी। पिताजी सारे दिन क्रोधित होते रहे। लेखिका घर लौटी तो उस समय घर पर पिताजी के बेहद अंतरंग मित्र और अजमेर के सबसे प्रतिष्ठित और सम्मानित डॉ अंबालाल जी बैठे थे। उन्होंने लेखिका का स्वागत

किया। उनकी बहुत प्रशंसा की और उनके भाषण की तारीफ की। लेखिका के पिता जी का क्रोध गर्व में बदल गया। कॉलेज प्रशासन ने लड़कियों को भड़काने और कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में शीला अग्रवाल को मई 1947 में नोटिस थमा दिया था। हुड़दंग ना मचे इसीलिए जुलाई में थर्ड ईयर की क्लासेस बंद कर दी गई। लेखिका सहित तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। लेखिका और उनकी सहेलियों ने इस बात का बहुत विरोध किया। मज़बूर होकर कॉलेज खोलना ही पड़ा। उन्हीं दिनों देश को आजादी भी मिली। किंतु लेखिका ने अंत में बताया कि आजादी की खुशी इतनी अधिक थी कि कॉलेज खुलने की जीत की खुशी कहीं खो गई।

नए शब्द

1. निहायत = पूरी तरह से।
2. दरियादिली = परोपकार की उत्कृष्ट भावना
3. अहंवादी = घमंडी
4. अर्थ = धन
5. ग्रंथि = गाँठ
6. फरमाइश = इच्छा
7. दायरा = सीमा
8. वर्चस्व = दबदबा, प्रभाव
9. आग लगाना = भड़काना
10. बिला जाना = गायब हो जाना, समा जाना
11. शिद्दत = मन से
12. सुघड़ = सुंदर
13. पाक शास्त्री = खाना बनाने में निपुण
14. यश लिप्सा = प्रसिद्धि की चाह
15. लालसा = इच्छा
16. अंतर्विरोध = मन के भीतर का द्वंद्व

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. एक ओर वे बेहद कोमल और संवेदनशील व्यक्ति थे तो दूसरी ओर बेहद क्रोधी और अहंवादी।
2. आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैटों में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत पड़ोस कल्चर से विच्छिन्न कर हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।
3. वे धुआँधार तारीफ करने लगे। वह बोलते जा रहे थे और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था।

(आ) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

14 जुलाई 2018, फिनलैंड के टॉमपेट स्टेडियम पर धान के खेतों में दौड़ लगाने वाली हिमा दास जब अंडर ट्रैक स्पर्धा के ट्रैक पर कुलांचे भर रही थी तो इतिहास लिखे जाने का समय तय हो रहा था। रेस के 35 सेकंड तक हिमा ट्रैक पर बढ़त बनाए रखने वाले टॉप 10 एथलीट में भी ना थी, लेकिन उसके बाद उन्होंने ऐसी जादुई रफ्तार पकड़ी कि सब को पीछे छोड़ते हुए 51.46 सेकंड में 400 मीटर की दूरी तय कर इतिहास रच डाला और इसी के साथ हिमा दास आईएएएफ विश्व अंडर 20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप की ट्रैक स्पर्धा में स्वर्ण पद जीतने वाली पहली भारतीय बन गई। ये कमाल की धाविका हैं। हिमा दास का जन्म 9 जनवरी 2000 को असम के नौगांव जिले के छोटे से गाँव भिंड में हुआ था। उनके पिता चावल की खेती करने वाले किसान और फुटबॉल के अच्छे खिलाड़ी थे। उनके कोच निपोन दास ने हिमा दास की ट्रेनिंग के खर्चे का जिम्मा स्वयं उठाया था और वे उन्हें गुवाहाटी ट्रेनिंग सेंटर ले गए थे। हिमा दास अभ्यास, लगन और दृढ़ संकल्प से अव्वल दर्जे की धाविका बन गई थी। उन्होंने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में 100 मीटर स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। राष्ट्रमंडल खेलों में 400 मीटर स्पर्धा में छठे स्थान पर रही। फिनलैंड में आईएएएफ विश्व अंडर 20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उन्होंने स्वर्ण पदक जीतकर भारत का नाम ऊँचा कर दिया। हिमा दास ने भारत में एथलेटिक्स के एक नए दौर की शुरुआत की। उनकी इस उपलब्धि के लिए सितंबर सन् 2018 में उन्हें राष्ट्रपति द्वारा अर्जुन पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रश्नः

1. 14 जुलाई 2018 की क्या विशेषता है?

2. 14 मीटर की दौड़ स्पर्धा में हिमा दास ने कौन सा पदक जीता था?
3. हिमा दास का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
4. हिमा दास के कोच कौन थे और उन्होंने हिमा दास की किस प्रकार सहायता की थी?
5. राष्ट्रपति ने हिमा दास को किस पुरस्कार से सम्मानित किया था?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखिका मन्नू भंडारी के जीवन और साहित्य का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. लेखिका मन्नू भंडारी जी के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
3. पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में लिखिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का प्रभाव किस प्रकार पड़ा? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. प्रस्तुत पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए।

1. यश 2. इशारा 3. आग्रह 4. गर्व

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थी शब्द लिखिए।

1. व्यवस्थित 2. गुण 3. प्रशंसा 4. सम्मान

(इ) निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी लिखिए।

1. पत्र 2. पर 3. मत 4. मित्र

(ई) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. आग लगाना 2. लू उतारना 3. आग बबूला होना

(उ) निम्नलिखित शब्दों के संधि विच्छेद कीजिए और संधि का नाम लिखिए।

1. युवावस्था 2. भग्नावशेष 3. महत्वाकांक्षी 4. विद्यार्थी 5. दुर्बल

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा' विषय पर समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
2. हमारे सामाजिक और व्यवसायिक जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

3. कृषि जगत

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- निबंध पढ़ेंगे, समझेंगे और चर्चा करेंगे।
- निबंध विधा के बारे में अपने शब्दों में बताएंगे। भारत और तेलंगाना की कृषि के संबंध में चर्चा करेंगे।
- पाठ की पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करेंगे।
- पठित, अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- भारत में कृषि के विकास के बारे में लिखेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।
- तेलंगाना की विभिन्न कृषि कल्याणकारी योजनाओं के बारे में अपने शब्दों में लिखेंगे।
- पाठ का सारांश लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- समानार्थी, विलोमार्थी शब्द लिखेंगे और वाक्य में प्रयोग करेंगे।
- नए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करेंगे।
- विभिन्न शब्दों का पद परिचय लिखेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- विभिन्न विषयों पर नारों का सृजन करेंगे।
- कृषि की सार्थकता और व्यावसायिक क्षमता का महत्व जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य निबंध विधा का परिचय प्रदान करते हुए निबंध लेखन की क्षमता का विकास करना है। भारत और तेलंगाना में कृषि की कार्यप्रणाली से अवगत होकर इसके महत्व को समझना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ की विधा निबंध लेखन है। यह गद्‌य की प्रमुख विधाओं में से एक है। निबंध का अर्थ है बाँधना। किसी विषय की विस्तृत जानकारी को क्रम से कुछ अनुच्छेदों में बाँधना निबंध है। निबंध के माध्यम से किसी विषय के बारे में अपने विचारों और भावों को प्रभावशाली व सुंदर ढंग से व्यक्त किया जाता है। साहित्यकारों ने निबंध को गद्‌य की कसौटी कहा है। निबंध आत्मपरक होता है। इसमें आत्मीयता और भावमयता के साथ-साथ विचारों की तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इसमें किसी भी विषय का विवेचन, विश्लेषण, परीक्षण और मूल्यांकन किया जाता है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत निबंध पाठ में भारत और तेलंगाना में कृषि के महत्व की गहन और विस्तृत व्याख्या की गई है। कृषि प्रणाली से जुड़े संस्थानों, तथ्यों और सुधारों पर सूक्ष्म रूप से दृष्टिपात किया गया है।

भारत एक महान और कृषि प्रधान देश है। कृषि हमारे देश की अर्थव्यवस्था की नींव है। यह हमारे देश के लोगों की जीवन जीने की एक कला है। भारत की दो तिहाई जनसंख्या खेती कार्य में लिप्त हैं। इसके माध्यम से देश की 130 करोड़ जनसंख्या की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

अंग्रेजी में कृषि को एग्रीकल्चर कहा जाता है। एग्रीकल्चर शब्द एग्री और कल्चर दो शब्दों से मिलकर बना है। एग्री अर्थात् क्षेत्र और कल्चर अर्थात् खेती। तात्पर्य यह है कि भूमि के एक क्षेत्र पर पौधों को उगाने की प्रक्रिया को खेती या कृषि कहा जाता है। कृषि की इस प्रक्रिया का निर्वाहण करने वालों को कृषक या किसान कहते हैं। टी डब्ल्यू.शुल्ट, जॉन डब्ल्यू. मेलोर जैसे अर्थशास्त्रियों ने कृषि और कृषक को आर्थिक विकास का अग्रदूत माना है।

देश की जनता की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसान दिन रात मेहनत करते हैं। ये अपनी कृषि भूमि पर विभिन्न फसलों को उगाते हैं। भारत में अनेक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश हैं। इनमें अलग-अलग तरह की फसलें उगाई जाती हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में यदि बात की जाए तो देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का 25% योगदान है। भारत में गेहूँ, चावल, दाल, गन्ना, कपास, मकई, बाजरा, जवारी, मूंगफली आदि की खेती की जाती है। कृषि मुख्य रूप से यहाँ के लोगों का प्रमुख व्यवसाय और आजीविका का स्त्रोत है। भारत में कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर करती है। जिन प्रांतों में वर्षा अच्छी होती है वहाँ पैदावर भी अच्छी होती है। स्वतंत्रता के बाद से ही कृषि प्रणाली में सुधार के अनेक प्रयत्न किए गए हैं। पंचवर्षीय योजनाओं में इसे प्रमुख स्थान दिया गया है। कृषि पर आधारित सामाजिक ढाँचे, इसके स्वरूप तथा उत्पादन में इस्तेमाल की जाने वाली टेक्नोलॉजी में व्यापक गुणात्मक परिवर्तन की ओर भी कदम बढ़ाए गए। संस्थागत परिवर्तन और सिंचाई की सुविधा के विस्तार पर विशेष जोर दिया गया। कृषि क्षेत्र में विकास के लिए टेक्नोलॉजी को भी अपनाया गया। 1960 के दशक के मध्य में टेक्नोलॉजी का अच्छा असर दिखाई दिया जो हरित क्रांति के रूप में दृष्टिगोचर हुआ। इस क्रांति का संबंध विशेष रूप से रासायनिक उर्वरकों की क्षमता के उत्पादन से है। इसे प्रारंभ करने का श्रेय प्रोफेसर नॉर्मल बिस्लाग को जाता है। भारत में एम.एस. स्वामीनाथन को इस क्रांति का जनक माना जाता है। इस क्रांति के कारण फसल के उत्पादन में वृद्धि हुई। इसका विकास बहुत तेज़ी से हुआ और इसके आश्चर्यजनक परिणाम भी निकले। ये परिणाम हमें निम्नलिखित रूप से दृष्टिगोचर हुए।

1. कृषि-शिक्षा

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. हमारे देश की अर्थव्यवस्था की नींव क्या है?
2. कृषि और किसान किसे कहते हैं?
3. हमारे देश में उगाई जाने वाली कुछ फसलों के नाम बताइए।

2. कृषि उत्पादन में सुधार

3. कृषि का विस्तार

4. कृषि में तकनीक सुधार

5. कृषि में संस्थागत सुधार आदि।

कृषि के विकास हेतु भारत सरकार द्वारा समय-समय पर अनेक योजनाएँ बनाई गई। इनमें राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता प्रबंधन परियोजना, सूक्ष्म सिंचाई का राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय सतत कृषि विकास मिशन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, राष्ट्रीय किसान नीति, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, राष्ट्रीय बागवानी मिशन, आर्टिफिशियल रिचार्ज थ्रू डगवेल्स, पशुधन बीमा योजना आदि प्रमुख हैं।

इस तरह संपूर्ण भारत में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषि विकास की दिशा में प्रयास किए गए।

हम सब जानते हैं कि हमारा राज्य तेलंगाना भारत का 29 वाँ और युवा राज्य है, जिसका गठन 2 जून 2014 को हुआ। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर है। तेलंगाना में अधिकांशतः लाल बजरी मिट्टी है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर लाल रेतीली मिट्टी, गहरी लाल दोमट मिट्टी, गहरी काली कपास मिट्टी भी पाई जाती है। तेलंगाना में दो तरह की फसलें उगाई जाती हैं जिन्हें रबी की फसल और खरीफ की फसल कहा जाता है। रबी की फसलें अक्टूबर से दिसंबर तक बोई जाती है और गर्मियों में अप्रैल से जून तक काटी जाती हैं। इन फसलों में गेहूँ, चना, जवार, सरसों आदि प्रमुख हैं। खरीफ की फसलें मानसून की शुरुआत में जून-जुलाई में बोई जाती हैं और इनकी कटाई सितंबर से अक्टूबर में होती हैं। धान, अरहर, मूंग, उड़द,

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. 1960 के दशक की क्या विशेषता थी?
5. भारत में हरित क्रांति का जनक किसे माना जाता है?
6. हरित क्रांति के क्या परिणाम निकले?

कपास, सोयाबीन आदि खरीफ की प्रमुख फसलें हैं। वर्षा, मिट्टी की प्रकृति और जलवायु जैसी भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर तेलंगाना को चार कृषि जलवायु क्षेत्रों में बाँटा गया है। ये क्षेत्र निम्नलिखित हैं:-

1. उत्तरी तेलंगाना क्षेत्र
2. मध्य तेलंगाना क्षेत्र
3. दक्षिणी तेलंगाना क्षेत्र
4. उच्च ऊँचाई और जनजातीय क्षेत्र आदि।

तापमान में उतार-चढ़ाव, दक्षिण पश्चिम मानसून, अतिवृष्टि और अनावृष्टि, उर्वरकों और कीटनाशकों का निरंतर प्रयोग हमारे राज्य की कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं। तेलंगाना के गठन के साथ ही तेलंगाना सरकार की ओर से कृषि व्यवस्था में सुधार के अनेक प्रयास हुए हैं। जैसे-

1. किसानों को सुनिश्चित ऋण सुविधा देना।
2. फसल खराब होने पर बीमा की सुविधा प्रदान करना।
3. फसल के समय और पैटर्न में बदलाव के लिए किसानों को सुझाव देना।
4. पानी के उपयोग की दक्षता के लिए सुझाव कार्यक्रमों का आयोजन करना।
5. फील्ड सेंटरों, डाटा बैंकों तथा जर्मप्लाज्म बैंकों की स्थापना करना।
6. ईंधन दक्ष सिंचाई पंपों का मानकीकरण करना।
7. जैव उर्वरकों द्वारा अकार्बनिक उर्वरकों का प्रतिस्थापन करना।
8. रैतु बंधु, काकतीय मिशन और कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना जैसी योजनाओं का निर्माण करना।

रैतु बंधु तेलंगाना सरकार की एक ऐसी योजना है जिसके तहत राज्य सरकार प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से फसल के मौसम की शुरुआत में जमीन के मालिकों को वित्तीय सहायता प्रदान

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. **भारत सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं के नाम लिखिए।**
8. **तेलंगाना का गठन कब हुआ?**
9. **तेलंगाना के चार प्रमुख जलवायु क्षेत्रों के नाम बताइए।**

करती है। इस योजना की सहायता से किसान अपने प्रारंभिक निवेश की ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं और कर्ज़ लेने की प्रक्रिया से भी छूट सकते हैं। यह योजना किसानों में विश्वास पैदा करती है, उत्पादकता और आय को बढ़ाती है और ग्रामीण ऋणग्रस्तता के चक्र को तोड़ती है।

मिशन काकतीय तेलंगाना सरकार द्वारा आरंभ किया गया एक अद्भुत मिशन है। इसका उद्देश्य तेलंगाना राज्य के किसानों की समस्या का समाधान करना है। इस मिशन के अंतर्गत राज्य के सभी तालाबों की मरम्मत की गई और टैंक सिंचाई को बढ़ावा दिया गया। चार चरणों में इस मिशन को पूरा किया गया। इस मिशन के फलस्वरूप तेलंगाना राज्य में किसानों की पानी की समस्या की समाप्ति हुई।

कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना तेलंगाना के कालेश्वरम भोपालपल्ली में गोदावरी नदी पर निर्मित एक बहुउद्देशीय सिंचाई परियोजना है। यह दुनिया की सबसे बड़ी मल्टीस्टेज लिफ्ट सिंचाई परियोजना है। इसका उद्देश्य सिंचाई, बिजली और परिवहन के क्षेत्रों में सुधार करना है।

यही नहीं तेलंगाना में राज्य सरकार कृषि आय को बढ़ाने के लिए तेलंगाना क्षेत्र को 'विश्व का बीज कटोरा' बनाने के लिए भी प्रयासरत है। वर्तमान में तेलंगाना के पास 'सीड बाउल ऑफ इंडिया' का अनौपचारिक खिताब है। अनुकूल कृषि जलवायु परिस्थितियों, कुशल जनशक्ति, बुनियादी ढांचे और गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन और भंडारण के लिए रसद के साथ राज्य भारत की 60% से अधिक बीज आवश्यकता की पूर्ति करता है। हैदराबाद में ही 430 से अधिक बीज कंपनियाँ हैं और राज्य 18 देशों को बीज का निर्यात करता है।

तेलंगाना राज्य में अनेक ऐसे संस्थान हैं जो कृषि शिक्षा तथा कृषि विकास के कार्यों में संलग्न है। इनमें प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान, भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान आदि हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत और इसके राज्यों में कृषि कार्यों में अभूतपूर्व विकास हो रहा है। इस विकास को दोहरी गति प्रदान करने में हमारी युवा शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। क्योंकि कृषि और इससे संलग्न क्षेत्रों में रोज़गार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं। आशा है इन अवसरों का लाभ उठाकर हमारे देश और हमारे राज्य की युवा शक्ति अपनी व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करेगी और देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करेगी।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

10. रैतु बंधु योजना के बारे में बताइए।

11. तेलंगाना को 'सीड बाउल ऑफ इंडिया' क्यों कहा जाता है?

सारांश : प्रस्तुत पाठ एक निबंध पाठ है। इसमें भारत और तेलंगाना की कृषि से संबंधित विभिन्न तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। हम जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की दो तिहाई जनता की आजीविका का साधन कृषि है। कृषि शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एग्रीकल्चर शब्द से हुई है। भूमि के एक क्षेत्र पर पौधों या फसल को उगाने की प्रक्रिया को कृषि या खेती कहा जाता है। किसान कृषि कार्यों का संचालन करते हैं। भारत में उगाई जाने वाली फसलों में गेहूँ, चावल, गन्ना, कपास, बाजरा आदि प्रमुख हैं। स्वतंत्रता के बाद से कृषि प्रणाली में सुधार के लिए पंचवर्षीय योजनाओं में इसे स्थान दिया गया। हरित क्रांति को अपनाया गया। प्रोफेसर नॉर्मन बिस्लाग ने हरित क्रांति को आरंभ किया था। एम.एस. स्वामीनाथन ने भारत में इस क्रांति की शुरुआत की थी। इस क्रांति के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में अनेक सुधार हुए। 2 जून 2014 को गठित तेलंगाना राज्य में भी कृषि प्रणाली में तीव्र गति से विकास हुआ। यहाँ पर मुख्य रूप से रबी और खरीफ की फसलें उगाई जाती हैं। तेलंगाना को चार कृषि क्षेत्रों में बांटा गया है। इन चारों क्षेत्रों में कृषि के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सरकार द्वारा कृषि व्यवस्था में सुधारों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनाई गई हैं। इन योजनाओं में रैतु बंधु, काकतीया मिशन और कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई योजनाएँ प्रमुख हैं। किसानों को ऋण की सुविधाएँ दी जा रही हैं तथा फसल खराब होने पर बीमा की सुविधा भी दी जा रही है। कृषि शिक्षा तथा कृषि विकास के लिए अनेक संस्थान यहाँ कार्यरत हैं। इन संस्थानों में प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना कृषि विश्वविद्यालय प्रमुख है। अंत में हम कह सकते हैं कि भारतीय जनता के आजीविका के प्रमुख स्त्रोत कृषि के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ है। आशा है वर्तमान युवा पीढ़ी के सहयोग से इस विकास की प्रक्रिया की गति और भी तीव्र हो जाएगी।

नए शब्द

1.	आजीविका	=	जीवन यापन का साधन, रोज़गार
2.	अग्रदूत	=	किसी बात या कार्य को आरंभ करने वाला, प्रवर्तनकर्ता
3.	व्यापक	=	फैला हुआ, विस्तृत
4.	मृदा	=	मिट्टी
5.	उर्वरता	=	उपजाऊपन
6.	अतिवृष्टि	=	अत्यधिक वर्षा
7.	अनावृष्टि	=	सूखा या वर्षा का अभाव
8.	प्रत्यक्ष	=	वह वस्तु जो आँखों के सामने हो
9.	हस्तांतरण	=	एक हाथ से दूसरे हाथ में गया हुआ
10.	दोहरी	=	दुगुनी

11. पथ = मार्ग, राह

12. भौगोलिक = भूगोल संबंधी

13. पंचवर्षीय = पाँच वर्ष की

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. कृषि हमारे देश की अर्थव्यवस्था की नींव है।
2. कृषि पर आधारित सामाजिक ढाँचे, इसके स्वरूप तथा उत्पादन में इस्तेमाल की जाने वाली टेक्नोलॉजी में व्यापक गुणात्मक परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाए गए।
3. तापमान में उतार-चढ़ाव, दक्षिण पश्चिम मानसून, अतिवृष्टि और अनावृष्टि, उर्वरकों और कीटनाशकों का निरंतर प्रयोग हमारे राज्य की कृषि को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व हैं।

(आ) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

कृषि के समान ही लघु उद्योग भी भारतीय जनता की आजीविका का एक प्रमुख स्त्रोत है। लघु उद्योग को कुटीर उद्योगों भी कहा जाता है। इनके आरंभ एवं आयोजन के लिए भारी-भरकम साधनों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ये थोड़े से स्थान पर कम पूँजी और अल्प साधनों से ही शुरू किए जा सकते हैं। फिर भी उनसे सुनियोजित ढंग से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करके देश की निर्धनता, गरीबी और विषमताओं से एक सीमा तक लड़ा जा सकता है। अपने आकार, प्रकार तथा साधनों की लघुता व अल्पता के कारण ही इस प्रकार के उद्योग धंधों को कुटीर उद्योग भी कहा जाता है। इस प्रकार के उद्योग धंधे अपने घर में भी आरंभ किए जा सकते हैं और अपने सीमित साधनों का सदुपयोग करके इन से आर्थिक लाभ भी कमाया जा सकता है। उद्योग धंधों द्वारा अपने जीवन को सुखी और समृद्ध भी बनाया जा सकता है। भारत जैसे देश के लिए तो इस प्रकार के लघु उद्योगों का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ युवाओं की एक बहुत बड़ी संख्या है जो बेरोज़गार है। इसी कारण महात्मा गाँधी ने मशीनीकरण का विरोध करते हुए कहा था कि लघु उद्योगों को आश्रय देने से और बढ़ावा देने से हम स्वावलंबी बनेंगे, युवाओं को रोज़गार मिलेगा और आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। इस प्रकार हम अपने खाली समय का सदुपयोग कर सकते हैं। इन घरेलू उद्योगों द्वारा आर्थिक समृद्धि तो बढ़ती ही है लोगों को घर में ही रोज़गार के अवसर मिल सकते हैं।

प्रश्नः

1. लघु उद्योग किसे कहते हैं?
2. लघु उद्योगों को कुटीर उद्योग क्यों कहा जाता है?
3. लघु उद्योगों की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
4. लघु उद्योगों के संबंध में गाँधी जी के क्या विचार थे?
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. भारत को कृषि प्रधान देश क्यों कहा जाता है?
2. पाठ की विधा विशेष के बारे में अपने शब्दों में लिखिए।
3. रबी और खरीफ की फसलों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. तेलंगाना में कृषि व्यवस्था में होने वाले विकास का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. पाठ का सारांश लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए और वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1. लिप्त 2. आवश्यकता 3. स्त्रोत 4. दशक

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थी लिखिए।

1. आरंभ 2. स्वतंत्रता 3. लाभ 4. विश्वास

(इ) उत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों की पहचान कीजिए।

1. कार्य 2. टेक्नोलॉजी 3. क्षेत्र 4. एग्रीकल्चर

(ई) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों का पद परिचय लिखिए।

1. <u>भारत</u> एक महान देश है।
2. <u>यह</u> योजना उत्पादकता को बढ़ाती है।
3. <u>हमारे</u> राज्य तेलंगाना का गठन 2 जून 2014 को हुआ।

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'कृषि विकास' विषय पर कुछ नारों का सृजन कीजिए।
2. देश का जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप कृषि व्यवस्था में सुधार करने के लिए क्या प्रयत्न करेंगे?

4. एक तोले अफ़ीम की कीमत

- डॉ. रामकुमार वर्मा

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- एकांकी पढ़ेंगे, समझेंगे और एक तोले अफ़ीम की कीमत शीर्षक की सार्थकता के बारे में चर्चा करेंगे।
- एकांकी विधा के बारे में अपने शब्दों में बताएंगे।
- एकांकी के पात्रों की स्वभावगत विशेषताओं पर चर्चा करेंगे।
- पठित और अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।
- पाठ की पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या करेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- एकांकी का उद्देश्य व संदेश अपने शब्दों में लिखेंगे।
- एकांकी का सारांश लिखेंगे।
- एकांकीकार का परिचय अपने शब्दों में लिखेंगे।
- युवा वर्ग के मनोभावों के बारे में अपने विचार लिखेंगे। रामदीन, सीताराम, विश्वमोहिनी और मुरारी मोहन जैसे पात्रों का चरित्र चित्रण करेंगे।

भाषा व्याकरण

- विलोमार्थक, भिन्नार्थक, पुनरुक्त तथा युग्म शब्दों की पहचान करेंगे और उनका प्रयोग करेंगे।
- क्रिया विशेषण शब्दों की पहचान करेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- एकांकी विधा का सृजन करेंगे।
- ''दहेज प्रथा एक अभिशाप'' विषय पर निबंध लिखेंगे।
- जीवन के वास्तविक ध्येय की पहचान कर सत्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य एकांकी विधा से परिचित होते हुए एकांकी लेखन की क्षमता का विकास करना है। समाज में व्याप्त दहेज प्रथा जैसी कुरीति से परिचित होकर उसका विरोध करना है। युवा पीढ़ी में व्याप्त आत्महत्या की प्रवृत्ति का उन्मूलन करना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ एक एकांकी पाठ है। एक अंक वाले नाटकों को एकांकी कहा जाता है। अंग्रेजी के **वन एक्ट प्ले** शब्द के लिए हिंदी में एकांकी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसे भी अन्य नाटकों की तरह थिएटर, टीवी, रेडियो पर अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। कथानक, पात्र, देश, काल और वातावरण, संवाद, भाषा शैली और रंगमंचीयता इसके प्रमुख तत्व हैं। इसमें किसी एक ही विषय का चित्रण किया जाता है। प्रस्तुत एकांकी पाठ में दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति की ओर संकेत किया गया है।

प्रस्तावना

यह एक सामाजिक एकांकी है। इस एकांकी में मुरारी मोहन और विश्वमोहिनी जैसे पात्रों के माध्यम से युवा पीढ़ी की मानसिकता का चित्रण किया गया है। एकांकीकार ने पाठ के माध्यम से दहेज प्रथा के उन्मूलन की बात कही है। साथ ही उन्होंने यह बताने का भरसक प्रयास किया है कि आत्महत्या करने से समस्या का हल नहीं हो सकता है। प्रयास और साहस से समस्या का हल ढूँढा जा सकता है।

लेखक परिचय

रामकुमार वर्मा जी का जन्म सन् 1905 ई में मध्य प्रदेश के 'सागर' जिले में हुआ था। ये आधुनिक हिंदी साहित्य में एकांकी सम्राट के नाम से प्रसिद्ध हैं। अंजलि, चित्तौड़ की चिता, पृथ्वीराज की आँखें आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्हें देव पुरस्कार और पद्म भूषण जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। इनकी मृत्यु सन् 1989 में हुई।

पात्रः-

मुरारी मोहन : लाला सीताराम का पुत्र, नए विचारों का नवयुवक

विश्वमोहिनी : कॉलेज की नवयुवती छात्रा

रामदीन : लाला सीताराम का नौकर

जोखू : चौकीदार

परिवेशः-

रात दस बजे के बाद का समय। लाला सीताराम के मकान का एक कमरा। कमरे के बीचों बीच एक बड़ा टेबुल है। उस पर कागज, कलम, दवात आदि सुसज्जित हैं। टेबुल के आसपास दो-तीन कुर्सियाँ रखी हुई हैं। बगल में एक बेंच है जिस पर कारपेट बिछा हुआ है। दीवार पर दो-तीन फोटो लगे हुए हैं, जिनमें एक, मकान के मालिक सीताराम का है और दूसरा उनकी पत्नी का जो अब इस संसार में नहीं हैं। दोनों के बीच में श्रीलक्ष्मी जी का एक चित्र लगा हुआ है। दाहिनी ओर एक साइनबोर्ड है, जिसमें लाला सीताराम, अफ़ीम के व्यापारी लिखा हुआ है। दीवार पर कुछ ऊँचाई से एक क्लॉक टँगी हुई है, जिसमें दस बज कर पंद्रह मिनट हुए हैं। क्लॉक के बगल में कैलेंडर है।

मुरारी मोहन साफ़ कमीज और धोती पहने हुए हैं। लाला सीताराम का लड़का है - नए विचारों में पूर्ण रीति से रंगा हुआ। वह इसी वर्ष बी.ए. पास हुआ है। उम्र 21 वर्ष। देखने में सुंदर। साफ़ कमीज और धोती पहने हुए हैं। टेबुल पर बिखरे हुए कागज़ ठीक करने के बाद वह कुर्सी पर बैठकर अख़बार देख रहा है। चिंता की गहरी रेखाएँ - उसके मुख पर देखी जा सकती हैं। वह किसी समस्या को सुलझाने में व्यस्त मालूम देता है। (वह एक बार अख़बार से नज़र उठा कर दीवार की ओर शून्य में देखने लगता है।)

मुरारी मोहन : (एक बार अख़बार की ओर देख कर पुकारते हुए) रामदीन!

रामदीन : (बाहर से) सरकार।

(रामदीन का प्रवेश। घुटने तक धोती, गंजी और पगड़ी पहने हुए है। बड़ा बातूनी है। लेकिन है समझदार। आकर नम्रता से खड़ा हो जाता है।)

मुरारी मोहन : रामदीन! बाबूजी जाते वक्त कुछ कह गए हैं?

रामदीन : (हाथ जोड़ कर) कोई खास बात नाहीं सरकार। कहत रहे कि मुरारी भैया को देखते रहना तकलीफ न हों। नहीं तो रामदीन तुम जानो, ऐसी कहत रहे सरकार।

मुरारी मोहन : (लापरवाही से) ऐसा कहा? (हँसकर) हाँ, मुझे क्या तकलीफ होगी रामदीन? कब आने को कहा है?

रामदीन : सरकार, परसों शाम के कहा है। बहुत जरूरी काम है, नाहीं तो काहे जाते सरकार?

मुरारी मोहन : परसों आएँगे? कौन तारीख़ है? (कैलेण्डर की ओर देखता है।) 25 जुलाई! (ठंडी साँस लेकर) खैर।

रामदीन : (मुरारी को चिंतित देखकर) सरकार, जल्दी काम खतम होय जाय तो जल्दी आय जाय। कोई बात है सरकार?

मुरारी मोहन : (लापरवाही से) कोई बात नहीं। बाबूजी गए किसलिए हैं, तुम्हें मालूम है?

रामदीन : (हाथ झुलाकर) ए लो सरकार, आप लोग न जाने? हम गरीब मनई सरकार के काम को का समझे? हाँ, कहत रहे कि अफ़ीम अब बढ़ाय गई है। गाजीपुर से नवा कारबार चालू भवा है। यही बरे जाना पड़ गावा।

मुरारी मोहन : मुझसे तो बातें ही न हो सकीं। मैं समझा, किसी से कुछ तय करने के लिए गए हैं। मेरी आजकल कुछ ज्यादा फिकर मालूम होती है।

रामदीन : काहे न होय सरकार? अब आपै तो है, और कौन है, सरकार?

मुरारी मोहन : अच्छा (घड़ी की ओर देखकर) रामदीन! अब आओ तुम। दस बज चुके।

रामदीन : सरकार हमका तो हुकुम है कि यहीं दुकान में सोना। सरकार।

मुरारी मोहन : नहीं जी, तुम घर जाओ, मैं तो हूँ। मैं कोई बच्चा नहीं हूँ। मैं अकेला ही सोऊँगा। किसी का डर है क्या? और फिर चौकीदार तो है ही।

रामदीन : सरकार, नाराज होंगे, सरकार, मैं भी यहीं पड़ा रहूँगा।

मुरारी मोहन : क्यों, क्या तुम्हारे घर में कोई नहीं है?

रामदीन : है काहे नहीं सरकार? तेजी है, तेजी के माँ है। ओकरे तबीयत सरकार काल्हि से कुछ दिक है।

मुरारी मोहन : तब तो तुमको जाना चाहिये।

रामदीन : हाँ सरकार, बहुत दिक है। मुदा बड़े सरकार नाराज...।

मुरारी मोहन : नहीं, मैं कह दूँगा! यह क्या बात कि घर में लोग बीमार हों और तुम यहीं पड़े रहो।

रामदीन : (हाथ जोड़कर) वाह, सरकार आप दीनदयालू हैं। काहे न होंय सरकार? आप तो दीन की परबस्ती ...।

मुरारी मोहन : खैर, यह कोई बात नहीं।

रामदीन : (हाथ जोड़कर) तो सरकार मैं(रुककर) जाँव...!

मुरारी मोहन : हाँ, सुबह ज़रा जल्दी आ जाना।

रामदीन : बहुत अच्छा, सरकार। सरकार की का बात...!

(रामदीन अपना बिस्तरा उठाकर जाने को तैयार होता है।)

मुरारी मोहन : (सोचता हुआ) क्यों जी रामदीन, तुम्हारी शादी कब हुई थी?

रामदीन : (संकुचित होता हुआ) हँ, हँ, सरकार शादी? तेज़ी की माँ की? सरकार, जमाना गुजर गवा। (बिस्तरा ज़मीन पर रखता हुआ) अब तो तेज़ी के सादी के फिकर है। सरकार आपई करेंगे। (दाँत निकालता है।)

मुरारी मोहन : अच्छा, बहुत दिन बीत गए। और रामदीन, तुमने शादी के पहले तेजी की माँ को तो देखा होगा?

रामदीन : राम कहो, सरकार हम तो उहि का तब जाना जब तेजी का जन्म होय का देखत आवा। सरकार, भरे घर माँ कौन केका देखत हैं? माँ-बाप सब्बै तो रहे। जब लौ तेजी के माँ से मुलाकात का बखत आवै तब लौं घर में अँधियार हौय जाता रहा। और सरकार, आपन मेहरिया का मुँह देखै से का? देखा तौ ठीक, न देखा तौ ठीक। जब ऊ का अपनाय लिहिन तब सरकार, भली बुरी सब्बै ठीक है, हँ, हाँ। (नम्रता और हास्य का मिश्रण)

मुरारी मोहन : बड़ा ज्ञानी है। और यह शादी लगाई किसने थी?

रामदीन : अब सरकार, बापै लगाईन हमार काहे मा गिनती? ऊ हमसे कहवाइन - सब ठीक है। हम हूँ आपन मुँडिया हलाय दिहिन। शादी की बात तो सरकार वापै के हाथ में रहा चाही। ऊ कहिन के रामदीन के शादी होई, हम समझा ठीक है। तो शादी न करत? सरकार।

मुरारी मोहन : तुम लोग क्या समझो कि शादी किसे कहते हैं?

रामदीन : सरकार, आप लोग पढ़े लिखे हन। अब आप न जानौ तौ का हम जानी? हमारी शादी तो सरकार, गुजर-बसर के लायक है। आप लोगन की सरकार 'रूजगार जैसन शादी हौवत है।' अब तौ सरकारौ की शादी होई हाँ। (सिर हिलाता है।)

मुरारी मोहन : (दृढ़ता से) मेरी शादी नहीं होगी रामदीन ... अच्छा अब जाओ तुम।

रामदीन : काहे न होई सरकार!

मुरारी मोहन : कुछ नहीं, तुम जाओ।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. मुरारी मोहन का परिचय लिखिए।
2. रामदीन कौन है? उसका स्वभाव कैसा है?
3. सीताराम जी गाजीपुर क्यों गए थे?

रामदीन : सरकार के शादी तो अस होई कि सगर दुनिया तरफराय जाई। अच्छा तौ सरकार जाई न? राम राम (कमरे में लगी हुई लक्ष्मी जी की तस्वीर को भी प्रणाम करके जाता है।)

मुरारी मोहन : (व्यंग से) बड़ा भगत है।

(रामदीन के जाने पर मुरारी कुछ क्षणों तक दरवाज़े की ओर देखता हुआ बैठा रहता है। फिर उठ कर दरवाज़ा ऊपर और नीचे दोनों ओर से बंद करता है। दो लैम्पों में से एक लैम्प बुझा देता है। कुछ देर सोचता है।)

मुरारी मोहन : अब ठीक है। पीछा छूटा शैतान से। यहीं सोना चाहता था। बाबूजी का मुँह लगा नौकर है न? अब बेखटके अपना काम करूँगा। (सोचता है।) मेरी शादी ... शादी होगी! किसी जंगली जानवर से, अब सह नहीं सकता! बाबूजी सोचते क्यों नहीं कि हम लोगों के पास भी दिल होता है! हम लोग भी हसरत रखते हैं! मालूम हो जायगा कि मैं सच कहता था या मज़ाक करता था। मेरी लाश बतलायेगी। ठीक है.... आज आत्महत्या करनी ही होगी, तभी मेरा पीछा छूटेगा। ..... क़िस्मत की बात कि दुकान की सब अफ़ीम खत्म हो जाय लेकिन क्या मुरारी अपने काम में चूक सकता है? एक तोला अलग निकाल कर रख ही तो ली। (मेज़ के ड्राअर में से अफ़ीम निकालता है।) यह है! मैं ग्रेजुएट हूँ। पिता जी के कहने से मैं अपने 'कल्चर' को 'किल' नहीं कर सकता। 'मैरिज- - इज़ एन ईवेन्ट इन लाइफ।' यह गुड़ियों की शादी नहीं है। वे दिन गए जब रामदीन की शादी हुई थी। (सोचता है।) 'इट इज़ बैटर टु किल वन् सैल्फ देन टु किल द सोल।' बहुत 'रिवोल्ट' किया, लेकिन कुछ नहीं। अब सुबह लोग देखेंगे कि मुरारी अपने विचारों का कितना पक्का है। मेरी लाश की शादी करेंगे उसी अनकल्चर्ड लड़की के साथ। ओफ, कितना दर्द है। (अपनी माँ की फोटो की ओर देखकर) माँ, तुम तो दुनियाँ में नहीं हो, नहीं तो मुमकिन है कि अपने मुरारी को बचा सकतीं, अच्छा तो मैं भी सुबह तक तुम्हारे पास पहुँचता हूँ। तो अब..... (सोचता है।) खा जाऊँ? (कुर्सी पर बैठ कर अफ़ीम की पुड़िया खोलता है। थोड़ी देर सोचता है।) नहीं, बेंच पर लेटकर खाना अच्छा होगा। लोग समझेंगे कि मैं सो रहा हूँ। जगाने की कोशिश करेंगे। मज़ा आयेगा। लेकिन मुझे क्या! (बेंच पर लेटता है और गोली हाथ में ऊपर उठाता है।) मुरारी, तुम भी अपने विचारों के कितने पक्के हो! अपने सिद्धांतों के लिए ज़िंदगी को ठोकर मार दी। अब खा जाऊँ? वन् ... टू (उठकर) अरे। मैंने पत्र तो लिखा ही नहीं। मेरे मरने के बाद मुमकिन है पुलिसवाले बाबू जी को तंग करें....। करने दो, मुझे भी तो उन्होंने तंग किया है। (सोचकर) लेकिन नहीं, मरने के बाद भी क्या दुश्मनी! अच्छा लिख दूँ (अफ़ीम की गोली को मेज़ पर रखकर बैठता है और पत्र लिखते हुए पढ़ता है।) 'बाबूजी, आप एक

गँवार लड़की से मेरी शादी करने जा रहे हैं। मैंने बहुत विरोध किया लेकिन आप अपना इरादा नहीं बदल रहें हैं। मैं अपने सिद्धांतों की हत्या नहीं कर सकता, अपनी ही हत्या कर रहा हूँ। आपका आदेश तो स्वीकार नहीं कर सका, आप की अफ़ीम अवश्य स्वीकार कर रहा हूँ। क्षमा कीजिए। मुरारी मोहन।' बस, ठीक है। इसी टेबुल पर लेटर छोड़ दूँ। अब चलूँ अपना काम करूँ? (अफ़ीम की गोली मेज़ पर से उठाता है। उसकी ओर देखते हुए) मेरी अमृत की गोली अफ़ीम! ए स्कारलेट फ़ेयरी ऑफ ड्रीम्स! तेरे व्यापार ने विदेशों में धन वरसा दिया है। आज तेरा यह व्यापार मुझ पर मौत बरसा दे। होमर ने तेरी तारीफ की है। ट्रॉय की सुंदरी हेलेन ने मेनीलास की शराब में तुझे ही तो मिलाया था। अब तू मेरे खून से मिल जा। बस, दुनिया। तुझे मेरा आखिरी सलाम! आगे से प्रेम की कीमत समझ। चलूँ...? (हाथ उठाकर) चियरियो! (बेंच पर लेट जाता है, खटका होता है। मुरारी चौंक कर उठता है।) कौन? (कोने की ओर, देखता हुआ) ये चूहे शैतान किसी को मरने भी नहीं देते। ये क्या समझे कि स्यूसाइड कितनी सीरियस चीज़ है। अच्छा शांत! मुरारी अब जा रहा है। (फिर लेट जाता है) वन्...टू... (सोचकर) क्या मैं कुछ डर रहा हूँ? डर रहा हूँ? लेकिन मुझे मरना ही होगा। मुझे मरना ही होगा। दरवाज़े पर खट्खट् की आवाज़ होती है। (मुरारी उठकर) कौन है? रामदीन? (फिर खट्खट् की आवाज़) खोलना ही पड़ेगा। (अफ़ीम की गोली और खत उठाकर मेज़ की दराज़ में रखता है।) ठहर। (मुरारी दरवाज़ा खोलता है। आश्चर्य से) अच्छा, आप कौन! आइए।

(एक अठारह वर्षीया लड़की का प्रवेश। नाम है विश्व मोहिनी। अस्त-व्यस्त वेशभूषा जैसे - दौड़कर आ रही है। देखने में अत्यन्त सुंदर। बाल कुछ बिखर कर सामने आ गये हैं। सिर से साड़ी सरक गई है। वस्त्रों में कालेज की 'ध्वनि' है। उद्भ्रान्त सी है।)

मुरारी मोहन : आप कौन हैं?

विश्वमोहिनी : लाला सीताराम जी कहाँ हैं?

मुरारी मोहन : बाहर गए हुए हैं!

विश्वमोहिनी : बाहर गए हुए हैं? (सोचते हुए कुछ धीरे) अच्छा है, वे नहीं हैं!

मुरारी मोहन : (दुहराते हुए) अच्छा है, वे नहीं हैं? क्या मतलब?

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. **मुरारी मोहन शादी क्यों नहीं करना चाहता है?**
5. **मुरारी मोहन ने अफ़ीम खाने का विचार क्यों किया?**
6. **विश्वमोहिनी कौन है? वह सीताराम जी की दुकान पर क्यों आई है?**

विश्वमोहिनी : कुछ नहीं।

मुरारी मोहन : किस कार्य से आई हुई हैं?

विश्वमोहिनी : मुझे कुछ अफ़ीम चाहिए।

मुरारी मोहन : आपको? क्यों?

विश्वमोहिनी : ज़रूरत है। बहुत ज़रूरत है।

मुरारी मोहन : दुःख है, सारी अफ़ीम ख़त्म हो गई। बाबूजी उसी के लिए गाजीपुर गए हुए हैं।

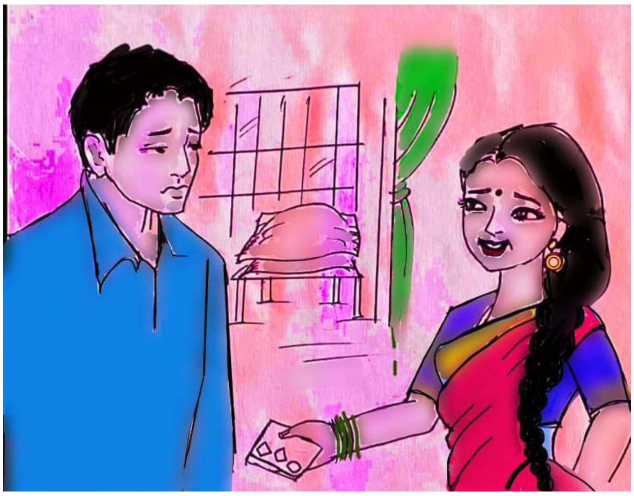

विश्वमोहिनी : कब तक लौटकर आएँगे?

मुरारी मोहन : परसों।

विश्वमोहिनी : परसों? बहुत देर हो जायेगी? (अनुनय के स्वरों में) थोड़ी भी नहीं है? कुछ तो जरूर होगी। मुझे बहुत जरूरत हैं।

मुरारी मोहन : इस समय? आधी रात को?

विश्वमोहिनी : हाँ, मेरी माताजी बीमार है। अफ़ीम खाती हैं। उनकी सारी अफ़ीम ख़त्म हो गई है। उन्हें नींद नहीं आ रही है। नींद न आने से उनकी तबीयत और भी ख़राब हो जायेगी।

मुरारी मोहन : मुझे बहुत दुःख है, लेकिन अफ़ीम तो नहीं है।

विश्वमोहिनी : (प्रार्थना से) देखिए, आपकी मुझ पर बड़ी कृपा होगी यदि आप खोज कर थोड़ी सी दे देंगे। इतनी बड़ी दुकान में क्या थोड़ी सी भी अफ़ीम न होगी?

मुरारी मोहन : (सोचते हुए) अच्छा, बैठिए खोजता हूँ। (मेज़ की दराज़ खोलता है, दराज़ की ओर देखते हुए) आपका परिचय?

विश्वमोहिनी : (कुर्सी पर बैठते हुए) परिचय और अफ़ीम से क्या संबंध?

मुरारी मोहन : आपका नाम लिखना होगा। अफ़ीम देते वक्त नाम लिखना होता है।

विश्वमोहिनी : अच्छा, नाम लिखना होगा? (कुछ ठहर कर) तो फिर मुझे नहीं चाहिए।

मुरारी मोहन : इसमें डरने की क्या बात है? अरे, आप तो अपनी माताजी के लिए ले जा रही हैं। (दराज़ बंद करता है।)

विश्वमोहिनी : (सँभल कर) हाँ, हाँ, मैं उन्हीं के लिए ले जा रही हूँ। लेकिन रहने दीजिए, मैं फिर मँगवा लूँगी।

मुरारी मोहन : लेकिन आप तो कह रही हैं कि आपकी माता जी को अभी अफ़ीम चाहिए। बिना इसके उन्हें नींद ही न आयेगी।

विश्वमोहिनी : हाँ, नींद नहीं आयेगी। खैर, लिख लीजिए मेरा नाम। (धीरे से) फिर मुझे चिंता किस बात की?

मुरारी मोहन : क्या कहा आपने?

विश्वमोहिनी : कुछ नहीं।

मुरारी मोहन : क्या नाम है आपका?

विश्वमोहिनी : विश्वमोहिनी।

मुरारी मोहन : (एक काग़ज़ पर लिखते हुए) नाम तो बहुत सुंदर है! क्या आप पढ़ती हैं?

विश्वमोहिनी : जी हाँ, एनी बेसेंट कॉलेज में सेकंड ईयर में पढ़ती हूँ।

मुरारी मोहन : (लिखता है।) अच्छा, आपके पिताजी?

विश्वमोहिनी : कुछ और बतलाने की जरूरत नहीं है। आपके पिताजी मेरे पिताजी को अच्छी तरह जानते हैं। आप दीजिए अफ़ीम, मुझे जल्दी ही चाहिए। माँ की तबीयत खराब है। देर हो रही है।

मुरारी मोहन : अच्छा, तो कितनी चाहिए?

विश्वमोहिनी : इससे मालूम होता है कि अफ़ीम काफी है। यही एक तोला बहुत होगी। .... हाँ, एक तोला। (सोचती है।)

मुरारी मोहन : एक तोले का क्या कीजिएगा? (अलमारी खोलता है।)

विश्वमोहिनी : क्या एक तोले से कम में काम चल जायेगा?

मुरारी मोहन : आप की बातें कुछ समझ में नहीं आ रही हैं।

विश्वमोहिनी : अच्छा, तो एक तोला ही दे दीजिए।

मुरारी मोहन : शायद मेरे पास एक ही तोला है। मुझे भी उसकी कुछ ज़रूरत है। पर मालूम होता है 'यूअर नीड इज़ ग्रेटर देन माइन'। अच्छा तो लीजिए। (अलमारी से निकाल कर पुड़िया में एक गोली देता है। अलमारी बंद करता है।)

विश्वमोहिनी : (शीघ्रता से लेकर) धन्यवाद, एक ही तोला है? कितने की हुई?

मुरारी मोहन : यों ही ले लीजिए, आपसे कुछ न लूँगा।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. **मुरारी मोहन ने विश्वमोहिनी को अफ़ीम के बदले में क्या दिया और क्यों?**
8. **विश्वमोहिनी ने आत्महत्या करने का क्या कारण बताया?**

विश्वमोहिनी : नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

मुरारी मोहन : आपने रात में इतनी तकलीफ की है। फिर आपकी माँ की तबीयत खराब है, उनके लिए चाहिए। आप से कुछ न लूँगा।

विश्वमोहिनी : (टेबुल पर एक रुपया रखते हुए) मैं अपने ऊपर ऋण नहीं छोड़ सकती।

मुरारी मोहन : आप यह क्या कह रही हैं?

(विश्वमोहिनी एक क्षण में वह गोली खा लेती है। मुरारी हाथ से रोकने की व्यर्थ चेष्टा करता है। विश्वमोहिनी गिरना चाहती है। मुरारी सम्हाल कर बेंच पर लिटाता है। स्वयं पास की कुर्सी पर बैठ जाता है।)

मुरारी मोहन : (व्यग्रता से) यह क्या किया?

विश्वमोहिनी : (शिथिलता से) आत्महत्या!

मुरारी मोहन : अरे, तो मेरे यहाँ क्यों?

विश्वमोहिनी : (शांति से) आप पर कोई आँच न आएगी। मैंने पत्र लिख कर रख छोड़ा है। (एक पत्र निकाल कर देती है।) घर में मरने की जगह नहीं है। इतने लोग भरे हैं। चौबीस घण्टों का साथ। डाक्टर बुलवाकर वे लोग मुझे मरने न देते। इसलिए आपके यहाँ आना पड़ा।

मुरारी मोहन : मैं भी तो डाक्टर बुलवा सकता हूँ।

विश्वमोहिनी : ओह, ईश्वर के लिए - मेरे लिए - मत बुलवाइए!

मुरारी मोहन : (लापरवाही से) न बुलवाऊँ? आपका यह पत्र पढ़ सकता हूँ? (विश्वमोहिनी आँखों से स्वीकृति देती है।)

मुरारी मोहन : (पत्र पढ़ता है।) 'पिता जी! धृष्टता क्षमा कीजिए। मेरे विवाह के लिए आपको अपनी सारी ज़मींदारी बेचनी पड़ती। 6000रू. आप कहाँ से लाते? आप तो भिखारी हो जाते । इससे अच्छा यही है कि मैं भगवान् की शरण में जाऊँ। अब आप निश्चिंत हो जाइए। आह, यदि मेरे बलिदान से हिंदू समाज की आँखें खुल सकती! आपकी, विश्वमोहनी।' ओह, (गहरी साँस लेकर) कितनी भयानक बात!

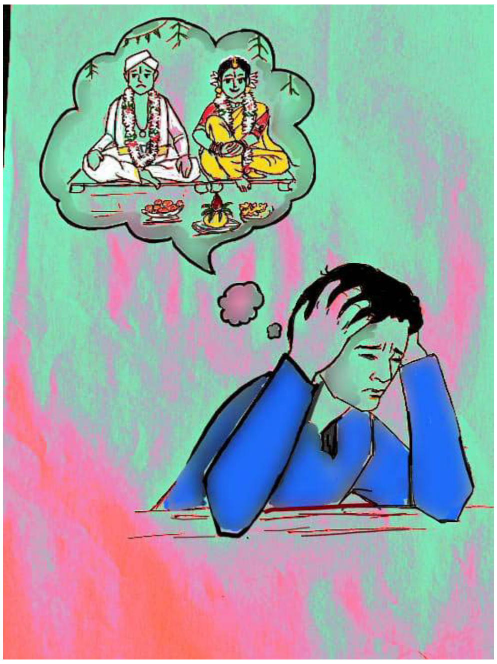

विश्वमोहिनी : क्षमा कीजिए। लेकिन मेरी मृत्यु की

आवश्यकता है। हिंदू-समाज बहुत भूखा है। (कुछ रुककर) ओह, आप कितने कृपालु हैं। मेरी अंतिम इच्छा आपने पूरी की। मेरी आपसे एक और प्रार्थना है।

मुरारी मोहन : बतलाइए।

विश्वमोहिनी : आपका विवाह हो गया?

मुरारी मोहन : जी नहीं।

विश्वमोहिनी : तो सुनिए, जब आप विवाह करें तो अपने विवाह में दहेज़ का एक पैसा न लें। किसी बालिका के पिता को भिखारी न बनावें। आप मेरी प्रार्थना मानेंगे? मेरी अंतिम प्रार्थना मानेंगे?

मुरारी मोहन : मानूँगा, जरूर मानूँगा।

विश्वमोहिनी : ओह, आप कितने अच्छे हैं! मैं अपने प्रथम और अंतिम मित्र का नाम जान सकती हूँ?

मुरारी मोहन : धन्यवाद। मेरा नाम मुरारी मोहन है।

विश्वमोहिनी : कितना अच्छा नाम है। मुरारी मोहन ...मुरारी मोहन..... विवाह में एक पैसा न लेना, मुरारी मोहन!

मुरारी मोहन : लेकिन मैं विवाह करना ही नहीं चाहता।

विश्वमोहिनी : क्यों?

मुरारी मोहन : (सोचता है।) जब आपने अपना सारा रहस्य मेरे सामने खोल दिया है तब अपनी बात कहने में मुझे भी क्या संकोच? देखिए, पिताजी मेरा विवाह एक बेपढ़ी और गँवार लड़की से करना चाहते हैं।

विश्वमोहिनी : अपने पिताजी को आप समझा नहीं सकते?

मुरारी मोहन : पिताजी समझना ही नहीं चाहते। इसीसे मैं भी आज ही- अभी ही- आत्महत्या करने जा रहा था। इसी बेंच पर जिस पर आप लेटी हैं।

विश्वमोहिनी : (चौंककर) तो मैं....?

मुरारी मोहन : (बीच ही में) मैं तो मरने जा ही रहा था कि आप आ गईं।

विश्वमोहिनी : आत्म-हत्या न करना मुरारी मोहन! मैं ही अकेली काफी हूँ। (कुछ रुक कर) लेकिन अफ़ीम, अफ़ीम का कुछ असर मुझे मालूम नहीं पड़ रहा अभी तक?

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

9. **मुरारी मोहन ने विश्व मेहिनी से स्वयं के बारे में क्या बताया?**
10. **मुरारी मोहन ने चौकीदार से क्या कहा?**

मुरारी मोहन : तो जल्दी क्या है?

विश्वमोहिनी : मैं जल्दी मरना चाहती हूँ। अफ़ीम का असर क्यों नहीं हो रहा?

मुरारी मोहन : न होने दीजिए।

विश्वमोहिनी : अफ़ीम खाऊँ और उसका असर न हो?

मुरारी मोहन : (लापरवाही से) असर क्यों होगा? आपने अफ़ीम खाई ही कहाँ है?

विश्वमोहिनी : (चौंक कर) नहीं? अरे! तो क्या आपने मुझे अफ़ीम नहीं दी?

मुरारी मोहन : नहीं। मैं जानता था कि आप आत्महत्या करने जा रही हैं। मैं ऐसे को अफ़ीम क्यों देता? मैंने नहीं दी।

विश्वमोहिनी : (विस्फारित नेत्रों से) तो फिर क्या दिया? (उठकर बैठ जाती है।)

मुरारी मोहन : काली हर्रे की एक गोली। (अलमारी की ओर संकेत करता हुए क्रीड़ापूर्वक) बाबू जी की दवाओं की अलमारी से।

विश्वमोहिनी : (किंचित क्रोध से) आप बड़े वैसे हैं! आप मेरा अपमान करना चाहते है? मैं मरना ही चाहती हूँ। मुझे अफ़ीम चाहिए।

मुरारी मोहन : (जैसे बात सुनी ही नहीं) अफ़ीम के बदले हर्रे की गोली। ज़रा मेरी सूझ तो देखिए।

विश्वमोहिनी : रखिए अपने पास आप अपनी सूझ। इस समय शहर की सब दुकानें बंद हो गई हैं नहीं तो मैं आपकी अफ़ीम की परवाह भी न करती।

मुरारी मोहन : तो न करें।

विश्वमोहिनी : लेकिन मुझे अफ़ीम चाहिए।

मुरारी मोहन : (खड़े होकर) देखिए! सिर्फ एक तोला अफ़ीम बाकी है जो दराज़ में रखी हुई है। (दराज़ की ओर संकेत) अगर मैं वह आपको दे दूँगा तो फिर मैं ('मैं' पर ज़ोर) आत्महत्या किस चीज़ से करूँगा?

विश्वमोहिनी : आप? आत्महत्या नहीं कर सकते। मैं करूँगी।

मुरारी मोहन : नहीं, मैं करूँगा।

विश्वमोहिनी : यह हो ही नहीं सकता। आपकी परिस्थितियाँ सुधर सकती हैं, मेरी नहीं।

मुरारी मोहन : नहीं, आपकी परिस्थितयाँ सुधर सकती हैं, मेरी नहीं। उठाइए, अपना यह रूपया।

विश्वमोहिनी : नहीं, दीजिए मुझे अफ़ीम।

मुरारी मोहन : नहीं दूँगा।

विश्वमोहिनी : नहीं देंगे तो मैं .....

मुरारी मोहन : क्या करेंगी आप?

विश्वमोहिनी : (मुट्ठी बाँधते हुए विवशता से) ओह, मैं क्या करूँ? (उठकर दराज़ खोलना चाहती है।)

मुरारी मोहन : (रोकते हुए) मुझे माफ कीजिए। ज़रा आप अपने को संभालिए। 'हैव पेशेन्स गुड गर्ल।' सब मामला सुलझ जाएगा।

विश्वमोहिनी : कैसे? (बैठती है।) नहीं सुलझ सकता। संसार स्वार्थी है, पापी है। नहीं।

मुरारी मोहन : सारा संसार स्वार्थी नहीं है, पापी नहीं है। शांत हो देखिए। उठाइए, अपना यह रूपया।

विश्वमोहिनी : अच्छा, आप आत्महत्या तो न करेंगे?

मुरारी मोहन : तो क्या करूँ?

विश्वमोहिनी : मैं क्या जानूँ?

मुरारी मोहन : तो आप एक काम कर सकती हैं। आपके पिताजी मेरे पिताजी को जानते ही हैं, उनके द्वारा मेरे पिताजी से कहला दें कि अगर मैंने कभी शादी की तो मैं बिना दहेज के करूँगा। यदि ऐसा ना होगा तो इस समय तो नहीं उस समय अवश्य आत्महत्या कर लूँगा।

विश्वमोहिनी : अवश्य, मुझे विश्वास है कि मेरे पिताजी का कहना आपके पिताजी जरूर मान जाएँगे, नहीं तो उनको ऐसी घटनाएँ देखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुरारी मोहन : अच्छा तो उठा लीजिए यह रूपया। हर्रे की गोली की क्या कीमत?

विश्वमोहिनी : (रूपया उठाकर) अच्छा लीजिए। (सोचती है।) अच्छा यह बतलाइए कि आपको यह कैसे मालूम हुआ कि मैं आत्महत्या करने के लिए अफ़ीम ले रही हूँ। मैंने तो अपनी माँ की बीमारी की ही बात कही थी।

मुरारी मोहन : मैं जानता था। आपकी उखड़ी-उखड़ी-सी बातें। नाम देने से इन्कार करना। वग़ैरह, वग़ैरह। कुछ इस ढंग से आपने कहा कि मुझे शक हो गया। अफ़ीम खाने के लिए अनुभव की जरूरत है। कच्चा आदमी खा ही नहीं सकता, मैं जानता हूँ। मैंने आपको हर्रे की गोली दे दी, आपने ले ली। अफ़ीम और हर्रे में कोई तमीज़ ही नहीं।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

11. चौकीदार ने मुरारी मोहन से अफ़ीम क्यों माँगी?
12. मुरारी मोहन ने ऐसा क्यों कहा कि उसे अफ़ीम की कीमत मिल गई है?

विश्वमोहिनी : और आपको वक्त पर हर्रे की गोली मिल भी गई!

मुरारी मोहन : मिलती क्यों न? आत्महत्या करने वालों से कभी-कभी ईश्वर भी डर जाता है। (हास्य) (चौकीदार की आवाज सड़क पर होती है - जागते रहो।)

मुरारी मोहन : चौकीदार कह रहा है - जागते रहो। और कितनी देर जागते रहें? ग्यारह तो बज गए होंगे।

विश्वमोहिनी : जीवन भर -

मुरारी मोहन : जीवन! कितना बड़ा जीवन! दुःख दर्द से भरा हुआ। पढ़ने की चिंता, कमाने की चिंता, स्त्री की चिंता, प्रेम की चिंता (चौंककर) ओह, मैं कहाँ की बात ले बैठा। हाँ, मैं आपको मकान भिजवा दूँ?

विश्वमोहिनी : चली जाऊँगी! नौकरानी को बाहर बरामदे में छोड़ आई हूँ।

मुरारी मोहन : शायद इसलिए कि आपकी आत्महत्या की खबर लेकर घर जाती।

विश्वमोहिनी : हाँ, लेकिन जैसा मैंने कहा - आप पर आँच न आती। उसकी गवाही और मेरा पत्र आपको निरपराध ही साबित करते।

मुरारी मोहन : तो क्या आपकी नौकरानी को मालूम था कि आप आत्महत्या करने जा रही हैं?

विश्वमोहिनी : बिलकुल नहीं। लेकिन वह यह कह सकती है कि मैं यहाँ अपने मन से आई थी। आप तो निरपराध ही रहते। यही साबित होता।

मुरारी मोहन : धन्यवाद। अब क्या साबित होगा?

विश्वमोहिनी : यही आप इतने कृपालु हैं। ...

मुरारी मोहन : (बीच ही में) कि आधी रात तक किसी को रोक सकता हूँ, अच्छा ठहरिए। मैं इन्तज़ाम करता हूँ। (पुकारता है।) चौकीदार!

चौकीदार : (बाहर से) आया हुज़ूर!

विश्वमोहिनी : चौकीदार को क्यों पुकार रहे हैं।

मुरारी मोहन : आपको गिरफ्तार करने के लिए, पुलिस में ख़बर भेजना है। आप आत्महत्या करना चाहती थीं।

विश्वमोहिनी : बुलवाइए पुलिस को। मैं भी आपको गिरफ़्तार करा दूँगी। आप भी आत्महत्या करना चाहते थे। अफ़ीम आपके पास है या मेरे पास!

मुरारी मोहन : मेरी तो अफ़ीम की दुकान ही है। साइनबोर्ड देख लीजिए (साइनबोर्ड की तरफ इशारा करता है।) 'लाला सीताराम अफ़ीम के व्यापारी।' (चौकीदार का प्रवेश।)

चौकीदार : (सलाम करता है।) कहिए हुज़ूर!

मुरारी मोहन : जोखू! पहरा देने के लिए तुम आ गए?

चौकीदार : हाँ, हुज़ूर। ग्यारह बज गए।

मुरारी मोहन : देखो, इन्हें इनके घर पहुँचा दो। ये अपना घर बतला देंगी। बाहर बरामदे में इनकी नौकरानी होगी। उसे भी लेते जाना। आज दावत में कुछ देर हो गई।

चौकीदार : बहुत अच्छा, हुज़ूर! (सलाम करता है।)

विश्वमोहिनी : मैं खुद चली जाऊँगी।

मुरारी मोहन : ओ, मुझे ख़ुद साथ चलना चाहिए।

विश्वमोहिनी : (लज्जित हो) मेरा मकान थोड़ी ही दूर है। आपको ज़्यादा तक़लीफ न होगी।

मुरारी मोहन : कुछ तकलीफों में आराम ही मिलता है। जोखू! तुम जाओ।

चौकीदार : हूज़ूर! एक बात है।

मुरारी मोहन : क्या?

चौकीदार : हुज़ूर! पहरा देते देते थक जाता हूँ। कुछ अफ़ीम हो तो मिल जाय।

मुरारी मोहन : कितनी चाहिए?

चौकीदार : हुज़ूर जितनी दे दें।

मुरारी मोहन : एक तोला भर है।

चौकीदार : (खुश होकर) क्या कहना हुज़ूर! एक हफ़्ते तक चंगा हो जाऊँ।

मुरारी मोहन : (मेज़ की दराज़ खोल अफ़ीम निकाल कर देते हुए) अच्छा लो, होशियारी से पहरा देना।

चौकीदार : (सलाम करता है।) अब हुज़ूर मैं अकेला सारे शहर का पहरा दे सकता हूँ। (बाहर जाता है।)

विश्वमोहिनी : इसका नाम नहीं लिखा?

मुरारी मोहन : दुकान का पहरेदार है। जाना-पहचाना हुआ आदमी, फिर नाम तो बड़े आदमियों के लिखे जाते हैं।

विश्वमोहिनी : क्योंकि वे ही ज्यादातर आत्महत्या करने की बात सोचते हैं।

मुरारी मोहन : (लज्जित होकर) जाने दीजिए, इन बातों को। (गहरी साँस लेकर) चलो, पीछा छूटा अफ़ीम से। छोटी-सी चीज़, पर कितना बड़ा असर? सिर्फ, एक तोला अफ़ीम!

विश्वमोहिनी : (मुस्कुराकर) और उसकी भी क़ीमत नहीं मिली।

मुरारी मोहन : मिली न! बहुत मिली, आप मिल गईं?

(विश्वमोहिनी प्रसन्नता से लज्जा मिला देती है। दोनों जाने को प्रस्तुत हैं। परदा गिरता है।)

सारांश : प्रस्तुत एकांकी सामाजिक विसंगतियों और शाश्वत जीवन मूल्यों पर आधारित है। सीताराम, मुरारी मोहन, विश्वमोहिनी और रामदीन इस एकांकी के प्रमुख पात्र हैं। सीताराम जी मुरारी मोहन के पिता हैं जो अफ़ीम के व्यापारी हैं। इनके पास अफ़ीम बेचने का लाइसेंस है। सीताराम जी कुछ लालची प्रवृत्ति के इंसान हैं। वे अपने पुत्र का विवाह अनपढ़ लड़की से कराना चाहते हैं। मुरारीमोहन यह विवाह नहीं करना चाहता है क्योंकि वह एक पढ़ा लिखा ग्रेजुएट लड़का है। उसका मानना है कि उसका विवाह किसी पढ़ी-लिखी लड़की से होना चाहिए। सीताराम जी कारोबार के सिलसिले में जब शहर से बाहर जाते हैं तो मुरारी मोहन उनके पीछे से आत्महत्या का विचार करता है। वह सीताराम जी के लौटने से पहले ही अफ़ीम खाकर आत्महत्या करना चाहता है। नौकर रामदीन से वह अफ़ीम के बारे में पूछता है तो रामदीन दुकान में बची हुई अफ़ीम उसे दे देता है जो एक तोला भर होती है। मुरारी मोहन एक तोले अफ़ीम को खाकर आत्महत्या करना चाहता है। जैसे ही वह अफ़ीम खाने लगता है तभी वहाँ पर विश्वमोहिनी नामक एक युवती का प्रवेश होता है। विश्वमोहिनी पढ़ी-लिखी युवती है। वह मुरारीमोहन से अफ़ीम देने के लिए कहती है। मुरारीमोहन उससे पूछता है कि उसे अफ़ीम क्यों चाहिए? मुरारीमोहन के कारण पूछने पर वह कहती है कि उसकी माँ बीमार है और अपनी माँ के लिए उसे अफ़ीम चाहिए। उसकी बातों से वह समझ जाता है कि वह युवती झूठ बोल रही है। अफ़ीम न देकर वह उसे हर्रे की गोली दे देता है। गोली खाने के बाद विश्वमोहिनी समझती है कि वह अब मरने वाली है। मुरारीमोहन के पूछने पर वह उसे सच बता देती है कि उसके पिता के पास दहेज देने के लिए पैसे नहीं है इसीलिए वह अफ़ीम खाकर आत्महत्या करना चाहती है। मुरारीमोहन भी उसे अपने बारे में बताता है कि वह भी विवाह नहीं करना चाहता है क्योंकि उसके पिता उसका विवाह एक अनपढ़ लड़की से कराना चाहते हैं। मोहिनी से सब कुछ जान लेने के बाद वह उसे बता देता है कि उसने उसे अफ़ीम की गोली दी ही नहीं थी। उसने तो उसे हर्रे की गोली दी थी। दोनों के बीच जो वार्तालाप होता है उससे मुरारी को लगता है कि वह उस युवती से विवाह कर सकता है। जब विश्वमोहिनी उससे गोली की कीमत के बारे में पूछती है तो वह कहता है कि कीमत तो मुझे मिल गई है, अर्थात इस वाक्य से एकांकी में दोनों के मिलन की ओर संकेत किया गया है। अंत में दोनों आत्महत्या का विचार त्याग देते हैं और मुरारीमोहन अफ़ीम की पुड़िया उठाकर चौकीदार को दे देता है। इस प्रकार रामकुमार वर्मा जी ने प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति पर प्रहार तो किया है साथ ही साथ शिक्षित युवा वर्ग की मानसिकता का भी सजीव चित्रण किया है। उन्होंने युवा वर्ग में व्याप्त आत्महत्या की प्रवृत्ति के उन्मूलन का भी प्रयास किया है।

नए शब्द

1. दाहिनी = दायाँ, दाहिने हाथ की ओर
2. नम्रता = मृदुता, विनम्र होने का भाव, विनम्रता
3. कारबार = कारोबार, व्यवसाय
4. अफ़ीम = एक तरह का कटु एवं मादक द्रव्य
5. परबस्ती = पालन, परवरिश
6. मेहरिया = पत्नी
7. हसरत = कामना
8. गँवार = गाँव का रहने वाला, देहाती, अनाड़ी।
9. उद्भ्रांत = भ्रम में पड़ा हुआ
10. धृष्टता = निर्लज्जता, ढिठाई, उद्दंडता

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. मेरी शादी .... शादी होगी! किसी जंगली जानवर से, अब मैं सहन नहीं कर सकता। बाबूजी सोचते क्यों नहीं कि हम लोगों के पास भी दिल होता है।
2. जब आप विवाह करें तो अपने विवाह में दहेज का एक पैसा ना लें। किसी बालिका के पिता को भिखारी न बनाएँ।

(आ) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

दहेज प्रथा का उद्भव कब और कहाँ हुआ यह कह पाना असंभव है। विश्व में विभिन्न सभ्यताओं में दहेज लेने और देने के पुख्ता प्रमाण मिलते हैं। इससे यह तो स्पष्ट होता है कि दहेज का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। दहेज प्रथा की बीमारी की जड़ एक तो काला धन है दूसरे मनुष्य की लोभ की दुष्प्रवृत्ति इस कार्य को और भी प्रेरित करती है। हमारी सरकारों द्वारा लड़कियों के उत्थान व विकास के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही हैं। जिनमें शिक्षा, रोजगार सहित विवाह उपरांत मदद भी शामिल है। यह सब इसलिए ताकि बेटियों के परिवारों को बेटियाँ बोझ न लगें और लड़कियाँ आत्मनिर्भर हो सकें। दहेज लेना और देना तो कानूनन अपराध है ही। सरकार ने भी दहेज प्रथा के विरुद्ध कानून बना दिया है। आज इस प्रथा के विरोध में कई जनजागृति अभियान चलाए जा रहे हैं। लड़कियाँ आज शिक्षित और आत्मनिर्भर होने के कारण स्वयं दहेज लेने वाले परिवार को ठुकरा रही हैं। लड़का और लड़की की समान विचारधारा के

होने के कारण समाज में दहेज के लिए कोई स्थान ही नहीं बचता है इसीलिए आने वाले समय में इस प्रथा का धीरे-धीरे समूल नाश हो ही जाएगा।

प्रश्नः

1. गद्यांश का मुख्य विषय क्या है?
2. दहेज प्रथा में वृद्धि होने के क्या कारण हैं?
3. लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या प्रयास किए जा रहे हैं?
4. दहेज लेने वाले परिवारों को लड़कियाँ क्यों ठुकरा रही हैं?
5. लड़का और लड़की की समान विचारधारा का भविष्य में कैसा प्रभाव पड़ सकता है?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. रामकुमार वर्मा जी का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
2. एकांकी का संदेश लिखिए।
3. एक तोले अफ़ीम की कीमत एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. सीताराम, मुरारीमोहन और विश्वमोहिनी के स्वभाव की तुलना कीजिए।
2. एकांकी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

1. पूर्ण	2. मुमकिन	3. विदेश	4. प्रेम	5. सुंदर
6. अंतिम	7. स्वार्थ	8. शांत	9. अपराध	10. स्वीकार

(आ) पाठ में आए उर्दू और अंग्रेज़ी शब्दों को ढूंढकर लिखिए।

(इ) निम्नलिखित क्रिया विशेषण शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. बाहर 2. प्रतिदिन 3. बहुत 4. धीरे-धीरे 5. आजकल

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'दहेज प्रथा एक अभिशाप' विषय पर निबंध लिखिए।
2. अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आप क्या प्रयास करेंगे? अपने शब्दों में लिखिए।

5. प्राकृतिक आपदा – प्रबंधन

बोध-प्रतिक्रिया

शिक्षार्थी...

- साक्षात्कार पढ़ेंगे, समझेंगे और चर्चा करेंगे।
- साक्षात्कार विधा के बारे में अपने शब्दों में बताएंगे।
- विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और उनके प्रबंधन के बारे में चर्चा करेंगे, अपनी राय बताएंगे।
- पाठ की पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करेंगे।
- पठित, अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे।

बोध-अभिव्यक्ति

- पाठ के उद्देश्य और विधा विशेष के बारे में लिखेंगे।
- विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारणों और परिणामों के बारे में लिखेंगे।
- प्राकृतिक आपदाओं से बचने के उपायों का विश्लेषण करेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखेंगे।

भाषा व्याकरण

- समानार्थी, विलोमार्थी, पुनरुक्त शब्द लिखेंगे।
- लिंग की पहचान करेंगे।

सृजन एवं जीवन कौशल

- विभिन्न विषयों पर पोस्टर तैयार करेंगे।
- प्राकृतिक आपदा प्रबंधन की आवश्यकता को समझेंगे और भविष्य में ऐसी किसी प्राकृतिक आपदा के समय अपना सहयोग देंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य साक्षात्कार विधा का परिचय प्रदान करते हुए साक्षात्कार लेखन और प्रश्नावली निर्माण करने की क्षमता का विकास करना है। विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारणों, परिणामों और उनके बचाव के उपायों का विश्लेषण करना है।

विधा विशेष

प्रस्तुत पाठ साक्षात्कार विधा में है। प्रश्नोत्तर के द्‌वारा की जाने वाली प्रक्रिया को ही साक्षात्कार कहते हैं। यह समाचार संकलन और एक दूसरे से संपर्क स्थापित करने का साधन है। साक्षात्कार में संलग्न दो व्यक्तियों में से एक को साक्षात्कार के उद्‌देश्य का ज्ञान रहता है। साक्षात्कार में किसी व्यक्ति विशेष के विचारों, अनुभवों तथा मनोवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसका लाभ यह भी है कि इसके माध्यम से विभिन्न सामाजिक विषयों एवं घटनाओं से संबंधित कारणों की खोज भी की जा सकती है।

प्रस्तावना

प्रस्तुत साक्षात्कार पाठ में प्राकृतिक आपदा प्रबंधन अधिकारी और छात्र के बीच बातचीत के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण, प्रकार, प्रभाव और प्रबंधन के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई है।

आज संपूर्ण विश्व प्राकृतिक आपदाओं की चपेट में है। कभी बाढ़, कभी तूफान, कभी भूस्खलन या कभी महामारी के रूप में आपदाएँ विश्व को प्रभावित करती रहती हैं। इन आपदाओं के आभास से ही मनुष्य भयभीत हो उठता है। जब ये आपदाएँ आती हैं तो जन-धन की बहुत हानि होती हैं। सारा विश्व आतंकित हो जाता है। कुछ समय पहले ऐसी ही एक प्राकृतिक आपदा का सामना कोरोना वायरस के रूप में हमने किया है। इसने पूरे विश्व पर अपना शिकंजा कस लिया है। इस पर नकेल कसने के लिए कई प्रयत्न किए गए हैं। इसी संदर्भ में आपदा प्रबंधन संस्थान की ओर से हैदराबाद शहर में एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में कई बड़े-बड़े अधिकारियों ने भाग लिया। इसमें कॉलेज के छात्रों को भी भाग लेने का अवसर दिया गया। सेमिनार के अंत में कॉलेज के एक छात्र ने आपदा प्रबंधन अधिकारी से जो साक्षात्कार लिया वह यहाँ पर प्रस्तुत है।

छात्र : नमस्कार महोदय!

प्रबंधन अधिकारी : नमस्कार! नमस्कार!

छात्र : महोदय, मैं 11वीं कक्षा का छात्र हूँ। मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने हैं। क्या मैं पूछ सकता हूँ?

प्रबंधन अधिकारी : हाँ ज़रूर! (आश्चर्यचकित होते हुए) परंतु आपको किसके बारे में मुझसे प्रश्न पूछने हैं?

छात्र : महोदय जी, आजकल प्राकृतिक आपदाओं ने दुनिया भर में तबाही मचा रखी हैं। आए दिन समाचारों से हमें यह पता चलता है कि फलाँ देश या फलाँ स्थान पर प्रकृति ने अपना प्रकोप ढा दिया है। इन्हीं प्राकृतिक आपदाओं के बारे में आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

प्रबंधन अधिकारी : (प्रसन्न होते हुए) मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप प्राकृतिक आपदाओं के बारे में जानने के लिए इतने जिज्ञासु हैं। पूछिए, क्या पूछना है?

छात्र : (गर्व और जिज्ञासु भाव के साथ प्रश्न पूछता है) महोदय जी, मुझे यह बताइए कि प्राकृतिक आपदा किसे कहते है?

प्रबंधन अधिकारी : ऐसी कोई भी प्राकृतिक घटना जिससे मनुष्य के जीवन या सामग्री को हानि पहुँचे

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. **मनुष्य कब भयभीत हो उठता है?**
2. **सेमिनार का मुख्य विषय क्या था?**
3. **छात्र क्या जानने के लिए जिज्ञासु था?**

प्राकृतिक आपदा कहलाती है। सदियों से प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्य के अस्तित्व के लिए चुनौती रही हैं।

छात्र : ये आपदाएँ कितने प्रकार की हो सकती हैं?

प्रबंधन अधिकारी : प्राकृतिक आपदाओं के कई प्रकार हैं-

1. जंगलों में आग
2. आंधी
3. बाढ़ और मूसलाधार बारिश
4. बिजली गिरना
5. सूखा (अकाल)
6. महामारी
7. हिमस्खलन, भूस्खलन
8. भूकंप
9. ज्वालामुखी
10. सुनामी
11. चक्रवाती तूफ़ान
12. बादल फटना (क्लाउड बर्स्ट)
13. ओलावृष्टि
14. हीट वेव

छात्र : महोदय! क्या आप कुछ प्राकृतिक आपदाओं के बारे में मुझे जानकारी प्रदान कर सकते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : हाँ, हाँ, क्यों नहीं। हम भारत और आस-पास की कुछ बड़ी प्राकृतिक आपदाओं की बात करें तो-

- 1999 में ओड़िसा में महाचक्रवात आया जिसमें 10 हजार से अधिक लोग मारे गए।
- 2001 का गुजरात भूकंप कोई नही भूल सकता है। इसमें 20 हज़ार से अधिक लोग

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

4. प्राकृतिक आपदा किसे कहते हैं?
5. प्राकृतिक आपदाओं के कुछ प्रकारों के बारे में बताइए।
6. कुछ प्राकृतिक आपदाओं के उदाहरण दीजिए।

मारे गए। यह भूकंप 26 जनवरी 2001 में आया था। इसमें अहमदाबाद, राजकोट, सूरत, गांधीनगर, कच्छ, जामनगर जैसे जिले पूरी तरह नष्ट हो गए।

- 2004 में हिंद महासागर में सुनामी आ गई। इसमें अंडमान निकोबार द्वीप समूह, श्रीलंका, इंडोनेशिया, दक्षिण भारत प्रभावित हुए। इसमें 2 लाख से अधिक लोगों की जान चली गई।
- 2014 में जम्मू कश्मीर में भीषण बाढ़ आई जिसमें 500 से अधिक लोग मारे गए।

छात्र : इसके लिए कौन जिम्मेदार हो सकता है?

प्रबंधन अधिकारी : ये आपदाएँ मनुष्य की मनमानी का ही नतीजा है। इन आपदाओं को 'ईश्वर का प्रकोप या गुस्सा' भी कहा जाता है। आज मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए वनों, जंगलों, मैदानों, पहाड़ों, खनिज पदार्थों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। उसी के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक आपदाएँ दिन ब दिन बढ़ रही हैं।

छात्र : सुनने मात्र से ही डर लग रहा है। इनसे बहुत नुकसान होता है, हैं ना। महोदय जी, इनसे कौन-कौन से नुकसान उठाने पड़ते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : इस तरह की आपदाएँ कुछ समय के लिए आती हैं पर बड़ी मात्रा में नुकसान करती हैं। ये मकानों, परिसरों, शहरों को नष्ट कर देती हैं। इनसे बड़ी मात्रा में जन-धन की हानि होती हैं। हर कोई इनके सामने बौना साबित होता है।

छात्र : (सोचते हुए) ये किस-किस पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं?

प्रबंधन अधिकारी : रेल, सड़क, हवाई मार्ग, संचार और संप्रेषण की सुविधाएँ बाधित हो जाती हैं। वन और वन्य जीव नष्ट हो जाते हैं। वातावरण प्रदूषित हो जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचता है। जिस किसी शहर या देश में भूकंप, बाढ़, सुनामी, तूफ़ान, भूस्खलन जैसी आपदा आती है वहाँ पर सब कुछ नष्ट हो जाता है।

छात्र : इनसे और क्या-क्या प्रभावित होता है?

प्रबंधन अधिकारी : (दुःख और परेशानी के मिले हुए भावों सहित कहने लगते हैं) लाखों लोग बेघर हो जाते हैं। फोन संपर्क टूट जाता है। जलवायु परिवर्तित हो जाती है। लाखों लोग

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

7. प्राकृतिक आपदाओं के लिए किसे जिम्मेदार माना जा सकता है? क्यों?
8. प्राकृतिक आपदाओं के कारण क्या हानियाँ होती हैं?
9. भूकंप किसे कहते हैं?

अचानक से काल के ग्रास में समा जाते हैं। प्राकृतिक आपदा हमेशा अपने पीछे भयंकर विनाश छोड़ जाती है। शहर को दोबारा बनाने में फिर से संघर्ष करना पड़ता है। करोड़ों रूपये फिर से खर्च करने पड़ते हैं। बाढ़, मूसलाधार बारिश, ओलावृष्टि जैसी आपदाएँ सभी फसलों को नष्ट कर देती हैं जिससे देश में अनाज की कमी हो जाती है। लोग भूखमरी का शिकार हो जाते हैं। महामारी जैसी प्राकृतिक आपदा आने से पूरे प्रदेश में बीमारी फ़ैल जाती है जिससे हज़ारों लोग मौत का शिकार हो जाते हैं।

छात्र : (सहमे हुए लहजे में) महोदय जी, मैंने सुना था कि इथोपिया में एक बार सूखा पड़ा था। जिसमें लाखों लोगों की मृत्यु हुई। क्या यह बात सच है?

प्रबंधन अधिकारी : हाँ, यह सच है। 1992-93 में इथोपिया में भयंकर सूखा पड़ा था जिसमें 30 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई थी। आज भी हर साल हमारे देश में राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश में सूखा पड़ता रहता है।

छात्र : (गहराई से सोचते हुए) महोदय, इन सब आपदाओं के बारे में विस्तार से जानने की इच्छा हो रही है। आपत्ति ना हो तो, क्या आप मुझे इनके बारे में विस्तार से बता सकते हैं।

प्रबंधन अधिकारी : ज़रूर बता सकता हूँ बेटा, परंतु इसके लिए बहुत समय चाहिए।

छात्र : (याचना के साथ) प्लीज़ सर, मुझे जानने की बहुत इच्छा है। आपका अधिक समय नहीं लूँगा। बस अपना थोड़ा सा कीमती समय मुझे दे दीजिए। आपकी बहुत कृपा होगी।

प्रबंधन अधिकारी : (कुछ सोचते हुए) ठीक है। तो जल्दी-जल्दी पूछो, जो पूछना है।

छात्र : (प्रसन्न होता हुआ) ठीक है सर, सबसे पहले मुझे आप यह बताइए कि भूकंप किसे कहते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : पृथ्वी की सतह के अचानक हिलने को भूकंप या भूचाल कहते हैं। पृथ्वी के अंदर की प्लेटों में हलचल होने और एक दूसरे से टकराने की वजह से भूकंप आते हैं। इससे धरती में दरारें पड़ जाती हैं और तेज़ झटके लगते हैं। भूकंप से घर, मकान,

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

10. बिजली गिरने पर अपना बचाव कैसे किया जा सकता है?
11. सुनामी का क्या प्रभाव पड़ता है?
12. जंगल में आग लगने के क्या कारण हैं?

इमारतें, पुल, सड़कें सब टूट जाते हैं। इमारतों में दबने से लाखों लोगों की मौत हो जाती हैं।

छात्र : महोदय, इससे बचने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : इससे बचने के उपाय को प्रबंधन कहते हैं। भूकंप प्रबंधन करने के 6 तरीके हैं:-

1. भूकंप आने पर इमारत, बिल्डिंग, मकान, ऑफिस से फ़ौरन बाहर खुले में आ जाएँ।
2. किसी भी इमारत के पास न खड़े हों।
3. किसी मेज़ के नीचे छिप जाएँ।
4. भूकंप के समय लिफ्ट का प्रयोग न करें। सीढ़ियों से नीचे उतरें।
5. जब तक भूकंप के झटके लगते रहे बाहर खुले स्थान में बैठे रहें।
6. अगर कार में है तो किसी खुली जगह पर कार पार्क कर दें। कार से बाहर निकल आएँ।

छात्र : महोदय जी, बिजली गिरना क्या है? कृपया इसके भी प्रबंधन बताइए।

प्रबंधन अधिकारी : बिजली बारिश के मौसम में आसमान से ज़मीन पर गिरती है। आसमान में विपरीत दिशा में जाते हुए बादल जब आपस में टकराते हैं तो घर्षण पैदा होता है। इससे ही बिजली पैदा होती है जो ज़मीन पर गिरती है। चूँकि आसमान में किसी तरह का कोई कंडक्टर नहीं होता है इसलिए बिजली कंडक्टर की तलाश करते करते ज़मीन पर पहुँच जाती है। बारिश के मौसम में बिजली के खम्भों के पास खड़ा नहीं होना चाहिए। मूसलधार बारिश होने पर बिजली गिरना आम बात है। हर साल सैकड़ों लोग बिजली गिरने से मर जाते हैं।

बिजली गिरने पर प्रबंधन:

1. जब भी मौसम खराब हो, आसमान में बिजली चमक रही हो कभी भी किसी पेड़ के नीचे न खड़े हो और कम से कम 5-6 मीटर दूर रहें। बिजली के खंभों से दूर रहें।
2. धातु की वस्तुओं से दूरी बनाए रखें। बिजली के उपकरणों से दूर रहें। मोबाइल फोन का इस्तेमाल न करें।
3. पहाड़ी की चोटी पर खड़े न हों।

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

13. **भूस्खलन और हिमस्खलन में क्या अंतर है?**
14. **महामारी किसे कहते हैं? इसका एक उदाहरण दीजिए।**
15. **ओलावृष्टि के बारे में बताइए।**

4. पानी में न नहायें। ऐसा करके आप बिजली से बच सकते हैं।
5. बिजली गिरते समय अगर आपके आस-पास कोई छुपने की जगह न हो तो किसी गड्ढे जैसी जगह पर घुस कर छुप जाएँ या सिर को नीचे करके, घुटनों को मोड़कर पंजों के सहारे नीचे बैठ जाएँ और अपने दोनों पैर की एडियों को जोड़ें और कानों को अंगुलियों से बंद कर दें।

छात्र : महोदय जी, आपने सुनामी, बाढ़ और चक्रवाती तूफ़ान का उल्लेख किया है। क्या ये सब एक ही हैं?

प्रबंधन अधिकारी : नहीं बेटा, इन तीनों में अंतर है। मैं तुम्हें इन तीनों की जानकारी दूँगा। बेटा, एक प्रकार के समुद्री तूफ़ान को सुनामी कहते हैं। सुनामी का अर्थ है- ''बंदरगाह के निकट की लहरें।'' समुद्र तल में हलचल, भूकंप, दरार, विस्थापन, प्लेट्स हिलने के कारण सुनामी की बेहद खतरनाक तरंगें उत्पन्न होती हैं। इन लहरों की गति 400 कि.मी. प्रति घंटा तक हो सकती है। लहरों की उँचाई 15 मीटर से भी अधिक हो सकती हैं। सुनामी के कारण धन-जन की भारी हानि होती है।

दिसंबर 2004 को हिंद महासागर में सुनामी के आने से भारत का दक्षिणी छोर ''इंदिरा पॉइंट'' नष्ट हो गया था।

सुनामी से बचाव के लिए प्रबंधन

प्रबंधन

1. सुनामी से बचाव के लिए एक जीवन रक्षा किट बना लें। इसमें खाना, पानी, फोन, दवाइयाँ, प्राथमिक उपचार किट रखें।
2. सुनामी आने से पहले अपने स्थान से बाहर निकलने की ड्रिल एक दो बार कर लें। आपके पास एक अच्छा रास्ता होना चाहिए जिससे आप फ़ौरन उस स्थान से सुरक्षित स्थान पर जा सकें।
3. आपके पास शहर का एक नक्शा होना चाहिए क्योंकि सुनामी आने पर हज़ारों की संख्या में लोग शहर से बाहर जाने लगते हैं।
4. सरकारी चेतावनी, मौसम विभाग की चेतावनी को आप ध्यानपूर्वक सुनते रहें। अधिकतर सुनामी भूकंप के बाद आती है।
5. यदि पशु अजीब व्यवहार करे, पक्षी स्थान छोड़कर जाने लगे तो यह सुनामी का संकेत हो सकता है।
6. सुनामी आने से पहले समुद्र का पानी कई मीटर पीछे चला जाता है, इस बात पर भी ध्यान देना बहुत आवश्यक है।

7. सुनामी से बचने के लिए समुद्र तट से दूर किसी स्थान पर चले जाएँ।

प्रबंधन अधिकारी : यह तो हुआ सुनामी के बारे में। बाढ़ के बारे में तो तुम जानते ही होंगे, फिर भी बता देता हूँ। जब किसी स्थान पर अचानक ढेर सारी वर्षा हो जाती है। नदी, तालाब, नाले सभी पानी से भर जाते हैं। जीवन अवरुद्ध हो जाता है। तो इस स्थिति को बाढ़ कहते हैं। बाढ़ आने पर निचले भागों में रहने वाले लोग अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। फसलों को बहुत नुकसान होता है। अधिक बाढ़ आ जाने से पशु-पक्षी पानी में डूबकर मर जाते हैं। लोगों का जीना मुश्किल हो जाता है। 2005 में मुंबई में भयानक बाढ़ आ गई जिसके कारण मुंबई में बहुत नुकसान हुआ।

बाढ़ प्रबंधन

प्रबंधन

1. बाढ़ से बचने के लिए किसी ऊँची सुरक्षित जगह पर चले जाएँ जहाँ पानी न हो।
2. अपने साथ में खाने-पीने का ज़रूरी सामान, दवाइयाँ, टार्च, पीने का पानी, रस्सी, चाकू, फोन जैसा ज़रूरी सामान ले लें।
3. घर में बिजली का मेन स्विच बंद कर दें।
4. घर की कीमती वस्तुएँ, कीमती कागजात को ऊपर वाली मंजिल में रख दें।
5. बहते बाढ़ के पानी में न चलें। इससे आप बह सकते हैं।
6. नीचे गिरे हुए बिजली के तार से दूर रहें। आपको करेंट लग सकता है।

प्रबंधन अधिकारी : बाढ़ के बारे में तो तुमने जान लिया है। अब मैं चक्रवाती तूफ़ान के बारे में बताऊँगा। हमारे देश में चक्रवाती तूफ़ान प्रायः बंगाल की खाड़ी में आते हैं। ये समुद्र की सतह पर निम्न वायु दाब के कारण उत्पन्न होते हैं। तेज़ हवाएँ बारिश के साथ गोलाकार रूप में दौड़ती हैं जो समुद्रतट पर जाकर भयंकर विनाश करती हैं। इनकी गति 280 किमी/घंटा से अधिक हो सकती है। देश में 1839 में कोरिंग चक्रवात आया तथा 1999 में ओड़िसा में 05B नाम का चक्रवात आया था। इसके कारण बहुत विनाश हुआ था।

चक्रवाती तूफान प्रबंधनः

1. चक्रवातीय तूफ़ान आने पर घर में ही रहें। घर से बाहर न निकलें।
2. सभी खिड़की दरवाजे बंद कर लें। पक्के मकान में ही रहें।
3. अपने पास बैटरी, टार्च, ईंधन, फोन, लालटेन, माचिस, खाने पीने का पानी पहले से रखें।

छात्र : अब मुझे तीनों में अंतर समझ में आ गया है। अब मैं जानना चाहता हूँ कि अकाल या सूखा पड़ना क्या है?

प्रबंधन अधिकारी : सूखा में किसी स्थान पर कई महीनों, सालों तक कोई वर्षा नहीं होती है, जिसके कारण भूजल का स्तर गिर जाता है। इससे कृषि बुरी तरह प्रभावित होती है। पालतू पशुओं, पक्षियों, मनुष्यों के लिए पेयजल का संकट हो जाता है जिसके कारण जानवर और मनुष्य मर जाते हैं। सूखे के कारण कुपोषण, भूखमरी, महामारी जैसी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।

सूखा प्रबंधनः

1. सूखे की समस्या से निटपने के लिए वर्षा के जल का संरक्षण टैंकों और प्राकृतिक जलाशयों में करें।
2. सागर के जल का अलवणीकरण करें।
3. अशुद्ध जल को पुनः शुद्ध करें। अपशिष्ट जल का प्रयोग घर की सफाई, सब्जियाँ धोने, बगीचे को पानी देने, कार या वाहन की सफाई के लिए करें।
4. सूखे की समस्या से बचने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ।

छात्र : महोदय जी मैंने कई बार जंगल में आग लगने के बारे में सुना है। यह आग कब और क्यों लगती है?

प्रबंधन अधिकारी : गर्मियों के मौसम में अक्सर जंगलों में आग लग जाती है। इसके पीछे मानवीय और प्राकृतिक कारण जिम्मेदार होते हैं। कई बार मज़दूर घास और सूखी पत्तियों में आग लगाकर छोड़ देते हैं जिससे आग पूरे जंगल में फ़ैल जाती है। कई बार सूरज की गर्म किरणों से सूखी पत्तियों में आग लग जाती हैं। उत्तराखंड राज्य में चीड़ के जंगलों में अक्सर आग लगती रहती है।

जंगल में आग लगने पर प्रबंधनः

1. जंगल में आग लगने पर वन विभाग के कर्मचारियों को तुरंत सूचित करें।
2. फौरन पुलिस को फोन करें।
3. किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाएँ।
4. फायर ब्रिगेड को फोन करें।

छात्र : हिमस्खलन किसे कहते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : पहाड़ों पर हिम (बर्फ़), चट्टान, पेड़ पौधे आदि के अचानक खिसकने की घटना को हिमस्खलन कहते हैं। बर्फ से ढके पहाड़ों पर इस तरह की प्राकृतिक आपदा अधिक होती है। यह बहुत विनाशकारी होता है। अपने मार्ग में आने वाले घरों, मकानों, पेड़-पौधों को तोड़ देता है। इसमें दबकर हर साल हज़ारों लोगों की जान

चली जाती है। यह सड़कों, पुलों, राजमार्गों को तबाह कर देता है। पहाड़ों को काटकर सड़कें बनाना, लगातार बारिश, भूकंप, ज़मीन में कंपन, अधिक बर्फ़बारी, डेल्टा में अधिक अवसाद का जमा होना- इन सभी कारणों की वजह से हिमस्खलन होता है।

हिमस्खलन पर आपदा प्रबंधनः

1. हिमस्खलन में गिरने वाली बर्फ़ को रोकने के लिए लोहे के तारों का जाल बनाकर पहाड़ों पर सड़कों की सुरक्षा की जा सकती है।
2. सॉफ्टवेयर द्वारा पहाड़ी जगहों में ऐसे स्थानों का पता लगा सकते हैं जहाँ हिमस्खलन आ सकता है।
3. पहाड़ों पर अधिक से अधिक पेड़ लगाकर, ढलानों को काटकर चबूतरा बनाकर, मज़बूत दीवार बनाकर हिमस्खलन को रोका जा सकता है।

छात्र : भूस्खलन किसे कहते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : यह एक भूवैज्ञानिक घटना है। भूस्खलन के अंतर्गत पहाड़ी, पत्थर, चट्टान, ज़मीन खिसकना, ढहना, गिरना, मिट्टी बहना जैसी घटनाएँ होती हैं। यह छोटी से बड़ी मात्रा में हो सकता है। छोटे भूस्खलन में छोटे-छोटे पत्थर नीचे की ओर गिरते हैं। बड़े भूस्खलन में पूरी की पूरी पहाड़ी ही नीचे गिर जाती है। इससे धन-जन की हानि होती है। यह भारी बारिश, भूकंप, धरातलीय हलचल, मानवीय कार्यों जैसे पहाड़ों पर पेड़ों की कटाई, चट्टानों को काटकर सड़क, घर बनाने, पानी के पाइपों में रिसाव से होता है।

भूस्खलन होने पर प्रबंधनः

1. भूस्खलन होने पर फ़ौरन उस स्थान से निकल जाएँ।
2. रेडियो, टीवी पर मौसम की जानकारी लेते रहें।
3. जिस स्थान पर ऊपर से चट्टान गिरने का खतरा हो वहाँ से दूर रहें।
4. हेलिकॉप्टर या बचाव दल का फोन नंबर हमेशा अपने पास रखें।

छात्र : ज्वालामुखी फटना क्या है और इसके कारण क्या हैं?

प्रबंधन अधिकारी : ज्वालामुखी में पृथ्वी के भीतर से गर्म लावा, राख, गैस का तीव्र विस्फोट होता है। यह प्रक्रिया धीरे भी हो सकती है और तीव्र भी। ज्वालामुखी का धुआँ बहुत ही हानिकारक होता है। विस्फोट होने पर यह 100 कि.मी. से अधिक के दायरे में आकाश में फ़ैल जाता है जिसके कारण हवाई जहाजों की उड़ानें रद्द करनी पड़ती

हैं। वर्ष 2018 में ग्वाटेमाला में ज्वालामुखी विस्फोट होने से अनेक लोग प्रभावित हुए थे।

ज्वालामुखी फटने पर आपदा प्रबंधनः

1. ज्वालामुखी फटने पर फ़ौरन घर का कीमती सामान अपने साथ लेकर सुरक्षित स्थान पर चले जाएँ।
2. अपने पालतू पशुओं को भी साथ ले जाएँ।
3. मौसम विभाग, स्थानीय रेडियो प्रसारण को सुनते रहें जिससे आपको नई जानकारी मिलती रहें।
4. स्थानीय मार्गों का एक नक्शा अपने पास रखें।
5. साथ में एक जीवन रक्षा किट भी साथ रखें जिसमें दवाइयाँ, टार्च, पीने का पानी, अन्य सामान हों। अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ रहें (अकेले न रहें)।
6. बचाव दल का नंबर अपने पास रखें।

छात्र : महामारी किसे कहते है?

प्रबंधन अधिकारी : किसी क्षेत्र विशेष में जब कोई बीमारी बड़े पैमाने पर फ़ैल जाती है तो उसे महामारी कहते हैं। यह संक्रमण के कारण (हवा, छूने, पानी) फैलती है। कई बार यह पूरे देश या विश्व में फ़ैल जाती है। 2009 में पूरे विश्व में एच'एन' इंफ्लूएंजा (स्वाइन फ्लू) की बीमारी फ़ैल गई थी। यह भारत में भी फ़ैल गई थी। भारत में स्वाइन फ्लू से अनेक लोग मारे गए और कई लोग बीमार हो गए। वर्ष 2019 में चीन से शुरू हुए नोवेल कोरोना वायरस (COVID) की वज़ह से दुनिया भर में लाखों लोग इन्फेक्टेड हो गए। इसके कारण भी हज़ारों लोगों की जान चली गई।

महामारी फैलने पर आपदा प्रबंधन :

1. महामारी (संक्रामक रोग) बरसात और ठंड के मौसम में अधिक होती हैं। दस्त, पेचिस, हैजा, मियादी बुखार, पीलिया, पोलियो जैसे रोग अशुद्ध पानी के सेवन से फैलते हैं। इसलिए साफ़ पानी पीएँ।
2. इनसे बचने के लिए ताज़ी कटी सब्जियों, फलों का सेवन करें।
3. रोज़ साबुन मलकर नहाएँ और खाना खाने के बाद-पहले अच्छे से हाथ धोएँ। नियमित रूप से नाख़ून काटें, दाढ़ी और बाल कटवाएँ।
4. किसी भी तरह की प्राकृतिक आपदा आने पर शांत रहें। अफवाहों पर ध्यान न दें। सरकारी आदेशों का पालन करें।

5. अपने पास पुलिस, अस्पताल, अग्निशमन सेवा, एम्बुलेंस, बचाव दल का फोन नंबर ज़रूर रखें।

6. परिचय पत्र, कागज़ात, ज़रूरी कागज़ अपने पास रखें।

छात्र : जी महोदय, कोरोना वायरस के आतंक को तो हम सबने देखा ही है। यह तो हम सब जानते हैं कि इससे बचने के लिए मास्क पहनना चाहिए, सेनेटाइज़र का प्रयोग करना चाहिए, भौतिक दूरी बनाए रखना चाहिए। महोदय जी, बताइए कि ओलावृष्टि क्या है?

प्रबंधन अधिकारी : आसमान में जब बादलों में मौजूद पानी की बूँदें अत्यधिक ठंडी होकर बर्फ़ के रूप में जमकर जमीन पर गिरती हैं तो उसे ओलावृष्टि या वर्षण प्राकृतिक आपदा कहते हैं। इसे आम भाषा में ओला गिरना भी कहा जाता है। ये अक्सर गर्मियों के मौसम में दोपहर के बाद गिरते हैं। ओलावृष्टि अक्सर तब होती है जब बादलों में गड़गड़ाहट होती है और बिजली बहुत अधिक चमकती है। ओलावृष्टि से सबसे अधिक नुकसान किसानों को होता है। अधिक ओलावृष्टि होने से फसलें बर्फ़ के गोलों से ढंक जाती हैं और नष्ट हो जाती हैं। यदि बर्फ़ के गोले बड़े हो तो मकान, खिड़की, कारों के शीशे तोड़ देते हैं। कुछ महीनों पहले हिमाचल प्रदेश में ओलावृष्टि होने से सेब, नाशपती की फसलें बर्बाद हो गयी थीं।

छात्र : बादल फटना किसे कहते हैं?

प्रबंधन अधिकारी : इस प्राकृतिक आपदा को मेघ विस्फोट भी कहते हैं। जब बादल अधिक मात्रा में पानी लेकर चलते हैं और उनके मार्ग में कोई बाधा अचानक आ जाती है तो बादल अचानक फट जाते हैं। ऐसा होने से उस स्थान पर करोड़ों लीटर पानी अचानक गिर जाता है। पानी की विशाल मात्रा मज़बूत पक्के मकानों, सड़कों, पुलों, इमारतों को ताश के पत्तों की तरह तोड़ देती है।

उत्तराखंड, केदारनाथ, बद्रीनाथ, जम्मू-कश्मीर, जैसे राज्यों में बादलों के मार्ग में हिमालय पर्वत, पहाड़ियाँ, गर्म हवा आ जाने के कारण बादल फटने की घटनाएँ होती रहती हैं। 2013 में उत्तराखंड में बादल फटने से धन-जन की भारी बर्बादी हुई।

छात्र : धन्यवाद महोदय जी, आपने विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के बारे में मुझे विस्तृत जानकारी दी है। इससे बचने के उपाय भी बताएँ हैं। भविष्य में यदि कभी ऐसी आपदा से सामना होता है तो हम अपने आप को बचा सकने में कामयाब हो सकते हैं।

सारांश : प्रस्तुत पाठ की विधा साक्षात्कार है। इस पाठ में आपदा प्रबंधन अधिकारी और एक छात्र के बीच होने वाली बातचीत को साक्षात्कार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आपदा प्रबंधन अधिकारी जी कोरोना वायरस विषय पर आयोजित सेमिनार में भाग लेने हैदराबाद आए हैं। इस सेमिनार में कॉलेज के छात्र भी आमंत्रित हैं। सेमिनार के अंत में कॉलेज के एक छात्र को प्राकृतिक आपदाओं के कारण, प्रभाव और प्रबंधन के विषय जानने की जिज्ञासा होती है। वह अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रबंधन अधिकारी से अनेक प्रश्न पूछता है। प्रबंधन अधिकारी बताते हैं कि मनुष्य के जीवन या सामग्री को हानि पहुँचाने वाली प्राकृतिक घटना को प्राकृतिक आपदा कहते हैं। ये प्राकृतिक आपदाएँ अनेक प्रकार की होती है। इनमें सुनामी, बाढ़, चक्रवाती तूफ़ान, अकाल, हिमस्खलन, भूकंप, ज्वालामुखी, महामारी, ओलावृष्टि आदि प्रमुख हैं। वे कहते हैं कि जब ये आपदाएँ आती हैं तो सारा विश्व आतंकित हो जाता है। इनके कारण बड़ी मात्रा में जन-धन की हानि होती है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अक्षम समझने लगता है। वातावरण प्रदूषित हो जाता है। वन और वन्य जीव नष्ट हो जाते हैं। रेल, सड़क, हवाई मार्ग, संचार और संप्रेषण की सुविधाएँ प्रभावित होती हैं। जन संपर्क टूट जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचता है। महामारी जैसी प्राकृतिक आपदा से पूरे विश्व में बीमारी फैल जाती है। हज़ारों, लाखों लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। बाढ़ और चक्रवाती तूफानों के कारण फसलें नष्ट हो जाती हैं। देश में अनाज की कमी हो जाती है। लोग भूखमरी का शिकार हो जाते हैं।

1999 में ओड़िसा में आने वाला महाचक्रवात, 2001 का गुजरात का भूकंप, 2004 में हिंद महासागर में आयी सुनामी, 1992-93 में इथोपिया में पड़ने वाला भयंकर सूखा, 2019 में विश्व में आतंक फैलाने वाला कोरोना वायरस प्राकृतिक आपदाओं के कुछ उदाहरण हैं। अधिकारी जी ने बताया कि ये आपदाएँ मनुष्य की मनमानी का नतीजा है। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए वनों, जंगलों, मैदानों, पहाड़ों, खनिज पदार्थों का अंधाधुँध दोहन कर रहा है। इसी के परिणामस्वरूप ये आपदाएँ दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं।

इन आपदाओं से बचने के लिए हमें समय-समय पर दी जाने वाली सरकारी सूचनाओं का पालन करना चाहिए। वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखना चाहिए। पेड़ों का रोपण करना चाहिए। आपातकालीन दूरभाषा नंबरों को अपने पास रखना चाहिए।

इस प्रकार प्रबंधन अधिकारी जी ने प्राकृतिक आपदाओं संबंधी जानकारी प्रदान कर छात्र की जिज्ञासा का समाधान किया।

नए शब्द

1.	जिज्ञासु	=	जानने की इच्छा रखने वाला
2.	अस्तित्व	=	मौजूदगी, होने का भाव
3.	भीषण	=	भयानक, भयंकर
4.	दोहन	=	शोषण
5.	बौना	=	छोटा
6.	सतह	=	वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार
7.	घर्षण	=	रगड़ने की क्रिया
8.	विस्थापन	=	स्थान परिवर्तन, निर्वासन
9.	चेतावनी	=	खतरे की पूर्व सूचना
10.	अपशिष्ट	=	अवांछित पदार्थ

अभ्यास-कार्य

I बोध-प्रतिक्रिया

(अ) निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. ये मनुष्य की मनमानी का ही नतीजा है। इन आपदाओं को 'ईश्वर का प्रकोप या गुस्सा' भी कहा जाता है।
2. कुछ समय पहले ऐसी ही एक प्राकृतिक आपदा का सामना कोरोना वायरस के रूप में हमने किया है। इसने पूरे विश्व पर अपना शिकंजा कस लिया है।

(आ) निम्नलिखित गद्यांश पढ़िए। दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रकृति ने हमें इतना कुछ दिया है कि हम सोच भी नहीं सकते हैं। इस धरती पर जीवन प्रकृति के कारण ही संभव है। ब्रह्माण्ड में और भी कई ग्रह हैं किंतु इस प्रकृति के बिना कहीं पर भी जीवन संभव नहीं है। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। धरती पर हर स्थान पर प्रकृति का रूप एक जैसा नहीं है। स्थान के अनुसार यह अपना रूप-रंग बदल लेती है। यह स्थान के अनुरूप ही हमें प्राकृतिक संसाधन भी उपलब्ध कराती है। वायु, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदियाँ, सरोवर, झरने, समुद्र, जंगल, पहाड़, खनिज आदि प्राकृतिक संसाधन हैं। प्रकृति से ही हमें हवा, पानी और भोजन उपलब्ध होता है। प्रकृति हमें बहुत कुछ देती है। प्रकृति की गोद में हमें सुकून मिलता है। हमारे पास प्रकृति को देने के लिए कुछ नहीं है। यदि हम प्रकृति के लिए कुछ कर सकते हैं तो हमें इसका संरक्षण करना चाहिए।

प्रश्नः

1. हमारे जीवन का आधार क्या है?
2. गद्यांश में आए कुछ प्राकृतिक संसाधनों के नाम लिखिए।
3. प्रकृति से हमें क्या-क्या मिलता है?
4. प्रकृति के लिए हमें क्या करना चाहिए?
5. गद्यांश का मुख्य विषय क्या है?

II बोध-अभिव्यक्ति

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-6 पंक्तियों में लिखिए।

1. प्राकृतिक आपदाओं के आने के क्या कारण हैं?
2. प्राकृतिक आपदाओं के लिए आप किसे जिम्मेदार मानते हैं और क्यों?
3. इस पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10-12 पंक्तियों में लिखिए।

1. प्राकृतिक आपदाओं का उल्लेख करते हुए किसी एक प्राकृतिक आपदा के संभावित प्रभावों का वर्णन कीजिए।
2. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III भाषा व्याकरण

(अ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी लिखिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. आपदा 2. सदी 3. निजी 4. अवरूद्ध

(आ) निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थक लिखिए।

1. निम्न 2. शुद्ध 3. प्राकृतिक 4. नियमित

(इ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानिए।

1. पानी 2. सड़क 3. घर 4. फ़सल

(ई) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए।

1. घटना 2. छात्र 3. सामग्री 4. इमारत

IV सृजन - जीवन कौशल

1. 'कोरोना वायरस से बचाव के उपाय' विषय पर एक पोस्टर तैयार कीजिए।
2. किसी प्राकृतिक आपदा के आने पर देशवासियों की सहायता के लिए आप किस प्रकार अपना योगदान देंगे?

इकाई-III ताई उपवाचक-पाठ

– विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

भाग-1

''ताऊजी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे?'' कहता हुआ एक पंचवर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा। बाबू साहब ने दोनों बाँहें फैलाकर कहा- ''हाँ बेटा, ला देंगे।'' उनके इतना कहते-कहते बालक उनके निकट आ गया। उन्होंने बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुख चूमकर बोले- ''क्या करेगा रेलगाड़ी?''

बालक बोला - ''उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे। हम भी जाएँगे, चुन्नी को भी ले जाएँगे। बाबूजी को नहीं ले जाएँगे। हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते। ताऊजी तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे।''

बाबू - ''और किसे ले जाएगा?''

बालक दम भर सोचकर बोला- ''बछ औल किछी को नहीं ले जाएँगे।''

पास ही बाबू रामजीदास की अर्धांगिनी बैठी थी। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा- ''और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?''

बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा। ताईजी उस समय कुछ चिढ़ी हुई सी बैठी थी। बालक को उनके मुख का वह भाव अच्छा न लगा। अतएव वह बोला- ''ताई को नहीं ले जाएँगे।''

ताई सुपारी काटती हुई बोली- ''अपने ताऊजी ही को ले जा, मेरे ऊपर दया रख।'' ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया। बाबू साहब ने फिर पूछा- ''ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?''

बालक - ''ताई हमें प्याल (प्यार), नहीं कलती।''

बाबू - ''जो प्यार करें तो ले जाएगा?''

बालक को इसमें कुछ संदेह था। ताई के भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वह प्यार करेंगी। इससे बालक मौन रहा।

बाबू साहब ने फिर पूछा- ''क्यों रे बोलता नहीं? ताई प्यार करें तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?''

बालक ने ताऊजी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया, परंतु मुख से कुछ नहीं कहा।

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले - ''लो, इसे प्यार कर लो तो तुम्हें ले जाएगा।'' परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुहलबाजी अच्छी न लगी। वह

तुनककर बोली- ''तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है।''

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोद में बैठाने की चेष्टा करते हुए बोले- ''प्यार नहीं करोगी, तो फिर रेल में नहीं बिठावेगा। क्यों रे मनोहर?''

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर में तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी। बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया। चूमकर-पुचकारकर चुप किया और तत्पश्चात उसे कुछ पैसा तथा रेलागड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भयपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले- ''तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है? बच्चे को ढकेल दिया। जो उसे चोट लग जाती तो?''

रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोली- ''लग जाती तो अच्छा होता। क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही मेरे ऊपर डालते थे और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं।''

बाबू साहब कुढ़कर बोले-''इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं?''

रामेश्वरी - ''और नहीं किसे कहते हैं, तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुःख-सुख सूझता ही नहीं। न जाने कब किसका जी कैसा होता है। तुम्हें उन बातों की कोई परवाह ही नहीं, अपनी चुहलता से काम है।''

बाबू- ''बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है?''

रामेश्वरी- ''तुम्हारा हो जाता होगा और होने को होता है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो। पराये धन से भी कहीं घर भरता है?''

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले- ''यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे?''

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित हो कर बोली - ''बातें बनाना बहुत आसान है। तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो, पर मुझे यह बातें अच्छी नहीं लगतीं। हमारे भाग ही फूटे हैं, नहीं तो यह दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारा चलन तो दुनिया से निराला है। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं - पूजा-पाठ करते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो।''

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। उन्होंने कहा- ''पूजा-पाठ, व्रत सब ढकोसला है। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा तो यह अटल विश्वास है।''

श्रीमतीजी कुछ-कुछ रूँआसे स्वर में बोलीं- ''इसी विश्वास ने सब चौपट कर रखा है। ऐसे ही विश्वास पर सब बैठ जाएँ तो काम कैसे चले? सब विश्वास पर ही न बैठे रहें, आदमी काहे को किसी बात के लिए चेष्टा करे।''

बाबू साहब ने सोचा कि मूर्ख स्त्री के मुँह लगना ठीक नहीं। अतएव वह स्त्री की बात का कुछ उत्तर न देकर वहाँ से टल गए।

भाग-1

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. मनोहर राम जी दास से कौन से खिलौने की मांग कर रहा था और क्यों?
2. मनोहर अपनी ताई को रेलगाड़ी में क्यों नहीं ले जाना चाहता था?
3. रामेश्वरी को अपने पति रामजीदास की चुहलबाजी अच्छी क्यों नहीं लगी?
4. रामेश्वरी की किन बातों से बाबू रामजीदास के चेहरे पर घृणा का भाव झलक आया?

भाग-2

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन-देन भी है। इनसे एक छोटा भाई है उसका नाम है कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक में ही है। बाबू रामदास जी की आयु 35 के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की आयु 21 के लगभग। रामदासजी निस्संतान हैं। कृष्णदास के दो संतान हैं। एक पुत्र-वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं - और एक कन्या है। कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है।

रामदासजी अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह रखते हैं- ऐसा स्नेह कि उसके प्रभाव से उन्हें अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं। छोटे भाई की संतान को अपनी संतान समझते हैं। दोनों बच्चे भी रामदास से इतने घुलमिल गए हैं कि उन्हें अपने पिता से भी अधिक समझते हैं।

परंतु रामदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुःख है। वह दिन-रात संतान ही के सोच में घुली रहती हैं। छोटे भाई की संतान पर पति का प्रेम उनकी आँखों में काँटे की तरह खटकता है।

रात के भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे हैं। पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थी। दोनों बच्चे अभी बाबू साहब के पास से उठकर अपनी माँ के पास गए थे। बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट

लेकर कहा- ''आज तुमने मनोहर को बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुःख है। कभी-कभी तो तुम्हारा व्यवहार अमानुषिक हो उठता है।''

रामेश्वरी बोली- ''तुम ही ने मुझे ऐसा बना रखा है। उस दिन उस पंडित ने कहा कि हम दोनों के जन्म-पत्र में संतान का जोग है और उपाय करने से संतान हो सकती है। उसने उपाय भी बताये थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा। बस, तुम तो इन्हीं दोनों में मगन हो। तुम्हारी इस बात से रात-दिन मेरा कलेजा सुलगता रहता है। आदमी उपाय तो करके देखता है। फिर होना न होना भगवान के अधीन है।''

बाबू साहब हँसकर बोले- ''तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ? तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो दुनिया भर के झूठे और धूर्त हैं। झूठ बोलने ही की रोटियाँ खाते हैं।''

रामेश्वरी तुनककर बोली- ''तुम्हें तो सारा संसार झूठा ही दिखाई पड़ता है। ये पोथी-पुराण भी सब झूठे हैं? पंडित कुछ अपनी तरफ से बनाकर तो कहते नहीं हैं। शास्त्र में जो लिखा है, वही वे भी कहते हैं, वह झूठा है तो वे भी झूठे हैं। अंग्रेज़ी क्या पढ़ी, अपने आगे किसी को गिनते ही नहीं। जो बातें बाप-दादा के जमाने से चली आई हैं, उन्हें भी झूठा बताते हैं।''

बाबू साहब - ''तुम बात तो समझती नहीं, अपनी ही ओटे जाती हो। मैं यह नहीं कह सकता कि ज्योतिष शास्त्र झूठा है। संभव है, वह सच्चा हो, परंतु ज्योतिषियों में अधिकांश झूठे होते हैं। उन्हें ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान तो होता नहीं, दो-एक छोटी-मोटी पुस्तकें पढ़कर ज्योतिषी बन बैठते हैं और लोगों को ठगते फिरते हैं। ऐसी दशा में उनकी बातों पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?''

रामेश्वरी- ''हूँ, सब झूठे ही हैं, तुम्हीं एक बड़े सच्चे हो। अच्छा, एक बात पूछती हूँ। भला तुम्हारे जी में संतान का मुख देखने की इच्छा क्या कभी नहीं होती?''

इस बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा। वह कुछ देर चुप रहे। तत्पश्चात् एक लंबी साँस लेकर बोले - ''भला ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसके हृदय में संतान का मुख देखने की इच्छा न हो? परंतु क्या किया जाए? जब नहीं है, और न होने की कोई आशा ही है, तब उसके लिए व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ? इसके सिवा जो बात अपनी संतान से होती, वही भाई की संतान से हो भी रही है। जितना स्नेह अपनी पर होता, उतना ही इन पर भी है जितना आनंद उसकी बाल क्रीड़ा से आता, वही इनकी क्रीड़ा से भी आ रहा है। फिर नहीं समझता कि चिंता क्यों की जाय।''

रामेश्वरी कुढ़कर बोली- ''तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ? इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ, भला तो यह बताओ कि तुम्हारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा?''

बाबू साहब हँसकर बोले- ''अरे, तुम भी कहाँ की क्षुद्र बातें लायी। नाम संतान से नहीं चलता।

नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है। सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके। इसी प्रकार जितने महात्मा हो गए हैं, उन सबका नाम क्या उनकी संतान की बदौलत चल रहा है? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है, उतनी ही नाम डूब जाने की संभावना रहती है। परंतु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसमें नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं। हमारे शहर में राय गिरधारीलाल कितने नामी थे। उनके संतान कहाँ है? पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, अभी न जाने कितने दिनों तक चला जाएगा।

रामेश्वरी- ''शास्त्र में लिखा है जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती?''

बाबू- ''मुक्ति पर मुझे विश्वास नहीं। मुक्ति है किस चिड़िया का नाम? यदि मुक्ति होना भी मान लिया जाए, वो यह कैसे माना जा सकता है कि सब पुत्रवालों की मुक्ति हो जाती है। मुक्ति का भी क्या सहज उपाय है? ये कितने पुत्रवाले हैं, सभी की तो मुक्ति हो जाती होगी?''

रामेश्वरी निरूत्तर होकर बोली- ''अब तुमसे कौन बकवास करे। तुम तो अपने सामने किसी को मानते ही नहीं।''

भाग-2

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. रामजीदास के परिवार के सदस्यों के नाम लिखिए।
2. रामजीदास की पत्नी को क्या दुःख था?
3. ज्योतिषियों के बारे में बाबू रामजीदास के क्या विचार थे?
4. 'संतान से नाम चलता है' रामेश्वरी के इस कथन पर रामजीदास ने क्या तर्क दिए?

भाग-3

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व-प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। किंतु भद्दी से भद्दी और बिलकुल काम में न आनेवाली वस्तु को यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है। पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुंदर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुःख का अनुभव नहीं करता, इसलिए कि वह वस्तु, उसकी नहीं, पराई है। अपनी वस्तु कितनी ही भद्दी हो, काम में न आनेवाली हो, नष्ट होने पर मनुष्य को दुःख होता है, इसलिए कि वह अपनी चीज़ है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मनुष्य पराई चीज़ से प्रेम करने लगता है। ऐसी दशा में भी जब तक मनुष्य उस वस्तु को अपना बनाकर नहीं छोड़ता, अथवा हृदय में यह

विचार नहीं कर लेता कि वह वस्तु मेरी है, तब तक उसे संतोष नहीं होता। ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, और प्रेम से ममत्व। इन दोनों का साथ चोलीदामन का-सा है। ये कभी पृथक नहीं किए जा सकते।

यद्‌यपि रामेश्वरी को माता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था, तथापि उनका हृदय एक माता का हृदय बनने की पूरी योग्यता रखता था। उनके हृदय में वे गुण विद्‌यमान तथा अंतर्निहित थे, जो एक माता के हृदय में होते हैं, परंतु उनका विकास नहीं हुआ था। उसका हृदय उस भूमि की तरह था, जिसमें बीज तो पड़ा हुआ है, पर उसको सींचकर और इस प्रकार बीज को प्रस्फुटित करके भूमि के ऊपर लाने वाला कोई नहीं था। इसीलिए उसका हृदय उन बच्चों की ओर खिंचता तो था, परंतु जब उसे ध्यान आता था कि ये बच्चे मेरे नहीं, दूसरे के हैं, तब उसके हृदय में उनके प्रति द्‌वेष उत्पन्न होता था, घृणा पैदा होती थी। विशेषकर उस समय उसके द्‌वेष की मात्रा भी बढ़ जाती थी, जब वह यह देखती थी कि उनके पतिदेव उन बच्चों पर प्राण देते हैं, जो उनके (रामेश्वरी के) नहीं हैं।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी। पास उनकी देवरानी भी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनके खेल को देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था। हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले उनके नन्हें-नन्हें मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उसके हृदय को शीतल कर रहीं थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई दौड़कर रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे-पीछे मनोहर भी दौड़ता हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्‌वेष भूल गई। उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है, जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो। उन्होंने बड़ी सतृष्णता से दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता, तो उसे यह विश्वास होता कि रामेश्वरी उन बच्चों की माता है।

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उसकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

''मनोहर, ले रेलगाड़ी।'' कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे।

इधर रामेश्वरी की नींद टूटी। पति को बच्चों में मगन होते देखकर उसकी भौहें तन गईं। बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही घृणा और द्‌वेष भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुस्कुराकर बोले- ''आज तो

तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी उनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है।''

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी। उसे अपनी कमज़ोरी पर बड़ा दुःख हुआ। केवल दुःख ही नहीं, अपने ऊपर क्रोध भी आया। वह दुःख और क्रोध पति के उक्त वाक्य से और भी बढ़ गया। उसकी कमज़ोरी पति पर प्रकट हो गई, यह बात उसके लिए असह्य हो उठी।

रामजीदास बोले- ''इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।''

यह बात बाबू साहब ने नितांत हृदय से कही थी, परंतु रामेश्वरी को इसमें व्यंग्य की तीक्ष्ण गंध मालूम हुई। उन्होंने कुढ़कर मन में कहा- ''इन्हें मौत भी नहीं आती। मर जाएँ, पाप कटे! आठों पहर आँखों के सामने रहने से प्यार को जी ललचा ही उठता है। इनके मारे कलेजा और भी जला करता है।''

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा- ''अब झेंपने से क्या लाभ। अपने प्रेम को छिपाने की चेष्टा करना व्यर्थ है। छिपाने की आवश्यकता भी नहीं।''

रामेश्वरी जल-भुनकर बोली- ''मुझे क्या पड़ी है, जो मैं प्रेम करूँगी? तुमहीं को मुबारक रहें। निगोड़े आप ही आ-आ के घुसते हैं। एक घर में रहने में कभी-कभी हँसना बोलना पड़ता ही है। अभी परसों जरा यों ही ढकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न वों चैन।''

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा- ''न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी-खासी बैठी बच्चों से प्यार कर रही थी। मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी। अपनी इच्छा से चाहे जो करे, पर मेरे कहने से बल्लियों उछलती है। न जाने मेरी बातों में कौन-सा विष घुला रहता है।

यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है, तो न कहा करूँगा। पर इतना याद रखो कि अब कभी इनके विषय में निगोड़े-सिगोड़े इत्यादि अपशब्द निकाले, तो अच्छा न होगा। तुमसे मुझे ये बच्चे कहीं अधिक प्यारे हैं।''

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर न दिया। अपने क्षोभ तथा क्रोध को वे आँखों द्वारा निकालने लगीं।

जैसे-ही-जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे-ही-वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी। प्रायः बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा सुनी हो जाती थी,

और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे। जब रामेश्वरी ने यह देखा कि बच्चों के कारण ही वह पति की नज़र से गिरती जा रही हैं, तब उनके हृदय में बड़ा तूफ़ान उठा। उन्होंने यह सोचा- पराये बच्चों के पीछे यह मुझसे प्रेम कम करते जाते हैं, हर समय बुरा-भला कहा करते हैं, इनके लिए ये बच्चे ही सब कुछ हैं, मैं कुछ भी नहीं। दुनिया मरती जाती है, पर दोनों को मौत नहीं। ये पैदा होते ही क्यों न मर गए। न ये होते, न मुझे ये दिन देखने पड़ते। जिस दिन ये मरेंगे, उस दिन घी के दिए जलाऊँगी। इन्होंने ही मेरे घर का सत्यानाश कर रखा है।

भाग-3

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. अपनी चीज़ और पराई चीज़ के बारे में लेखक ने क्या कहा है?
2. रामेश्वरी के हृदय में घृणा और द्वेष की भावना कब अधिक बढ़ जाती थी?
3. खेलते-खेलते जब मनोहर और उसकी बहन रामेश्वरी की गोद में गिर पड़े तो रामेश्वरी ने क्या किया?
4. बच्चों पर पति के बढ़ते प्रेम को देखकर रामेश्वरी मन ही मन क्या सोचने लगी थी?

भाग-4

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए। एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी। उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे। विचार और कुछ नहीं, अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग इत्यादि। कुछ देर बाद जब उनके विचार स्वयं उन्हीं को कष्टदायक प्रतीत होने लगे, तब वह अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए टहलने लगीं।

वह टहल ही रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। मनोहर को देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई। और वह छत की चहारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं।

संध्या का समय था। आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे, क्या आनंद आवे। देर तक गिरने की आशा करने के बाद दौड़कर रामेश्वरी के पास आया, और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला- ''ताई, हमें पतंग मँगा दो।'' रामेश्वरी ने झिड़क कर कहा- 'चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर।'

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। थोड़ी देर बाद उसे फिर रहा न गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा- ''ताई मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे।''

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया। वह कुछ देर तक उसकी

ओर स्थिर दृष्टि से देखती रही। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन ही मन कहा- यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती। निगोड़ा-मरा कितना सुंदर है, और कैसी प्यारी-प्यारी बातें करता है। यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लें। यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरनेवाली थीं कि इतने में उन्हें मौन देखकर बोला- ''तुम हमें पतंग नहीं मँगवा देगी, तो ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवायेंगे।''

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुँह क्रोध के मारे लाल हो गया। वह उसे झिड़क कर बोली- ''जा कह दे अपने ताऊजी से देखें, वह मेरा क्या कर लेंगे।''

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट आया, और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा- यह सब ताऊजी के दुलार का फल है कि बालिश्त भर का लड़का मुझे धमकाता है। ईश्वर करे, इस दुलार पर बिजली टूटे।

उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई। छत के चारों ओर चहार-दीवारी थी, जहाँ रामेश्वरी खड़ी हुई थी। मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा। पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला। रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं। मनोहर उसके पास से होकर छज्जे पर चला गया और उससे दो फिट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग देखने लगा। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँड़ेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देख, वह प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँड़ेर पर से उसका पैर फिसल गया। वह नीचे की ओर चला। नीचे जाते-जाते उसके दोनों हाथों में मुँड़ेर आ गई। वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया ''ताई!''

रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा। उसके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा का पाप कट जाएगा। यही सोच कर वह एक क्षण रुकी। इधर मनोहर के हाथ मुँड़ेर पर से फिसलने लगे। वह अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया - ''अरी ताई!'' रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं। मनोहर की वह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह में आ गया। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा ही कि मनोहर के हाथ से मुँड़ेर छूट गई। वह नीचे आ गिरा। रामेश्वरी चीख मार कर छज्जे पर गिर पड़ी।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार से बेहोश पड़ी रहीं। कभी-कभी जोर से चिल्ला उठती और कहती - ''देखो-देखो, वह गिरा जा रहा है- उसे बचाओ, दौड़ो-मेरे मनोहर को बचा लो।'' कभी कहती - ''बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया। हाँ, हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी- देर कर दी।'' इसी प्रकार के प्रलाप वह किया करती।

मनोहर की टाँग उखड़ गई थी, टाँग बिठा दी गई। वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ। अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा- ''मनोहर कैसा है?''

रामजीदास ने उत्तर दिया - ''अच्छा है।''

रामेश्वरी- ''उसे पास लाओ।''

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, हिचकियों से गला रुँध गया। रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं। अब वह मनोहर और उसकी बहन चुन्नी से द्वेष नहीं करतीं। और मनोहर तो अब उसका प्राणाधार हो गया। उसके बिना उन्हें एक क्षण भी कल नहीं पड़ती।

भाग-4

बोध-प्रश्न (मौखिक) सोचिए, चर्चा कीजिए और अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. संध्या समय छत पर खड़ी रामेश्वरी से मनोहर ने किस चीज़ की मांग की?
2. पतंग पकड़ने के चक्कर में मनोहर का क्या हाल हुआ?
3. मुंडेर से लटके हुए मनोहर को देखकर रामेश्वरी ने क्या सोचा?
4. रामेश्वरी चीख मारकर छज्जे पर क्यों गिर पड़ी?
5. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

इकाई-IV

सरल हिंदी व्याकरण और प्रयोजन मूलक हिंदी

1. वर्तनी
2. शब्द विचार
3. शब्द रचना
4. वर्णमाला
5. लिंग
6. वचन
7. कारक
8. वाक्य संरचना
9. काल
10. संधि
11. समास
12. विराम चिह्न
13. मुहावरे, लोकोक्तियाँ (कहावतें)
14. सूचना
15. समाचार लेखन
16. समाचार वाचन
17. विज्ञापन लेखन
18. संपादकीय लेखन
19. पी पी टी (पावर पाईंट प्रस्तुति)
20. पारिभाषिक शब्दावली

1. वर्तनी

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों के संप्रेषण का श्रेष्ठ साधन है। यह ध्वनियों की व्यवस्था से निर्मित होती है। ये ध्वनियाँ मनुष्य के उच्चारण अवयवों से उच्चरित होती हैं। भाषा के दो रूप होते हैं- उच्चारित रूप और लिखित रूप। लिखित भाषा में हर मूल ध्वनि के लिए एक चिह्न निर्धारित कर लिया जाता है। इसे वर्ण कहते हैं। इस तरह से वर्ण उस मूल ध्वनि या उसके चिह्न को कहते हैं जिसके और टुकड़े न हो सके। जैसे 'अ' 'इ' 'क्' आदि। वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण मुख के भिन्न-भिन्न भागों से होता है। हिंदी वर्णमाला के प्रथम 11 वर्ण स्वर कहलाते हैं।

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन :

'क'	वर्ग	- क ख ग घ ङ
'च'	वर्ग	- च छ ज झ ञ
'ट'	वर्ग	- ट ठ ड ढ ण
'त'	वर्ग	- त थ द ध न
'प'	वर्ग	- प फ ब भ म
अंतस्थ		- य र ल व
ऊष्म		- श ष स ह
संयुक्ताक्षर		- क्ष त्र ज्ञ

इस वर्णमाला के अतिरिक्त हिंदी में कुछ नव विकसित ध्वनियाँ हैं। इनको निम्नलिखित अक्षरों के नीचे बिंदी लगाकर सूचित किया जाता है।

ड़ ढ़ क़ ख़ ग़ ज़ फ़

स्वर का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है। जबकि व्यंजन का उच्चारण स्वर की सहायता से होता है।

हिंदी में उच्चारण की विशेषताएँ :

1. हिंदी अकारांत शब्दों के अंतिम 'अ' का उच्चारण प्रायः नहीं होता।
   उदाः राम का उच्चारण 'राम्' के समान होता है।
2. तीन या चार वर्णों के कई शब्दों के बीच 'अ' का उच्चारण भी नहीं होता।
   उदाः जाग + ना = जागना - जागना
3. 'ऋ' का उच्चारण 'रि' के समान होता है।
   उदाः ऋषि - रिषि
4. अनुस्वार केवल नाक से और अनुनासिक मुख तथा नाक से बोला जाता है।

उदाः शाँति, भाँति, चंचल।

वर्णों के लिखने की प्रणाली को लिपि कहते हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि की बड़ी विशेषता यह है कि इसमें लिखना उच्चारण के अनुकूल होता है। इसलिए अक्षर विन्यास की जो अशुद्धियाँ हिंदी के लिखने में होती हैं वे प्रयत्न के बल पर सुधारी जा सकती हैं। लिखने की अशुद्धियों को वर्तनी की अशुद्धियाँ कहते हैं।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के सामान्य कारण

1. **उच्चारण और श्रवण के दोष :** अशुद्ध उच्चारण और श्रवण वर्तनी की त्रुटियों का कारण हो सकता है। उच्चारण की स्पष्टता और श्रवण का अभ्यास शुद्ध वर्तनी के लिए आवश्यक पहला नियम है। अशुद्ध उच्चारण के कारण ही वे गुप्त को गुप्ता लिख देते हैं। ऋण को 'रिन' हृदय को 'हिरदय' लिख देते हैं।
2. **लेखन की असावधानी :** वर्तनी दोष संबंधी अधिकांश त्रुटियाँ लेखन में असावधानी और शीघ्रता के कारण होती है। उदाहरण के लिए शिरोरेखा खींचते समय थोड़ी-सी असावधानी 'भ' को 'म', 'म' को 'भ' बना देती है। इसी असावधानी या शीघ्रता के कारण ही 'ड' को 'इ' तथा 'इ' को 'ड' लिख लिया जाता है।
3. **मात्राओं का अपर्याय ज्ञानः** यदि विद्यार्थी प्रारंभ में मात्राएँ सीखने समय ध्यान नहीं देते हैं, तो मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ भी हो जाती है। उदाहरण के लिए रश्मि को रश्मी तथा स्त्री को स्त्रि तथा बबूल को बबुल, वायु को वायू लिख देते है। इस तरह कई बार दीर्घ ई, ऊ के स्थान ह्रस्व इ, उ लिख देते हैं।
4. **व्याकरण का अधूरा ज्ञानः** कभी-कभी व्याकरण के साधारण नियमों की अवहेलना करने से भी वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे हिंदी व्याकरण का एक नियम है जो संज्ञाएँ अकारांत या इकारांत होती हैं उनके बहुवचन में क्रमशः 'अ' की मात्रा के स्थान पर 'कोई परिवर्तन नहीं होता' और 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा लगाई जाती है। इस नियम का ज्ञान न होने पर विद्यार्थी 'घर' को 'घराँ' और 'तितलियाँ' के स्थान पर 'तितलीयाँ' लिख देते हैं।
5. **मातृभाषा का प्रभावः** विद्यार्थी के जन्म का प्रदेश, उनकी भाषा, संस्कृति का उस पर विशेष प्रभाव होता है। तेलुगु के प्रभाव के अधीन विद्यार्थी कई शब्दों के दीर्घ को ह्रस्व कर देते हैं। जैसे 'नदी'-नदि, 'गली'-गलि।

2. शब्द विचार

एक या अनेक वर्णों से मिलकर बनी हुई सार्थक ध्वनियों को शब्द कहते हैं। जैसे- जा, खिड़की, पुस्तक। शब्दों से वाक्य और वाक्यांश बनते हैं। शब्दों के बनावट की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं- 1. रूढ़ 2. यौगिक, 3. योग रूढ़।

रूढ़ शब्द वे हैं जिनके वर्णों को अलग करने पर उन वर्णों का कोई अर्थ नहीं होता। मेज़ को अलग करने पर मे + ज बनता है। इन खण्डों का कोई अर्थ नहीं है।

यौगिक वे शब्द है जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बनतेहैं। जैसे पाठ + शाला = पाठशाला।

योग रूढ़ वे शब्द हैं जो यौगिक संज्ञाओं के समान दो शब्दों के योग से बने हों और सामान्य अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ प्रकट करते हों। जैसे पंकज शब्द का अर्थ है- कीचड़ से उत्पन्न। लेकिन उसका विशेष अर्थ है- कमल।

हिंदी एक विकासशील भाषा है। इसके शब्द भंडार का विकास निरंतर होता आ रहा है। हिंदी भाषा ने संस्कृत भाषा से शब्दों को स्वीकार किया। फिर स्थानीय बोलियों से भी शब्दों को लिया। दूसरे प्रांतों की भाषाओं, दूसरे देशों की भाषाओं से भी शब्दों को लिया। इस तरह हिंदी भाषा समृद्‌ध होती गई।

हिंदी शब्द-भंडार का विकास तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी भाषाओं के शब्दों से हुआ है।

तत्सम शब्द वे शब्द हैं जो संस्कृत से आए हैं और किसी परिवर्तन के बिना हिंदी में इनका प्रयोग किया जाता है। जैसे - रात्रि, वायु, शिक्षा, अग्नि आदि।

तद्‌भव शब्द वे हैं जो संस्कृत शब्दों से बने हैं लेकिन हिंदी में उनका कुछ परिवर्तन हो गया है। जैसे- क्षेत्र - खेत, हस्त-हाथ, दधि-दही।

देशज शब्द वे हैं जो स्थानीय बोलियों से लिए गए हैं या ज़रूरत के अनुसार बना लिए गए हैं। जैसे - पगड़ी, पेट, पिल्ला आदि।

विदेशी शब्द वे हैं जो दूसरे देशों की भाषाओं से हिंदी में लिए गए हैं।

अंग्रेज़ी : हॉस्पिटल, टेलिफोन, कॉलेज, फीस, होटल, आदि।

फारसी : बाज़ार, कबूतर, चालाक, अनार, किनारा आदि।

अरबी : बाग़, अख़बार, अदालत, अमीर, इमारत आदि।

पुर्तगाली : कमीज, आलमारी, तौलिया, बिस्कुट, बोतल आदि।

3. शब्द रचना

शब्द रचना के अनुसार रूढ़ि, यौगिक और यौगरूढ़ि तीन तरह के कहे जा सकते हैं। मूल शब्द कोशीय शब्द होते हैं और उन पर व्याकरण की प्रक्रिया होने पर वे मूल शब्द पद बनकर वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। मूल शब्दों की उत्पत्ति आम तौर पर तीन तरह से हो सकती है।

1. शब्दों के पूर्व शब्दांश लगने से। 2. शब्दों के पीछे शब्दांश लगने से। 3. दो शब्दों के संयोग से।

शब्दों के पूर्व लगने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं। शब्द के पीछे लगने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं। इसके अलावा दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक भिन्न स्वतंत्र शब्द बनता है तो इसे संधि या समास कहा जाता है।

उपसर्गः

उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ को बदल देते हैं। हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है - 1. संस्कृत के उपसर्ग 2. हिंदी के उपसर्ग 3. उर्दू के उपसर्ग। हिंदी के अधिकांश उपसर्ग संस्कृत के ही है। ठेठ हिंदी के उपसर्ग कम है।

संस्कृत के उपसर्गः

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रूप**
अति	अधिक	अतिरिक्त, अतिवृष्टि
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति
अनु	पीछे, समान	अनुज, अनुचर
अप	बुरा	अपमान, अपशब्द
अव	नीचे, हीन	अवगुण, अवनति
आ	तक, सहित	आजीवन, आकर्षण
उप	समीप, गौण, सहायक	उपवन, उपनाम
परि	आस-पास	परिजन, परिक्रमा
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुगम
पुरा	पहले	पुरातन, पुरातत्व

हिंदी के उपसर्गः

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रूप**
अ	रहित	अभाव, अचेतन
अध	आधा	अधपका, अधमरा
नि	रहित	निकम्मा, निडर
कु	बुराई	कुकर्म, कुमार्ग
औ	हीन	औगुण, औघट

ऊर्दू के उपसर्गः

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रूप**
कम	थोड़ा	कमज़ोर, कमसमझ

खुश	प्रसन्न	खुशखबरी, खुशहाल
गैर	रहित	गैरहाजिर, गैरकानूनी
दर	में	दरअसल, दरकार
ना	नहीं	नालायक, नापसंद

प्रत्ययः

प्रत्यय धातु या शब्दों के अंत में जोड़े जाते हैं। इनसे शब्द के अर्थ में विस्तार होता है। उदाहरण के लिए खेल शब्द के साथ आड़ी प्रत्यय जोड़ने से खिलाड़ी शब्द बनता है।

कृत् प्रत्ययः

जिन प्रत्ययों को धातुओं के साथ जोड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं उनको कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्यय केवल धातुओं में ही जुड़ते हैं। कृत् प्रत्यय से बने नए शब्दों को 'कृदंत' कहा जाता है। उदाहरण के लिए लड् धातु के साथ आई प्रत्यय जोड़ने से लड़ाई शब्द बनता है।

प्रत्यय	**धातु**	**नया शब्द**
अन	जल/लग/घुट	जलन, लगन, घुटन
आन	चढ़/थक/उड़	चढ़ान, थकान, उड़ान
अनीय	मान/प्रदर्श/शोच	माननीय, प्रदर्शनीय, शोचनीय
अक्कड़	घुम/भुल/पिय	घुमक्कड़, भुलक्कड़, पियक्कड़
आऊ	टिक/बिक/दिख	टिकाऊ, बिकाऊ, दिखाऊ
नी	कर/भर/कथ	करनी, भरनी, कथनी
वना	डर/लुभ/सुह	डरावना, लुभावना, सुहावना

तद्धित प्रत्ययः

धातु से भिन्न शब्दों अर्थात् संज्ञा या विशेषण में जुड़कर जो नए शब्दों का निर्माण करते हैं उनको तद्धित प्रत्यय कहते हैं। उदाहरण के लिए धन संज्ञा के साथ वान प्रत्यय को जोड़ने से धनवान नया विशेषण शब्द बनता है।

प्रत्यय	**संज्ञा / विशेषण**	**नया शब्द**
ता	मानव/मधुर/अपना	मानवता, मधुरता, सरलता
पन	लड़क/बच/अपना	लड़कपन, बचपन, अपनापन
ई	गरीब/बीमार/ईमानदार	गरीबी, बीमारी, ईमानदारी
आवट	लिख/सज/बना	लिखावट, सजावट, बनावट
इक	धर्म/प्रकृति/अर्थ	धार्मिक, प्राकृतिक, आर्थिक

4. वर्णमाला

'वर्ण' वह मूल ध्वनि है, जिसका विभाजन नहीं होता। जैसे - अ, इ, उ, क् , ख्, ग् आदि। उदाहरण के लिए 'नीला' शब्द 'न् + ई + ल् + आ इस प्रकार चार ध्वनियों से बना है। ये मूल ध्वनियाँ भाषा की आधार शिला हैं। इन्हीं वर्णो के समुदाय को 'वर्णमाला' कहते हैं।

1. स्वरः– ये स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। इनमें परिवर्तन नहीं होता। ये व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं ।

2. व्यंजनः–जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना संभव नहीं, वे व्यंजन कहलाते हैं । स्वररहित व्यंजन को 'हल' कहते हैं । जैसे - क् , ख्, ग् इत्यादि । ये ही मूल ध्वनियाँ भाषा की आधारशिला है ।

स्वर	मात्रा चिह्न	स्थान	उदाहरण	उच्चारण स्थान
अ		व्यंजन में अंतर्निहित	(क)	कण्ठ
आ	ा	व्यंजन के बाद	(का)	कण्ठ
इ	ि	व्यंजन के पूर्व	(कि)	तालु
ई	ी	व्यंजन के बाद	(की)	तालु
उ	ु	व्यंजन के नीचे *	(कु)	ओष्ठ
ऊ	ू	व्यंजन के नीचे *	(कू)	ओष्ठ
ऋ	ृ	व्यंजन के नीचे	(कृ)	मूर्धा
ए	े	व्यंजन के ऊपर	(के)	कंठ-तालु
ऐ	ै	व्यंजन के ऊपर	(कै)	कंठ-तालु
ओ	ो	व्यंजन के बाद	(को)	कंठ-ओष्ठ
औ	ौ	व्यंजन के बाद	(कौ)	कंठ-ओष्ठ

- अ, इ, उ, ऋ -ह्रस्व स्वर; आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ -दीर्घ स्वर
- अनुस्वार का उच्चारण-स्थान नासिका और विसर्ग का कंठ है ।
- 'ऋ ' का प्रयोग सिर्फ संस्कृत के तत्सम शब्दों में होता है।

1. स्पर्श व्यंजनः-

वर्ग	अल्प प्राण	महा प्राण	अल्प प्राण	महा प्राण	नासिका	उच्चारण स्थान
क-वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ	कण्ठ
च-वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	तालु
ट-वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा
त-वर्ग	त	थ	द	ध	न	दन्त
प-वर्ग	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ

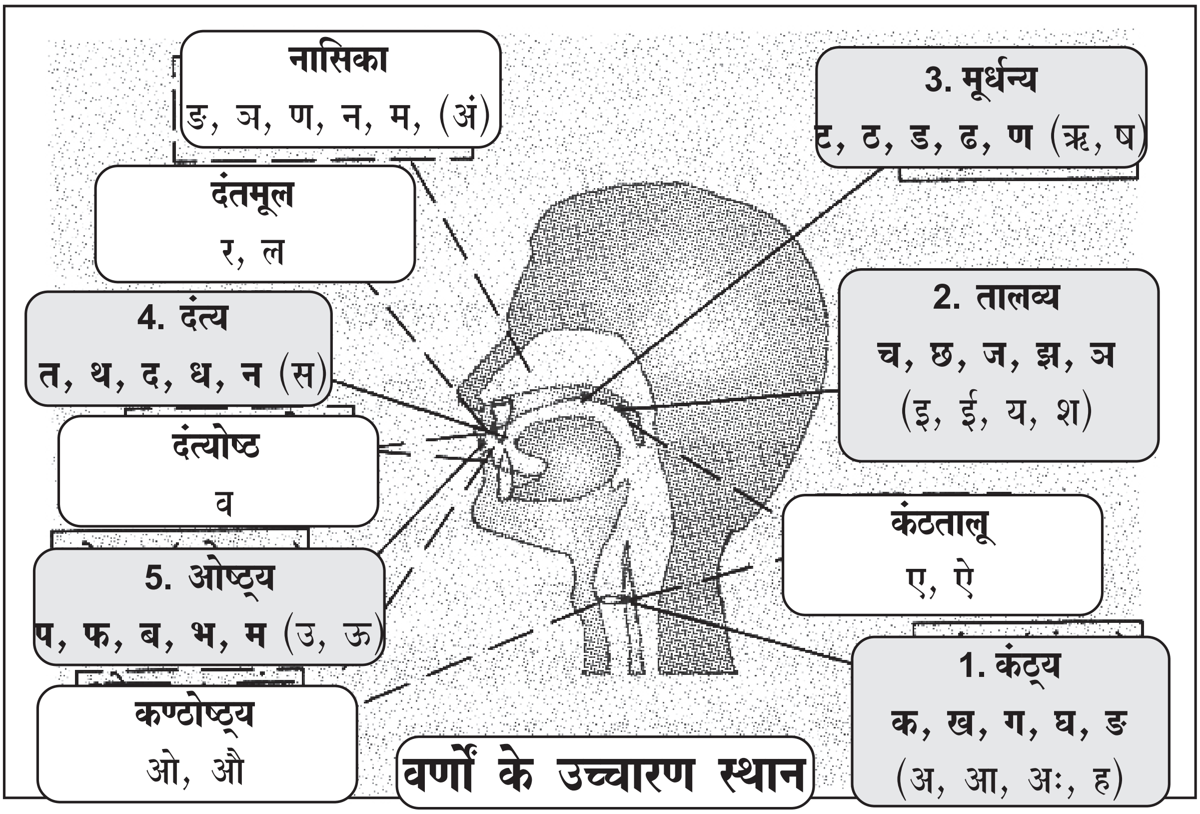

'ड़, ढ़' उत्क्षिप्त व्यंजन हैं। ये हिंदी की अपनी ध्वनियाँ हैं । इनका प्रयोग शब्दों के बीच में या अंत में करते हैं, आरंभ में नहीं । जैसे-सड़क, साड़ी, गाड़ी, पढ़ना, बूढ़ा, बढ़ई आदि ।

2. **अंतःस्थ व्यंजन :-** इनके उच्चारण में जीभ, तालु, दाँत, ओष्ठ परस्पर पास आते हैं, परंतु पूर्ण स्पर्श नहीं होता । य, र, ल, व

3. **ऊष्मव्यंजन :-** इनके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है और ऊष्म वायु उत्पन्न होती है। श, ष, स, ह

4. **संयुक्त व्यंजन :-** ये दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। क्ष, त्र, ज्ञ

5. लिंग एवं वचन

हिंदी भाषा के व्याकरण के अंतर्गत कुछ तत्वों से संज्ञा शब्दों का रूपांतर होता है। उसको संज्ञा शब्दों का विकार तत्व कहा जाता है। ये तत्व तीन प्रकार के हैं। वे हैं- 1. लिंग, 2. वचन और 3. कारक।

परिभाषाः शब्द के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के पुरुष जाति अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। जैसेः हाथी, बाघ, बकरी आदि। इनमें हाथी, बाघ पुल्लिंग हैं, जबकि बकरी स्त्रीलिंग है। हिंदी में लिंग के दो भेद हैं। वे हैंः पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

पुल्लिंगः जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता हो या जो शब्द पुरुष जाति के अंतर्गत स्वीकारे जाते हों, वे शब्द पुल्लिंग कहलाते हैं। जैसे : कुत्ता, शेर, बैल आदि।

स्त्री लिंग : जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो या जो शब्द स्त्री जाति के अंतर्गत स्वीकारे जाते हों, वे शब्द स्त्री लिंग कहलाते हैं। जैसेः कुतिया, शेरनी, गाय आदि।

(अ) प्राणिवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग निर्धारण प्रकृति द्वारा निश्चित है। इनका लिंग निर्धारण स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है। इनका निर्धारण अर्थ के आधार पर होता है। कुछ नियम इस प्रकार हैंः

1. पहला नियमः वे प्राणिवाचक शब्द, जो सदा पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे सदा पुल्लिंग के अंतर्गत माने जाते हैं। जैसेः दादा, पिता, पुत्र, चाचा, भाई, नाना, मामा, मौसा, साला, लड़का, पुरुष, माली, सिंह, बूढ़ा, नौकर, सेठ, गायक, वर आदि।

2. दूसरा नियमः वे प्राणिवाचक संज्ञा शब्द, जो सदा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, वे सदा स्त्रीलिंग के अंतर्गत माने जाते हैं, जैसे : दादी, माता, पौत्री, चाची, बहिन, नानी, मामी, मौसी, लड़की, स्त्री, मालिन, सिंहनी, बूढ़ी, नौकरानी, मोरनी, सेठानी, गायिका, वधू आदि।

3. तीसरा नियमः द्वंद्व समास में प्रयुक्त दोनों शब्द पुरुष जाति के बोधक हों अथवा एक शब्द पुरुष जाति का बोधक और दूसरा शब्द स्त्री जाति का बोधक हों, तो भी वे प्राणिवाचक शब्द सदा पुल्लिंग होते हैं। जैसे : दादा-दादी जा रहे हैं। राजा-रानी सिंहासन पर बैठे हैं।

4. चौथा नियमः कुछ प्राणियों का लिंग निर्धारण दूर से देख कर नहीं किया जा सकता, ऐसे प्राणिवाचक शब्दों को या तो सदा ही पुल्लिंग मान लिया गया या सदा ही स्त्रीलिंग मान लिया गया। जैसेः

1. नित्य पुल्लिंगः तोता, कौआ, उल्लू, मच्छर, चीता, भेड़िया, खटमल, गिलहरी, तितली आदि।

2. नित्य स्त्रीलिंगः चील, मक्खी, मछली, मकड़ी, कोयल, गिलहरी, तितली आदि।

(आ) निर्जीव वस्तुओं अथवा अप्राणि का बोध करानेवाले शब्द अर्थात् अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग निर्धारण करना कठिन होता है। ऐसे संज्ञा शब्दों में भौतिक वस्तुओं, गायों, विचारों आदि का बोध कराने वाले शब्द आते हैं। इन शब्दों का लिंग इनके प्रयोग से ही जाना जाता है।

1. **पुल्लिंग पहचानने के नियमः**

(क) जिन शब्दों के अंत में - आ, आव, पा, पन, न, त्र, ण, ख, ज और आर प्रत्यय हों, जैसे मोटा, चढ़ाव, बुढ़ापा, लड़कपन, लेन-देन, मित्र, जागरण, सुख-दुःख, सरोज, आहार आदि पुल्लिंग कहलाते हैं।

(ख) ग्रह और नक्षत्रों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं। जैसे : सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु-केतु, सप्तऋषि आदि। अपवादः पृथ्वी, अरुंधती, कृत्तिका, भरणी - स्त्री लिंग शब्द हैं।

(ग) समय के भागों - मास, वार, दिन के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः वैशाख, आषाढ़, जनवरी, फरवरी, सोमवार, मंगलवार, घंटा, मिनट आदि।

(घ) पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः पीपल, नीम, आम, देवदार, बरगद आदि।

(ङ) अनाजों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः बाजरा, गेहूँ, चावल, मटर, चना, जौ, उड़द आदि।

(च) द्रव पदार्थों के नाम, जैसेः पानी, घी, तेल आदि पुल्लिंग होते हैं।

(छ) शरीर के कुछ अवयवों के नाम जैसेः सिर, मस्तक, दाँत, कान,गला, तालू, नख, रोम आदि पुल्लिंग होते हैं।

(ज) देशों के तथा जल, स्थान और भूमंडल के भागों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, चीन, समुद्र, हिमालय, नाला, तालाब, आकाश, पाताल, थाना, कस्बा, घर, भवन, महल आदि।

(झ) धातुओं और रत्नों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः सोना, पीतल, ताँबा, सीस, टिन, पारा, हीरा, पुखराज आदि। अपवाद : चाँदी।

(ञ) वर्णमाला के अनेक अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसेः अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, य, र, ल, न, श, ष, स, ह आदि।

(ट) संस्कृत शब्द जिनके अंत में त, इत, आर, आप तथा न आते हैं, पुल्लिंग होते हैं। जैसेः गीत, गणित, विकार, परिताप, नियम आदि।

2. **स्त्रीलिंग पहचानने के नियमः**

(क) जिन संज्ञा शब्दों के अंत में ख, आई, हट, वट, त, ता और श प्रत्यय हों, वे प्रायः

स्त्रीलिंग होते हैं। जैसेः भूख, ईख, चीख, भलाई, आहट, सजावट, गीत, गुरुता, मालिश आदि।

(ख) आ, इ, ई, उ, ऊ, इया - ये प्रत्यय जिन शब्दों के साथ आते हैं, वे स्त्रीलिंग शब्द होते हैं। जैसेः लता, माला, गति, नदी, ऋतु, बालू, तराजू, कुटिया, चिड़िया आदि।

(ग) भाषा, लिपि और बोलियों के नाम स्त्री लिंग होते हैं। जैसेः हिंदी, तेलुगु, मराठी, कन्नड़, उड़िया, तमिल, देवनागरी, रोमन आदि।

(घ) तारीख और तिथियों के नाम स्त्री लिंग होते हैं। जैसेः पहली, दूसरी, प्रतिपदा, द्वितीय (दूज), पंचमी, नवमी, दशमी आदि।

(ङ) नदियों के नाम प्रायः स्त्री लिंग होते हैं। जैसेः गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा आदि।

(च) शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसेः आँख, वेणी, नाक, जीभ, कलाई, धमनी, हड्डी आदि।

(छ) कुछ नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसेः अश्विनी, भरणी, रोहिणी, कृत्तिका आदि।

शब्दों के साथ प्रत्यय लगा कर लिंग परिवर्तन करनाः

पुल्लिंग शब्द	**प्रत्यय**	**स्त्रीलिंग शब्द**
देव, घोड़ा, चाचा	+ ई	= देवी, घोड़ी, चाची
चूहा, बेटा	+ इया	= चुहिया, बिटिया
माली, तेली	+ इन	= मालिन, तेलिन
मोर, सिंह, शेर	+ नी	= मोरनी, सिंहनी, शेरनी
नौकर, सेठ	+ आनी	= नौकरानी, सेठानी
पंडित, ठाकुर	+ आइन	= पंडिताइन, ठकुराइन
नायक, लेखक	+ इका	= नायिका, लेखिका
सुत, पंडित	+ आ	= सुता, पंडिता
भगवान, श्रीमान	+ अती	= भगवती, श्रीमती

कुछ विशेष शब्द, जो स्त्रीलिंग में भिन्न होते हैं:

जैसेः पिता-माता, वर-वधू, नर-मादा, ससुर-सास, चाचा-चाची, पुरुष-स्त्री, बैल-गाय आदि।

कुछ शब्दों के साथ नर या मादा लगाकरः

जैसेः मक्खी - नर मक्खी, कोयल - नर कोयल, तितली - नर तितली, कौआ - नर कौआ, चील - नर चील, आदि।

6. वचन

वचन की परिभाषा

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, 'वचन' कहते है अथवा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

जैसेः तालाब में कमल खिला है।

लड़के मैदान में खेल रहे हैं।

ऊपर दिए गए वाक्यों में कमल शब्द एक होने का तथा लड़के शब्द उनके एक से अधिक होने का ज्ञान करा रहे हैं। अतः 'कमल' शब्द एकवचन है तथा लड़के शब्द बहुवचन है।

वचन का शाब्दिक अर्थ है- 'संख्यावचन'। 'संख्यावचन' को ही संक्षेप में 'वचन' कहते हैं। वचन के दो भेद हैं। वे हैंः (1) एकवचन और (2) बहुवचन

1) **एकवचनः** संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु के होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसेः लड़का, घोड़ा, नदी, झरना, खंभा, गाय, बच्चा, स्त्री, कपड़ा, माता, माला, पुस्तक, टोपी, बंदर, मोर आदि।

2) **बहुवचनः** शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसेः लड़के, घोड़ा, नदियाँ, झरने, खंभे, बच्चे, स्त्रियाँ, कपड़े, माताएँ, मालाएँ, पुस्तकें, टोपियाँ, बंदर, मोर आदि।

विशेषः

(1) आदरणीय व्यक्तियों के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- गुरु जी कल विद्यालय आयेंगे।

(2) संबंध दर्शाने वाली कुछ संज्ञाएँ एकवचन और बहुवचन में एक समान रहती हैं। जैसेः चाचा, नाना, मामा, दादा आदि।

(3) द्रव्यसूचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयोग होती हैं। जैसेः तेल, घी, पानी आदि।

(4) कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किए जाते हैं। जैसेः दर्शन, प्राण, आँसू, दाम आदि।

(5) पुल्लिंग ईकारांत, उकारांत और ऊकारांत शब्द दोनों वचनों में समान रहते हैं। जैसेः एक आदमी - दस आदमी, एक मुनि - दस मुनि आदि।

(6) बड़प्पन दिखाने के लिए कभी-कभी वक्ता अपने लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करता है। जैसे- हमने यह प्रण किया है।

(7) व्यवहार में 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग करते हैं। जैसेः 'आप' यहाँ बैठिए।

(8) जातिवाचक संज्ञाएँ दोनों ही वचनों में प्रयुक्त होती है। जैसे- 'घोड़ा' हिनहिना रहा है। परंतु धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। जैसे- 'सोना' महँगा है, 'चाँदी' सस्ती है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियमः

विभक्ति रहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियमः

आकारांत पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से:

एकवचन -	**बहुवचन**
लड़का -	लड़के
फीता -	फीते
तारा -	तारे

आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'अ' के स्थान पर 'एं' लगाने से:

एकवचन -	**बहुवचन**
आँख -	आखें
पुस्तक -	पुस्तकें
कलम -	कलमें

जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत में 'या' आता है, उनमें 'या' के ऊपर चंद्रबिंदु लगाने से:

एकवचन -	**बहुवचन**
डिबिया -	डिबियाँ
गुड़िया -	गुड़ियाँ
चिड़िया -	चिड़ियाँ

ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के 'इ' या 'ई' के स्थान पर 'इयाँ' लगाने से:

एकवचन -	**बहुवचन**
तिथि -	तिथियाँ
नारी -	नारियाँ
थाली -	थालियाँ

आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा-शब्दों के अंत में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है। जैसे:

एकवचन -	**बहुवचन**
माता -	माताएँ
शाखा -	शाखाएँ

इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' लगाने से:

एकवचन -	**बहुवचन**
नदी -	नदियाँ
लड़की -	लड़कियाँ
जाति -	जातियाँ

उकारांत व ऊकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में 'एँ' लगाते है। 'ऊ' को 'उ' में बदल देते हैं:

एकवचन -	**बहुवचन**
वस्तु -	वस्तुएँ
बहू -	बहुएँ

संज्ञा के पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में 'गण' 'वर्ग' 'जन' 'लोग' 'दल' आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन बना देते हैं। जैसे:

एकवचन -	**बहुवचन**
व्यापारी -	व्यापारीगण
मित्र -	मित्रवर्ग
सुधी -	सुधीजन

नोट: कुछ शब्द दोनों वचनों में एक जैसे रहते हैं। जैसे: पिता, योद्धा, चाचा, मित्र, फल, बाज़ार, अध्यापक, फूल, छात्र, दादा, राजा, विद्यार्थी आदि।

आकाश में बादल छाए हैं।

निर्दलीय नेता का चयन जनता द्वारा किया गया।

नल खुला मत छोड़ो, वरना सारा पानी खत्म हो जाएगा।

वचन की पहचान

- वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा क्रिया के द्वारा होती है। हिंदी भाषा में आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे: गाँधी जी हमारे राष्ट्रपिता हैं।
- कुछ शब्द सदैव एकवचन में रहते हैं। जैसे: आकाश में बादल छाए हैं।
- द्रव्यवाचक, भाववाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती हैं। जैसे: प्रेम ही पूजा है।
- कुछ शब्द सदैव बहुवचन में रहते हैं। जैसे: आजकल मेरे बाल बहुत टूट रहे हैं।

वचन संबंधी विशेष निर्देश:

- 'प्रत्येक' तथा 'हर एक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। जैसे: प्रत्येक मनुष्य यही चाहता है।
- दूसरी भाषाओं के तत्सम या तद्भव शब्दों का प्रयोग हिंदी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए। जैसे: अंग्रेजी के 'फुट' का बहुवचन 'फीट' होता है, किंतु हिंदी में इसका प्रयोग इस प्रकार होगा– 'दो फुट ऊँची दीवार है।'
- प्राण, दर्शन, आँसू, ओठ, दाम, लोग, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिंदी में बहुवचन में होता है। जैसे: आपके दर्शन पाकर हम धन्य हो गए।
- द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे: उसके पास ढेर सारा सोना है।

7.कारक

भाषा में कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। वाक्य रचना कारकों के बिना अधूरी है। वाक्य में शब्दों के बीच के संबंध को कारक ही बनाकर रखते हैं। वास्तव में कारक शब्दों के बीच सेतु का काम करते हैं। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे: हमें कारक को समझने के लिए विभक्ति के बारे में जानना अनिवार्य है। विभक्ति का अर्थ कारक चिह्न है। वाक्य की क्रिया अथवा अन्य शब्दों के साथ संज्ञा का संबंध जिन चिह्नों से पता किया जाता है उन्हें विभक्ति कहते हैं। हिंदी में आठ प्रकार के कारक हैं-

कारक का नाम	**कारक का चिह्न (विभक्ति)**
1) कर्ता कारक	- ने
2) कर्म कारक	- को
3) करण कारक	- से, के द्वारा, के साथ
4) संप्रदान कारक	- को, के लिए
5) अपादान कारक	- से
6) संबंध कारक	- में, पर
7) अधिकरण कारक	- का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
8) संबोधन कारक	- अरे, अरी, रे, ओ, हे, री

जैसे: तालाब में कमल खिला है।
लड़के मैदान में खेल रहे हैं।

1) **कर्ता कारक:** 'कर्ता' शब्द का अर्थ है- 'करने वाला।' दूसरे शब्दों में, जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है, वह कर्ता कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'ने' है। 'ने' चिह्न का प्रयोग वर्तमान काल और भविष्य काल में नहीं होता है। इसका प्रयोग सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में होता है।

जैसे : राम <u>ने</u> रावण को मारा।

इस वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें 'ने' कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न है। इस वाक्य में 'मारा' भूतकाल की क्रिया है। 'ने' का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है।

भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी 'ने' चिह्न नहीं लगता है। जैसे- वह हँसा।

वर्तमान काल एवं भविष्य काल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ 'ने' चिह्न का प्रयोग नहीं होता है।

जैसे: वह फल खाता है। वह फल खाएगा।

2) **कर्म कारक :** क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इस कारक का चिह्न 'को' है।

जैसेः रजनी पौधों को पानी दे रही है।

पानी प्राप्त करने वाला 'पौधा' है, इसलिए 'पौधा' कर्म है। चूँकि मारने की क्रिया का फल साँप पर पड़ा है। इस प्रकार इस कारक चिह्न 'को' से वाक्य के कर्म का पता चलता है। अतः यह कर्म कारक है।

3) **करण कारकः** करण का अर्थ है- 'साधन'। वाक्य की क्रिया को संपन्न करने के लिए जिस निर्जीव संज्ञा का प्रयोग साधन के रूप में किया जाता है, वह संज्ञा करण कारक कही जाती है।

इसका कारक चिह्न 'से' है।

जैसे : वह मोटरगाड़ी से जाता है।

इस वाक्य में मोटरगाड़ी से साधन का बोध होता है।

4) **संप्रदान कारकः** संप्रदान का अर्थ है- 'देना'। यानी कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है, अथवा जिसे कुछ देता है। इस कारक का चिह्न 'को' और 'के लिए' हैं।

जैसेः बच्चे को बुलाओ। (कारक 'को' है।)

देश के लिए सैनिक सेवा करते है। (कारक 'के लिए' है।)

5) **अपादान कारकः** जब वाक्य की किसी संज्ञा के क्रिया के द्वारा अलग होने, तुलना होने या दूरी होने का भाव प्रकट होता है, वहाँ अपादान कारक होता है। इस कारक का चिह्न 'से' है।

जैसेः पेड़ से फल गिरा।

इस वाक्य में पेड़ से फल का गिरना यह बताता है कि पेड़ से फल अलग हुआ है। यानी इस वाक्य में 'से' अपादानकारक है।

6) **संबंध कारकः** शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो, वह संबंध कारक कहलाता है। इस कारक के चिह्न 'का, के, की, रा, रे, री' हैं।

जैसेः यह रामू का कुत्ता है।

इस वाक्य में 'रामू का कुत्ता से संबंध प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ संबंध कारक है।

7) **अधिकरण कारकः** शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इस कारक का चिह्न 'में', 'पर' हैं।

जैसेः घर में माँ हैं।

पेड़ पर बंदर है।

इन वाक्यों में 'में' और 'पर' अधिकरण कारक हैं। इसमें प्राणी की स्थिति का पता चलता है।

8) **संबोधन कारकः** जिससे किसी को बुलाने या सचेत करने का भाव प्रकट हो उसे संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन के लिए विस्मयादि चिह्न (!) लगाया जाता है।

जैसेः अरे भैया! क्यों चिल्ला रहे हो?

हे अभिनव! यहाँ आओ।

कारक विभक्तियों का मेल सर्वनाम से होने के बाद सर्वनाम इस प्रकार बदलते हैं ।

सर्वनाम			कर्ता कारक	कर्म कारक	करण कारक		संप्रदान कारक		अपादान कारक	संबंध कारक			अधिकरण कारक	
										पु.ए.	पु.ब.	स्त्री ए/ब.		
			ने	को	से	के द्वारा	के लिए	को	से	का	के	की	में	पर
पुरुष वाचक सर्वनाम	(उत्तम पुरुष)	**मैं** एक वचन	मैं ने	मुझ को मुझे	मुझ से	मेरे द्वारा	मेरे लिए	मुझ को मुझे	मुझ से	मेरा	मेरे	मेरी	मुझ में	मुझ पर
		हम बहु वचन	हम ने	हम को हमें	हम से	हमारे द्वारा	हमारे लिए	हम को हमें	हम से	हमारा	हमारे	हमारी	हम में	हम पर
	(मध्यम पुरुष वाचक)	**तू** एक वचन	तू ने	तुझ को तुझे	तुझ से	तेरे द्वारा	तेरे लिए	तुझ को तुझे	तुझ से	तेरा	तेरे	तेरी	तुझ में	तुझ पर
		तुम विधि वाचक बहु वचन	तुम ने	तुम को तुम्हें	तुम से	तुम्हारे द्वारा	तुम्हारे लिए	तुम को तुम्हें	तुम से	तुम्हारा	तुम्हारे	तुम्हारी	तुम में	तुम पर
		आप गौरव-एकवचन, बहुवचन	आप ने	आप को	आप से	आप के द्वारा	आप के लिए	आप को	आप से	आपका	आपके	आपकी	आप में	आप पर
	(अन्य पुरुष वाचक)	**वह** एक वचन	उस ने	उसको उसे	उस से	उसके द्वारा	उस केलिए	उसको उसे	उस से	उसका	उसके	उसकी	उस में	उस पर
		वे बहु वचन	उन्होंने	उनको उन्हें	उन से	उनके द्वार	उनके लिए	उनको उन्हें	उन	उनका	उनके	उनकी	उन में	उन पर
		यह एक वचन	इस ने	इस को इस	इस से	इसके द्वारा	इसके लिए	इसको इसे	इस से	इसका	इसके	इसकी	इस में	इस पर
		ये बहु वचन	इन्होंने	इनको इन्हें	इन से	इनके द्वारा	इनके लिए	इनको इन्हें	इन से	इनका	इनके	इनकी	इन में	इन पर
अनिश्चय वाचक सर्वनाम	(संबंध वाचक सर्वनाम)	**जो** एक वचन	जिसने	जिसको जिसे	जिस से	जिसके द्वारा	जिसके लिए	जिसको जिसे	जिस से	जिसका	जिसके	जिसकी	जिस में	जिस पर
		जो बहु वचन	जिन्होंने	जिनको जिन्हें	जिन से	जिनके द्वारा	जिनके लिए	जिनको जिन्हें	जिन से	जिनका	जिनके	जिनकी	जिन में	जिन पर
प्रश्न वाचक सर्वनाम		**कौन** (क्या)एक वचन	किस से	किसको किसे	किस से	किसके द्वारा	किसके लिए	किसको किसे	किस से	किसका	किसके	किसकी	किस में	किस पर
		कौन बहु वचन	किन्हें ने	किनको किन्हें	किन से	किनके द्वारा	किनके लिए	किनको किन्हें	किन से	किनका	किनके	किनकी	किन में	किन पर

8. वाक्य संरचना

दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा-पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं। उदाहरण के लिए 'वह रामू का घर है।' यह एक वाक्य है क्योंकि इसका पूरा-पूरा अर्थ निकलता है। किंतु 'रामू का' वाक्य नहीं है क्योंकि इसका अर्थ नहीं निकलता है।

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. सरल वाक्य/साधारण वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्रित/मिश्र वाक्य

1. **सरल वाक्य/साधारण वाक्यः** वाक्य के दो अंग होते हैं। वे हैं- उद्देश्य, विधेय। ऐसे वाक्य जिनमें इन दोनों की प्रधानता होती है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि इन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है, जैसे- सुरेश पढ़ता है। सलीम ने भोजन किया। इन वाक्यों में 'सुरेश' और 'सलीम' उद्देश्य हैं। जबकि 'पढ़ता है' और 'भोजन किया' विधेय है।

21. **संयुक्त वाक्यः** जिन वाक्यों में दो-या दो से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं, जैसे- वह सुबह गया और शाम को लौट आया। प्रिय बोलो, पर असत्य नहीं। इन वाक्यों में और, पर जैसे समुच्चय बोधक शब्द हैं। ऐसे शब्द संयुक्त वाक्यों का निर्माण करते हैं।

3. **मिश्रित वाक्य/मित्र वाक्यः** जिन वाक्यों में एक मुख्य या प्रधान वाक्य हो और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अतिरिक्त एक अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं, जैसे- पुलिस ने देखा कि चोर भाग रहे थे।
यदि अभ्यास करोगे, तो सफल बनोगे।
मैं मानता हूँ कि हमारा भारत सबसे आगे रहेगा।
इन वाक्यों में मुख्य या प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्य हैं। वे इस प्रकार हैं-

मुख्य या प्रधान वाक्य	**- आश्रित या उपवाक्य**
पुलिस ने देखा कि	- चोर भाग रहे थे।
यदि अभ्यास करोगे	- तो सफल बनोगे।
मैं मानता हूँ कि	- हमारा भारत सबसे आगे रहेगा।

इस तरह मुख्य या प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्य के मिश्रण से मिलकर बनने वाले वाक्य को मिश्रित या मिश्र वाक्य कहते हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं-

1.	विधानार्थक वाक्य	2.	आज्ञार्थक वाक्य	3.	इच्छार्थक वाक्य
4.	प्रश्नार्थक वाक्य	5.	संदेहार्थक वाक्य	6.	संकेतवाचक वाक्य
7.	विस्मयबोधक वाक्य	8.	निषेधार्थक वाक्य		

1. **विधानार्थक वाक्यः** वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है या जिससे किसी बात या कार्य के होने का बोध होता है, वह विधानार्थक वाक्य कहलाता है।

   उदाहरणः तेलंगाणा एक राज्य है।

   राधा पढ़ती है।

   के. चंद्रशेखर राव तेलंगाणा के प्रथम मुख्यमंत्री हैं।

2. **आज्ञार्थक वाक्यः** वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार की आज्ञा दी जाती है या प्रार्थना की जाती है, वह आज्ञार्थक वाक्य कहलाता हैं।

   जैसे- तुम उधर जाओ। आप इधर आइए। उन्हें बुलाइए।

3. **इच्छार्थक वाक्यः** जिन वाक्यों में किसी इच्छा या आकांक्षा का बोध होता है, उन्हें इच्छार्थक वाक्य कहते हैं।

   जैसे- तेलंगाणा स्वर्णिम तेलंगाणा बनें।

   चारों ओर शांति होनी चाहिए।

   आपकी यात्रा मंगलमय हो।

4. **प्रश्नार्थक वाक्य :** वह वाक्य जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रश्न किया जाता है, वह प्रश्नार्थक वाक्य कहलाता है।

   जैसे- भारत के प्रधानमंत्री कौन हैं?

   बतुकम्मा को राज्य पर्व क्यों कहा जाता है?

   तेलंगाणा की राजधानी क्या है?

5. **संदेहार्थक वाक्यः** जिन वाक्यों में संदेह का बोध होता है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे- शायद कल हो न हो। शायद कल वर्षा होती होगी।

6. **संकेतवाचक वाक्यः** जिन वाक्यों में किसी संकेत का बोध होता है, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

   जैसे- बादल आते तो वर्षा होती।

7. **विस्मयबोधक वाक्यः** वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की गहरी अनुभूति, विस्मय या आश्चर्य का प्रदर्शन किया जाता है, वह विस्मयादिवाचक वाक्य कहलाता है।

   जैसे- वाह! तेलंगाणा कितना सुंदर राज्य है। हाय! वह भूख से तड़प रहा है।

8. **निषेधार्धक वाक्यः** जिन वाक्यों से कार्य के न होने का भाव प्रकट होता है, उन्हें निषेधार्थक वाक्य कहते हैं।

9. काल

काल :

'काल' क्रिया का वह रूप है, जिससे उसके होने अथवा करने के समय तथा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता है। जैसेः वह पढ़ता है। राधा नाच रही है। वे खा चुके थे।

काल के भेदः काल के तीन भेद हैं:

1. भूत काल
2. वर्तमान काल
3. भविष्य काल

1. **भूत काल :**

   जिस क्रिया के कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसेः वह सोया था। सुनीता गयी। उसने गाना गाया था।

'ने' प्रत्यय के प्रयोग के नियमः

1. 'ने' प्रत्यय का प्रयोग कर्ता के सकर्मक रूप में भूतकाल में होता है। जैसेः राम ने पुस्तक पढ़ी।
2. कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय होने पर क्रिया के लिंग और वचन कर्म के अनुसार बदलते हैं। जैसेः विमला ने कपड़े धोये।
3. तीसरा नियम : कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय और कर्म के साथ 'को' प्रत्यय लगाने पर क्रिया हमेशा पुल्लिंग एकवचन में होती है। जैसेः सीता ने अपनी बहिन को देखा।
4. चौथा नियमः ला, भूल, बोल आदि क्रियाएँ सकर्मक, होने पर भी ने प्रत्यय नहीं लगेगा। जैसेः सभापति लोगों से बोले।
5. पाँचवाँ नियमः लग, सक, चुक आदि सहायक क्रियाओं के साथ, चाहे उनकी मूल क्रियाएँ सकर्मक होने पर भी ने प्रत्यय नहीं लगेगा। जैसेः सीता पुस्तक खरीद सकी।

2. **वर्तमान काल :**

   क्रिया अथवा क्रियाओं की निरंतरता को 'वर्तमान' काल कहते हैं। जैसेः सोमू पढ़ता है। मैं खेल रहा हूँ।

3. **भविष्य काल :**

   भविष्य में होने वाली क्रिया को भविष्य काल की क्रिया कहते है। जैसेः मैं लिखूँगा। तुम महाविद्यालय जाओगे।

10. संधि

संधि (सम् + धि) शब्द का अर्थ है 'मेल' । दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है। जैसे - सम् + तोष = संतोष; देव + इंद्र = देवेंद्र; भानु + उदय = भानूदय।

संधि के भेद

संधि तीन प्रकार की होती हैं -

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि :-

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर संधि कहते हैं।

जैसे - चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय।

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

(क) दीर्घ संधि, (ख) गुण संधि, (ग) वृद्धि संधि

(घ) यण संधि, (ङ) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधिः

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ,इ,उ, आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे-

(अ) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ = आ → धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

अ + आ = आ → हिम + आलय = हिमालय

अ + अ = आ → पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

आ + अ = आ → विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

आ + आ = आ → विद्या + आलय = विद्यालय

(आ) इ और ई की संधि

इ + इ = ई → रवि + इंद्र = रवींद्र; मुनि + इंद्र = मुनींद्र

इ + ई = ई → गिरि + ईश = गिरीश; मुनि + ईश = मुनीश

ई + इ = ई → मही + इंद्र = महींद्र; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई → नदी + ईश = नदीश; मही + ईश = महीश

(ग) उ और ऊ की संधि

उ + उ = ऊ → भानु + उदय = भानूदय; विधु + उदय = विधूदय

उ + ऊ = ऊ → लघु + ऊर्मी = लघूर्मि; सिघू + ऊर्मि = सिंधूर्मि

ऊ + उ = ऊ → वधू + उत्सव = वधूत्सव; वधू + उल्लेख = वधूल्लेख

ऊ + ऊ = ऊ → भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

(ख) गुण संधिः

इसमें अ, आ के आगे इ,ई हो तो ए; उ,ऊ, हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे-

(अ) अ + इ = ए; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए; महा + ईश = महेश

(आ) अ + उ = ओ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश;

आ + ऊ = ओ; महा + उत्सव = महोत्सव

अ + ऊ = ओ; जल + ऊर्मी = जलोर्मि

आ + ऊ = ओ; महा + ऊर्मी = महोर्मि।

(इ) अ + ऋ = अर्; अर् देव + ऋषि= महर्षि

(ग) वृद्धि संधिः

अ, आ, का, ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे-

(अ) अ + ए = ऐ; एक + एक = एकैक;

अ + ए = ऐ; मत + ऐक्स = मतैक्य

आ + ए = ऐ; सदा + ऐक्स = सदैव

आ + ऐ = ऐ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(आ) अ + ओ = औ; वन + औषधि= वनौषधि;

आ + ओ = औ; महा + औषधि = महौषधि;

अ + औ = औ; परम+ औषधि= परमौषधि;

आ + औ = औ; महा + औषध= महौषध

(घ) यण संधिः

(अ) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई का 'य्' हो जाता है।

(आ) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ का 'व्' हो जाता है।

(इ) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ का 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ + अ = य् + अ; यदि + अपि = यद्यपि

ई + आ = य् + आ; इति + आदि = इत्यादि

ई + अ = य् + अ; नदि + अर्पण = नद्यर्पण

ई + आ = य् + आ; देवी + आगमन = देव्यागमन

(ई) उ + अ = व् + अ; अनु + अय = अन्वय

उ + आ = व् + आ; सु + आगत = स्वागत

उ + ए = व् + ए; अनु + एषण = अन्वेषण

ऋ + अ = र् + आ; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

(ङ) अयादि संधिः

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः आय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(अ) ए + अ = अय् + अ; ने + अन = नयन

(आ) ऐ + अ = आय् + अ; गै + अक = गायक

(इ) ओ + अ = अव् + अ; पौ + अन = पावन

(ई) औ + अ = आव् + अ; पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ; नौ + इक = नाविक

2. व्यंजन संधि :-

व्यंजन के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे- शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। उत् + ज्वल = उज्ज्वल।

(अ) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् का ग् च् का ज्, ट् का ड् और प् का ब् हो जाता है। जैसे -

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज।

क् + ई = गी वाक् + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत

ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

(आ) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवीं वर्ण हो जाता है। जैसे-

क् + म = वक् + मय = वाङ्मय

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास

त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

(इ) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे-

त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना

त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति

त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म

(ई) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर
ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे-

त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण

त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन

त् + ट = ट्ट तात् + टीका = तट्टीका

त् + ड = ड्ड उत् + डयन = उड्डयन

त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास

(उ) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे-

म् + क = सम् + कल्प = संकल्प

म् + च = सम् + चय = संचय

म् + त = सम् + तोष = संतोष

म् + ब = सम् + बंध = संबंध

म् + प = सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ऊ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे-

म् + म = म्म सम् + मति = सम्मति

म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान

3. विसर्ग संधि :-

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

(अ) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण, अथवा य,र,ल,व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे-

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

अधः + गति = अधोगति; मनः + वल = मनोबल

(आ) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे-

निः + आहार = निराहार; निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

(इ) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

निः + चल = निश्चल; निः + छल = निश्छल

दुः + साहस = दुस्साहस

(उ) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे-

निः + कलंक = निष्कलंक; चतुः + पाद = चतुष्पाद; निः + फल = निष्फल

(ऊ) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे-

निः + रोग = निरोग; निः + रस = नीरस

(ऋ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे-

अंतः + करण = अंतःकरण

11. समास

समास का तात्र्य है 'संक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे- 'रसोई के लिए घर'। इसे हम 'रसोईघर' भी कह सकते हैं।

सामासिक शब्द

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे-राजपुत्र।

समास-विग्रह

सामासिक शब्दों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है। जब समस्त पदों को पृथक्-पृथक् किया जाता है तो उसे समास विग्रह कहते हैं। जैसेः गंगाजल - गंगा का जल।

पूर्वपद और उत्तरपद

समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।

समास के भेद

समास के छः भेद हैं:

1) अव्ययीभाव, 2) तत्पुरुष, 3) द्विगु, 4) द्वंद्व 5) कर्मधारय 6) बहुव्रीहि

1) **अव्ययी भाव**

जिस समास का पूर्व पद प्रधान हो, और अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे- यथामति (मति के अनुसार), आमरण (मृत्यु तक) इनमें यथा और आ अव्यय हैं। जहाँ एक ही शब्द की बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है जैसे- दिनोंदिन, रातोंरात, घर घर, हाथों-हाथ आदि।

कुछ अन्य उदाहरण-

आजीवन - जीवन - भर

यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार

यथाविधि - विधि के अनुसार

यथाक्रम - क्रम के अनुसार

भरपेट - पेट भरकर

प्रतिदिन - प्रत्येक दिन

निडर - डर के बिना

प्रतिवर्ष - हर वर्ष

आमरण - मरण तक

अव्ययीभाव समास की पहचानः

इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है अर्थात समास लगाने के बाद उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता। जैसे- ऊपर के समस्त शब्द है।

2) **तत्पुरुष समास**

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद गौण हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे-

तुलसीदासकृत = तुलसीदास द्वारा कृत (रचित)

सूचना : विग्रह में जो कारक प्रकट हो उसी कारक वाला वह समास होता है।

विभक्तियों के नाम के अनुसार तत्पुरुष समास के छह भेद हैं-

कर्म तत्पुरुष (द्वितीय कारक चिह्न)

(गिरहकट - गिरह को काटने वाला)

करण तत्पुरुष (मनचाहा - मन से चाहा)

संप्रदान तत्पुरुष (रसोईघर - रसोई के लिए घर)

अपादान तत्पुरुष (देशनिकाला -देश से निकाला)

संबंध तत्पुरुष (गंगाजल - गंगा का जल)

अधिकरण तत्पुरुष (नगरवास - नगर में वास)

3) **द्विगु समास**

जिस समास का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इससे समूह अथवा समाहार का बोध होता है। जैसे-

समास पद	**समास-विग्रह**
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह
दोपहर	दो पहरों का समाहार
त्रिलोक	तीन लोकों का समाहार
चौमासा	चार मासों का समूह
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह
शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षों) का समूह
अठन्नी	आठ आनों का समूह
सतसई	सात सौ का संग्रह

4) **द्वंद्व समास**

जिस समास के दोनों पद प्रधान होते हैं तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या' एवं योजक चिह्न लगते हैं, वह द्वंद्व समास कहलाता है।

समास पद	समास-विग्रह
माता-पिता	माता और पिता
भाई-बहन	भाई और बहन
राजा-रानी	राजा और रानी
सुख-दुःख	सुख और दुःख
रात-दिन	रात और दिन
घर-द्वार	घर और द्वार
अपना-पराया	अपना और पराया

5) **कर्मधारय समास**

जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद व उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है।

जैसे- भवसागर (संसार रूपी सागर), घनश्याम (बादल जैसे काला)

समास पद	समास-विग्रह
चंद्रमुख	चंद्र जैसा मुख
कमलनयन	कमल के समान नयन
देहलता	देह रूपी लता
दहीबड़ा	दही में डूबा बड़ा
नीलकमल	नीला कमल

6) **बहुव्रीहि समास**

जिस समास के दोनों पद अप्रधान हों और समस्तपद के अर्थ के अतिरिक्त कोई सांकेतिक अर्थ (अन्य अर्थ) प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे-

समास पद	समास-विग्रह
दशानन	दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण
नीलकंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव
सुलोचना	सुंदर है लोचन जिसके अर्थात् मेघनाद की पत्नी
पीतांबर	पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण
लंबोदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेशजी
जलज	जल में जन्म लेने वाला (कमल)
श्वेतांबर	श्वेत है जिसके अंबर (वस्त्र) अर्थात् सरस्वती जी
पंकज	पंक (कीचड़) में जन्म लेने वाला (कमल)

12. विराम चिह्न

विराम' का अर्थ है - ठहराव, रुकना या विश्राम। भाषा द्वारा जब हम अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करते हैं, तब एक विचार या कुछ अंश प्रकट करने के बाद थोड़ा विराम लेते हैं। इसी को हम 'विराम चिह्न' द्वारा व्यक्त करते हैं। हर्ष, विषाद,घृणा, शोक इत्यादि को भी प्रकट करने के लिए शब्दों के अंत में चिह्न लगाए जाते हैं। ये सब 'विराम चिह्न' कहलाते हैं। हिंदी में निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग होता है -

1.	अल्प विराम	,
2.	अद्र्ध विराम	;
3.	पूर्ण विराम	।
4.	प्रश्नबोधक	?
5.	विस्मयादि बोधक	!
6.	निर्देशक चिह्न	___
7.	योजक चिह्न	-
8.	कोष्ठक चिह्न	( )
9.	उद्धरण चिह्न	" "
10.	विवरण चिह्न	:-
11.	लाघव चिह्न	०
12.	त्रुटि चिह्न	^

1. अल्पविराम - इसका प्रयोग वाक्य के मध्य में अद्र्ध विराम से कम समय रुकने के लिए किया जाता है।

2. अद्र्धविराम- यदि उपवाक्य का आरंभ वरन्, पर, परंतु क्योंकि, इसलिए तो भी इत्यादि शब्दों से हो, तो उसके पहले अर्द्धविराम का प्रयोग किया जाता है।

3. पूर्णविराम - इसका अर्थ है पूरी तरह ठहराव (रुकना)। समान्यतः जहाँ वाक्य पूरा होता है, वहाँ प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर सभी वाक्यों में पूर्णविराम चिह्न आवश्यक है।

4. प्रश्नबोधक - वाक्य में प्रश्न पूछने पर हमेशा प्रश्नबोधक चिह्न का प्रयोग होता है।

5. विस्मयादिबोधक - हर्ष, शोक, घृणा उल्लास, विस्मय (आश्चर्य) इत्यादि भावों को प्रकट करने के लिए शब्दों के आगे इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे-अफसोस!मैं आपकी कोई सहायता

नहीं कर सकता। वाह-वाह! कितना मधुर कंठ है। अहा! कैसा सुहावना मौसम है। नीच!तूने उसे मार डाला।

6. निर्देशक चिह्न - इसका प्रयोग प्रायः निर्देश के लिए होता है। निर्देशक चिह्न (-) है। यह योजक चिह्न से दुगुना बड़ा होता है।

7. योजक चिह्न - इसे विभाजक चिह्न भी कहते हैं।

8. कोष्ठक चिह्न - किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए एवं वक्ता के मनोभावों को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

9. उद्धरण चिह्न - किसी अन्य के कथन को बिना किसी परिवर्तन के हुबहू रखने के लिए इसका प्रयोग होता है।

10. विवरण चिह्न - जब किसी पद की व्याख्या करनी होती है अथवा किसी के संबंध में विस्तार से कुछ कहना होता है, तब इस चिह्न (:) का प्रयोग होता है।

    (1) लोप निदेशक चिह्न - (.......) कोई उद्धरण देते समय कभी-कभी वाक्य के कुछ (अवांछित) अंश को छोड़ दिया जाता है। उसी छोड़े गए स्थान पर लोप चिह्न (.......) का प्रयोग होता है।

11. लाघव चिह्न - जिन प्रसिद्ध शब्दों का प्रयोग बार-बार करना हो, उनके प्रथम अक्षर के बाद लाघव चिह्न (०) का प्रयोग किया जाता है; जैसे - डॉ. (डॉक्टर), पी.एच.डी. (डॉक्टर) ऑफ फिलॉसफी), प्रो. (प्रोफेसर)। प्रो. रामशरण शर्मा, डॉ. नगेंद्र। नाम का संक्षिप्त रूप-पी.टी.उषा, के.पी.सक्सेना, डॉ आर.के. नारायण। दक्षिण भारतीयों के नामों में लाघव चिह्न का प्रयोग प्रायः होता है। जैसे-चैत्री वी., सेंथिल पांडियन सी.।

13. त्रुटि चिह्न (‸) - वाक्य में कोई पद छूट जाने पर इसका प्रयोग कर ऊपर उन पदों को लिखा जाता है।

13. मुहावरे - लोकोक्तियाँ (कहावतें)

मुहावरे :-

भाषा की सुंदर रचना हेतु मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग आवश्यक माना जाता है। ये दोनों भाषा को सजीव, प्रवाहपूर्ण एवं आकर्षक बनाने में सहायक होते हैं। यही कारण है कि हिंदी भाषा में विभिन्न मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अक्सर प्रयोग होते हुए देखा गया है।

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है- अभ्यास। मुहावरा अति संक्षिप्त रूप में होते हुए भी बड़े भाव या विचार को प्रकट करता है जबकि 'लोकोक्तियों' को 'कहावतों' के नाम से भी जाना जाता है।

साधारणतया लोक में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति नाम दिया जाता है। कुछ लोकोक्तियाँ अंतर्कथाओं से भी संबंध रखती हैं, जैसे भगीरथ प्रयास अर्थात् जितना परिश्रम राजा भगीरथ को गंगा के अवतरण के लिए करना पड़ा, उतना ही कठिन परिश्रम करने से सफलता मिलती है। संक्षेप में कहा जाए तो मुहावरे वाक्यांश होते हैं, जिनका प्रयोग क्रिया के रूप में वाक्य के बीच में किया जाता है, जबकि लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं, जिनमें एक पूरा भाव छिपा रहत ाहै।

मुहावरा:

विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते है। मुहावरा पूर्ण वाक्य नहीं होता, इसीलिए इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। मुहावरे का प्रयोग करना और ठीक-ठीक अर्थ समझना बड़ा कठिन है, यह अभ्यास से ही सीखा जा सकता है।

लोकोक्ति:

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँहचढ़े वाक्यों को लोकोक्तियाँ कहते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभवों का निचोड़ या सार होता है। इनकी उत्पत्ति एवं रचनाकार ज्ञात नहीं होते।

लोकोक्तियाँ आम जनमानस द्वारा स्थानीय बोलियों में हर दिन की परिस्थितियों एवं संदर्भों से उपजे वैसे पद एवं वाक्य होते हैं जिनका किसी खास समूह, उम्र वर्ग या क्षेत्रीय दायरे में प्रयोग किया जाता है। इनमें स्थान विशेष के भूगोल, संस्कृति, भाषाओं का मिश्रण इत्यादि की झलक मिलती है। लोकोक्तियाँ वाक्यांश न होकर स्वतंत्र वाक्य होती हैं।

मुहावरों और लोकोक्तियों में अंतर:

लोकोक्ति का वाक्य में ज्यों का त्यों उपयोग होता है। मुहावरे का उपयोग क्रिया के अनुसार बदल जाता है लेकिन लोकोक्ति का प्रयोग करते समय इसे बिना बदलाव के रखा जाता है। कभी-कभी काल के अनुसार परिवर्तन संभव है।

कुछ लोकप्रिय मुहावरे

सं. मुहावरा (अर्थ)	वाक्य प्रयोग
1. अंग-अंग ढीला होना (थक जाना।)	अधिक काम करने पर अंग-अंग ढीला पड़ गया।
2. अंधे की लाठी (एक मात्र सहारा)	बूढ़े पिता के लिए बेटा अंधे की लाठी है।
3. अँगूठा दिखाना (मना करना या चिढ़ाना)	राम ने साइकिल माँगी तो शाम ने उसे अँगूठा दिखाया।
4. अँगूठा छाप होना (अनपढ़ होना)	बच्चे पाठशाला नहीं जाने पर अँगूठा छाप बन जाएँगे।
5. अपना रास्ता नापना (चले जाना)	रामू सोनू से बात नहीं करना चाहता था इसलिए उसने अपना रास्ता नाप लिया।
6. अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना (अपना नुकसान करना)	मोहन ने अच्छी नौकरी छोड़कर अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार ली।
7. आँखों का तारा (बहुत प्रिय)	माँ के लिए बेटा आँखों का तारा होता है।
8. आँख खुलना (होश में आना)	सच्चाई का पता चलते ही रामू की आँखें खुल गईं।
9. आँखें दिखाना (क्रोध करना)	गलत काम करने पर पिताजी मुझे आँखे दिखाते हैं।
10.आँखों में धूल झोंकना(धोखा देना)	चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर गायब हो गया।
11.आकाश-पाताल एक करना (बहुल प्रयत्न करना)	माता-पिता बच्चों की पढ़ाई के लिए आकाश-पाताल एक कर देते हैं।
12.आग में घी डालना (क्रोध को और भड़कना)	हमें लड़ते हुए लोगों के बीच आग में घी डालने का काम नहीं करना चाहिए।
13.इशारे पर नाचना (वश में हो जाना)	बंदर मदारी के इशारे पर नाचता है।
14.ईद का चाँद होना (बहुत दिनों के बाद दिखाई देना)	रामू व्यस्त होने के कारण अपनी बहन के लिए ईद का चाँद हो गया है।
15.एक और एक ग्यारह (एकता में बल)	कुछ लोग एक और एक ग्यारह होते हैं।
16.कमर कसना (किसी काम के लिए तैयार होना)	रामू परीक्षा के लिए कमर कसकर तैयारी कर रहा है।

17.कुएँ का मेंढक (अल्पज्ञ)	राजू ने रामू से कहा कि घर से बाहर निकलोगे तो ही दुनिया के बारे में पता चलेगा, नहीं तो कुएँ का मेंढ़क ही रह जाओगे।
18.खाल खींचना (दंड देना)	गलती करने पर मालिक अपने नौकर की खाल खींच देता है।
19.खून पसीना एक करना (कठिन परिश्रम करना)	अध्यापक छात्रों की पढ़ाई के लिए खून पसीना एक करते हैं।
20.गड़े मुर्दे उखाड़ना (पुरानी बातें निकालना)	रामू सदा गड़े मुर्दे उखाड़ता है। इसीलिए झगड़ा होता है।
21.घोड़े बेचकर सोना (आराम करना)	रामू को किसी जरूरी काम से बाहर जाना था फिर भी वह घोड़े बेचकर सो रहा है।
22.जान हथेली पर रखना (जीवन को खतरे में डालना)	अभिमन्यु जान हथेली पर रखकर चक्रव्यूह में घुस गया।
23.तारे तोड़ लाना(मुश्किल काम करना)	पिता अपने पुत्र की इच्छा पूरी करने के लिए तारे तोड़ने के लिए भी तैयार रहता है।
24.पेट में चूहे कूदना (बहुत भूख लगना)	भोजन का समय होने पर विजय के पेट में चूहे कूदने लगे।
25.हौंसला बढ़ाना (हिम्मत बढ़ाना)	खेल में साथी एक-दूसरे का हौंसला बढ़ाते हैं।

कुछ लोकप्रिय लोकोक्तियाँ

सं. मुहावरा (अर्थ)	**वाक्य प्रयोग**
1. अधजल गगरी छलकत जाय (जिसके पास थोड़ा ज्ञान होता हैं, वह उसका प्रदर्शन या आडंबर करता है।)	मोहन दसवीं पास करके स्वयं को बहुत बड़ा विद्वान समझ रहा है। यह तो वही बात हुई कि अधजल गगरी छलकत जाय।
2. अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत (समय निकल जाने के पश्चात् पछताना व्यर्थ होता है।)	सारे साल विनय मस्ती करता रहा, अध्यापकों और अभिभावक की एक न सुनी। अब बैठकर रो रहा है। ठीक ही कहा गया है- अब पछताए होत क्या जब जिड़ियाँ चुग गई खेत।

3. अन्धा क्या चाहे दो आँखें (मनचाही बात हो जाना)	अभी मैं विद्यालय से अवकाश लेने की सोच ही रही थी कि मेघा ने मुझे बताया कि कल विद्यालय में अवकाश है। यह तो वही हुआ- अंधा क्या चाहे दो आँखें।
4. अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा (जहाँ मालिक मूर्ख हो वहाँ सद्गुणों का आदर नहीं होता।)	राजेश की कंपनी में चपरासी और मैनेजर का वेतन बराबर है, वहाँ यह कहावत चरितार्थ होती है कि अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा।
5. अक्ल बड़ी या भैंस (बुद्धि शारीरिक शक्ति से अधिक श्रेष्ठ होती है।)	यह कहानी तो सबने पढ़ी ही होगी कि खरगोश ने अपनी अक्ल से शेर को कुएँ में कूदा दिया था। इसीलिए कहा गया कि अक्ल बड़ी या भैंस।
6. अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है (अपने घर या गली-मोहल्ले में बहादुरी दिखाना)	तुम अपने मोहल्ले में बहादुरी दिखा रहे हो। अरे, अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है।
7. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू (अपनी बड़ाई या प्रशंसा स्वयं करने वाला)	रामू हमेशा अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता है।
8. आ बैल मुझे मार (स्वयं मुसीबत मोल लेना)	लोग तुम्हारी जान के पीछे पड़े हुए है और तुम आधी-आधी रात तक अकेले बाहर घूमते रहते हो। यह तो वही बात हुई- आ बैल मुझे मार।
9. इस हाथ दे, उस हाथ ले (लेने का देना)	प्रधानाचार्य ने मेरे पिता जी से कहा, 'आप मेरे भाई को अपने ऑफिस में, नौकरी पर रख लीजिए मैं आपके बेटे को अपने स्कूल में एडमीशन दे दूँगा।' इसे कहते है इस हाथ दे, उस हाथ ले।
10. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अपराधी निरपराधी को डाँटे)	एक तो पूरे वर्ष पढ़ाई नहीं की और अब परीक्षा में कम अंक आने पर अध्यापिका को दोष दे रहे हैं। यह तो वही बात हो गई- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

11. ऊँट के मुँह में जीरा (जरूरत के अनुसार चीज़ न होना)	विद्याल के ट्रिप में जाने के लिए 2,500 रूपये चाहिए थे, परंतु यह तो ऊँट के मुँह में जीरे वाली बात हुई।
12. एक पंथ दो काज (एक काम से दूसरा काम हो जाना)	दिल्ली जाने से एक पंथ दो काज होंगे। कवि-सम्मेलन में कविता-पाठ भी करेंगे और साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को भी देखेंगे।
13. एक हाथ से ताली नहीं बजती (झगड़ा एक ओर से नहीं होता।)	आपसी लड़ाई में राम और श्याम-दोनों स्वयं को निर्दोष बता रहे थे, परंतु यह सही नहीं हो सकता, क्योंकि ताली एक हाथ से नहीं बजती।
14. एक अकेला, दो ग्यारह (संगठन में शक्ति होती है)	पिताजी ने दोनों बेटों को समझाते हुए कहा, यदि तुम दोनों मिलकर व्यापार करोगे तो दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति होगी। हमेशा याद रखना, 'एक अकेला, और दो ग्यारह' होते हैं।
15. ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर (कष्ट सहने के लिए तैयार व्यक्ति को कष्ट का डर नहीं रहता।)	बेचारे मोहन ने जब ओखली में सिर दे ही दिया है तब मूसलों से डरकर भी क्या कर लेगा।
16. कंगाली में आटा गीला (परेशानी पर परेशानी आना)	एक तो वेतन कम और ऊपर से पेट्रोल के दाम बढ़ते जा रहे हैं इसे कहते हैं कंगाली में आटा गीला।
17. काला अक्षर भैंस बराबर (अनपढ़ व्यक्ति)	कालू तो अख़बार भी नहीं पढ़ सकता, उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।
18. खोदा पहाड़ निकली चुहिया (बहुत कठिन परिश्रम का थोड़ा लाभ)	बच्चा बेचारा दिन भर लाल बत्ती पर अख़बार बेचता रहा, परंतु उसे कमाई मात्र बीस रुपये की हुई। यह वही बात है- खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

प्रयोजनमूलक हिंदी

14. सूचना (NOTICE)

कम शब्दों तथा औपचारिक शैली में लिखी गई संक्षिप्त जानकारी सूचना होती है। किसी विशेष सूचना को सार्वजनिक करना सूचना लेखन कहलाता है। विभिन्न विभागों में सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सक्षम या अधिकृत अधिकारियों द्वारा जनसाधारण को जानकारी देने के लिए समय-समय पर नाना प्रकार की विभागीय सूचनाएँ प्रसारित की जाती हैं। ये सूचनाएँ प्रायः सूचनापट्ट, रेडियो, दूरदर्शन और समाचार पत्रों के माध्यम से जनहित के लिए जारी की जाती हैं और जनसाधारण अपने प्रयोजन के लिए संबंधित प्रसारित सूचनाओं से लाभान्वित होता है।

सूचनाओं का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है। अपने व्यापक अर्थ में समाचार पत्रों के माध्यमों से जनसाधारण तक पहुँचने वाले विज्ञापन, वर्गीकृत विज्ञापन, आवश्यकताएँ, नियुक्तियाँ, खोया-पाया, नामांतरण, तिथि परिवर्तन, वर-वधू वैवाहिक विज्ञापन, जमीन-जायदाद, मशीन-पुर्जे, किराए हेतु, क्रय-विक्रय, शोक समाचार, शैक्षिक सार्वजनिक निविदा सूचना, बाजार-भाव, वीडियो कार्यक्रम, दूरदर्शन, सिनेमा जगत, केंद्र एवं राज्य सरकार के द्वारा जारी की गई सूचनाएँ, विज्ञप्ति, न्यायालय संबंधी सूचनाएँ तथा व्यक्तिगत सूचना आदि सूचना के अंतर्गत आते हैं। सामान्यतः सूचना के शीर्ष पर संबंधित विभाग, कार्यालय अथवा संस्था का नाम और दिनांक का उल्लेख होता है। उसके नीचे सूचना संबंधी विवरण अंकित रहता है और अंत में सूचना देने वाले अधिकारियों के नाम व पदनाम का उल्लेख होता है।

सूचना लेखन के प्रमुख बिंदु-

→ संस्था का नाम
→ सूचना जारी करने का दिनांक
→ स्पष्ट शीर्षक
→ आकर्षक नारा
→ सूचना लेखन के उद्देश्य
→ सरल वाक्यों में विषय लेखन

सूचना का नमूना ...

सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खैरताबाद, हैदराबाद

सूचना

25 जुलाई 2022

निबंध लेखन प्रतियोगिता के लिए सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अंतः विद्यालयी निबंध लेखन प्रतियोगिता विद्यालय के सभागार में आयोजित की जाएगी। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों के नाम आमंत्रित हैं।

दिनांक - 1 अगस्त 2022

समय - प्रातः 10 बजे

स्थान - विद्यालय सभागार

विषय - निबंध लेखन

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई 2022 तक स्कूल की हिंदी साहित्य समिति की सचिव अथवा हिंदी शिक्षिका के पास दर्ज करवाएं।

सरिता राणा,

सचिव

हिंदी साहित्य समिति, सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय

मुख्य बिंदु - पुनः अवलोकन

→ कम शब्दों तथा औपचारिक शैली में लिखी गई संक्षिप्त जानकारी सूचना कहलाती है।

→ विभिन्न विभागों में सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं आदि के अधिकारियों द्वारा जनसाधारण को जानकारी देने के लिए सूचनाएँ निकाली जाती हैं।

→ सूचनाएँ सूचना पट्ट, रेडियो, दूरदर्शन और समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रसारित की जाती हैं। सूचना के शीर्ष पर संबंधित विभाग/कार्यालय अथवा संस्था का नाम और दिनांक का उल्लेख होता है।

→ सूचनाओं का क्षेत्र व्यापक होता है। नियुक्तियाँ, खोया-पाया, बाजार-भाव, क्रय-विक्रय, शैक्षिक, सार्वजनिक निविदा सूचना तथा वीडियो कार्यक्रम आदि सूचना के अंतर्गत आते हैं।

प्रश्नः

1. सूचना किसे कहते हैं?
2. सूचनाएँ कैसे प्रसारित होती हैं?
3. समाचार-पत्र में प्रसारित किन्हीं चार सूचनाओं का संकलन कीजिए।

15. समाचार लेखन (News Writing)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज में वह जिस वातावरण में रहता है उसके बारे में जानने को उत्सुक रहता है। समाज में घट रही घटनाओं की जानकारी उसकी इस उत्सुकता को शांत करती हैं। अपने आसपास घट रही घटनाओं को जानकर उसे न केवल संतोष और आनंद प्राप्त होता है, बल्कि ये सूचनाएँ या जानकारियाँ उसके ज्ञान का स्त्रोत भी बनती हैं। आज के आधुनिक युग में ऐसी ही सूचनाओं में से कुछ विशेष सूचनाओं को समाचार कहते हैं, जिन्हें हम समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन और वेब अथवा इंटरनेट के माध्यमों से प्राप्त करते हैं। मनुष्य के आस-पास घटने वाली सत्य घटनाएँ, उसकी समस्याएँ और उसके नवीन विचार समाचारों को जन्म देते हैं। विद्वानों का मानना है कि किसी भी घटना, विचार और समस्या से जब काफी लोगों का सरोकार हो तो वह समाचार बनने योग्य है। ऐसी बातें समाचार बनती हैं जिनमें कोई नई सूचना, कोई नई जानकारी हो। अंग्रेज़ी में इसे न्यूज (News) कहा जाता है, जिसका अर्थ है नई सूचना, इसमें दिशाओं, उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की जानकारी होती है।

समाचार किसी बात को लिखने या कहने का वह तरीका है, जिसमें उस घटना, विचार, समस्या के सबसे अहम तथ्यों या पहलुओं को सबसे पहले बताया जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा जाता है। लेखन की इस शैली में किसी घटना का ब्यौरा कालानुक्रम के बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। समाचार में व्यापकता, नवीनता, असाधारणता, सत्यता और प्रामाणिकता, रुचिपूर्णता, प्रभावशीलता, स्पष्टता जैसे गुण काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

आइए, अब हम समाचर लेखन की प्रक्रिया के बारे में कुछ विस्तार से जानते हैं। इस प्रक्रिया को उल्टा पिरामिड सिद्धांत कहा जाता है। यह समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत है। यह सिद्धांत कथा या कहानी लेखन की प्रक्रिया के ठीक उलटा है। इसमें किसी घटना, विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना पिरामिड के सबसे ऊपरी हिस्से में होती है और घटते हुए क्रम में कम महत्व की सूचनाएँ सबसे निचले हिस्से में होती हैं।

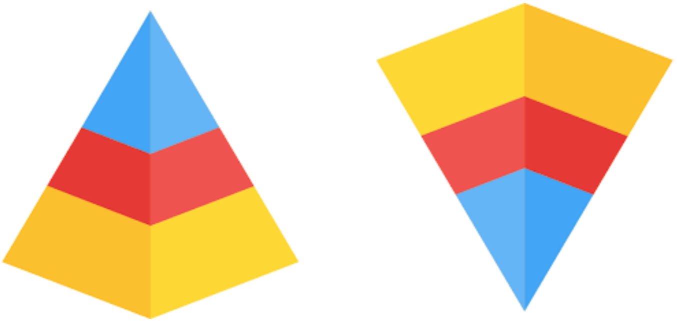

समाचारों की सुविधा की दृष्टि से इसे मुख्यतः तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है मुखड़ा जिसे इंट्रो या लीड भी कहा जाता है, बॉडी अर्थात मुख्य भाग और निष्कर्ष या समापन। इसमें मुखड़ा या इंट्रो समाचार के पहले और कभी-कभी पहले और दूसरे दोनों पैराग्राफ को कहा जाता है। यह किसी भी समाचार का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है। किसी भी हालत में यह 35 से 50 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। इसमें मुख्यतः छह प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश की जाती है। क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, क्यों और कैसे हुआ है। इन प्रश्नों को छटककार भी कहा जाता है।

इसके बाद समाचार की बॉडी आती है, जिसमें महत्व के अनुसार घटते हुए क्रम में सूचनाएँ और ब्यौरा देने के अलावा उसकी पृष्ठभूमि का भी उल्लेख किया जाता है। इंट्रो में उल्लिखित तथ्यों की व्याख्या और विश्लेषण समाचार की बॉडी में होते हैं।

समाचार लेखन में निष्कर्ष या समापन जैसी कोई चीज़ नहीं होती। इसलिए आदर्श नियम यह है कि समाचार अपने किसी भी समापन बिंदु पर पूर्ण, पठनीय और प्रभावशाली हो। इसके बावजूद यह ध्यान रखना चाहिए कि समाचार के प्रमुख तथ्य इसमें समा गये हैं या नहीं। मुखड़े और समापन के बीच एक तारतम्यता भी होनी चाहिए। समाचार में तथ्यों और उसके विभिन्न पहलुओं को इस तरह से पेश करना चाहिए कि उससे पाठक को किसी निर्णय या निष्कर्ष पर पहुँचने में मदद मिले।

मुद्रित (प्रिंट), इलेक्ट्रॉनिक (रेडियो और टेलीविजन) तथा डिजिटल मीडिया के लिए समाचार लेखन की शैली लगभग एक जैसी ही होती है। आवश्यकतानुसार, इसमें कुछ सुधार कर लिए जाते हैं। मुद्रित माध्यम में विस्तार और इलेक्ट्रॉनिक तथा डिजिटल माध्यम में सार से काम लिया जाता है।

मुख्य बिंदु - पुनः अवलोकन

→ ऐसी विशेष सूचनाओं को समाचार कहते हैं, जिनमें कोई नई सूचना, कोई नई जानकारी हो और जिन्हें हम समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन और वेब अथवा इंटरनेट के माध्यमों द्वारा प्राप्त करते हैं।

→ विद्वानों का मानना है कि किसी भी घटना, विचार और समस्या से जब काफी लोगों का सरोकार हो तो वह समाचार बनने योग्य है।

→ समाचार को अंग्रेज़ी में न्यूज (News) कहा जाता है, जिसका अर्थ है - नई सूचना, इसमें सभी दिशाओं, उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की जानकारी होती है।

→ उल्टा पिरामिड सिद्धांत समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत है।

→ समाचार लेखन मुख्यतः तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है, मुखड़ा या इंट्रो, बॉडी या मुख्य भाग और निष्कर्ष या समापन।

प्रश्नः

1. समाचार लेखन को प्रमुख रूप से कितने हिस्सों में विभाजित किया जाता है और इसका लेखन किस तरह किया जाता है?
2. समाचार का मानव जीवन में क्या महत्व है?
3. अपने आस-पास घटी किसी घटना को आधार बनाकर एक समाचार लिखिए।

16. समाचार वाचन (News Reading)

अब तक हम समाचार लेखन के बारे में पढ़ चुके हैं। अब हम इसकी वाचन शैली के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। समाचार वाचन का अर्थ है- लिखित समाचारों को पढ़ कर सुनाना। समाचार वाचन, रेडियो, टेलीविजन और डिजिटल मीडिया से जुड़े विभिन्न माध्यमों के लिए किया जाता है। समाचार वाचक को न्यूज़ एंकर, समाचार प्रस्तोता या न्यूज रीडर भी कहा जाता है। समाचार वाचन को प्रभावशाली बनाने के लिए सबसे पहले समाचार लेखन की विधा के बारे में जानकारी आवश्यक है। पठन और उच्चारण में शुद्धता, समाचार वाचक का पहला और अनिवार्य गुण है। इसके बिना समाचार वाचन संप्रेषणनीय नहीं होता। रेडियो और टेलीविजन पर पहले मुख्य समाचारों के हेड लाइन (शीर्षक) सुनाए जाते हैं और बाद में उन्हें विस्तार से बताया जाता है, जबकि डिजिटल मीडिया पर कोई एक समाचार सचित्र प्रस्तुत किया जाता है।

समाचार के आरंभ, मध्य तथा अंत को जिस तरह से सुनियोजित ढंग से विभिन्न अंशों में बांटा गया हो उसे भावानुसार पढ़ना चाहिए। अलग-अलग अंशों को पढ़ते समय उनके विषय के अनुसार यदि वे गंभीर हों तो अवरोह में और यदि खुशी की खबर हो तो उत्साह के साथ आरोह में ऐसी गर्मजोशी के साथ पढ़ना चाहिए कि श्रोताओं अथवा दर्शकों का मन अपने-आप आकर्षित हो जाए। आवाज़ को संयमित होना चाहिए। यदि आवाज़ अधिक ऊँची हो तो लोगों के कान फटने लगेंगे और अगर बहुत नीची हो तो ठीक से सुनाई नहीं देगा। समाचार यदि टेलीविजन पर प्रसारित किए जाएं तो वाचक को संदर्भ के अनुसार कपड़े तथा अपने चेहरे के हाव-भावों का भी ध्यान रखना पड़ता है। बिना घबराए, बिना हिचकिचाए समाचारों को धारा प्रवाह से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

वाचन के दौरान बलाघात और विवृत्ति का विशेष महत्व होता है। प्रत्येक वाक्यांश पर बल देना और समाचार के प्रत्येक अंश के बाद विवृत्ति अर्थात् थोड़ा-सा रुकना बहुत जरूरी है। इससे संप्रेषण में सहायता मिलती है और श्रोता/दर्शक समाचारों को आसानी से समझ पाते हैं।

रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित समाचार का वाचन करते समय, सबसे पहले अभिवादन करके बताया जाता है कि समाचार आकाशवाणी या टेलीविजन चैनल से प्रसारित किए जा रहे हैं। फिर प्रत्येक वाक्यांश पर बल देते हुए, पदबंधों के बीच रुकते हुए, आरंभ में आरोह तथा अंत में अवरोह स्वर में प्रत्येक शब्द का स्पष्ट रूप से उच्चारण किया जाता है। इस तरह पहले मुख्य समाचार सुनाए जाते हैं, उसके बाद समाचार वाचक उस बुलेटिन का शीर्षक बताते हुए अपना नाम बताता है। मुख्य समाचारों के बाद आरोह स्वर में विस्तार से समाचार सुनाए जाते हैं। यहाँ पर भी प्रत्येक पदबंध पर बल देते हुए, वाक्यांशों के बीच विवृत्ति दी जाती है अर्थात थोड़ा - सा विराम दिया जाता है ताकि श्रोता समाचारों को पूरी तरह सुन और समझ सकें।

ज्ञात रहे कि रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है और टेलीविजन श्रव्य-दृश्य दोनों प्रकार का माध्यम है। समाचार वाचन में माध्यम की विशेषता के अनुसार कुछ अंतर होता है। रेडियो पर ध्वनि का महत्व अधिक होता है और टेलीविजन पर चित्रों और चलचित्रों का। इसलिए टेलीविजन पर समाचार वाचन के दौरान वीडियो क्लिप अथवा चित्र के साथ ऑडियो क्लिप दिखाए जाते हैं। बीच-बीच में संवाददाता लाइव रिपोर्ट भी प्रस्तुत करते हैं। समाचार प्रस्तुति में न्यूज एंकर को समन्वयक की भूमिका भी निभानी पड़ती है। वह अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत ब्यौरे के बीच देश-विदेश की ख़बरों के साथ-साथ, व्यापार, मनोरंजन और खेल समाचार प्रस्तुत करता है। बुलेटिन के अंत में मुख्य समाचार फिर से पढ़े जाते हैं।

मुख्य बिंदु - पुनः अवलोकनः

→ समाचार वाचन का अर्थ है, लिखित समाचारों को पढ़ कर सुनाना। समाचार वाचन, रेडियो, टेलीविजन और डिजिटल मीडिया से जुड़े विभिन्न माध्यमों से किया जाता है।

→ पठन और उच्चारण में शुद्धता ही समाचार वाचक का सबसे पहला अनिवार्य गुण है। इसके बिना समाचार वाचन संप्रेषणीय नहीं होता।

→ समाचार के आरंभ, मध्य तथा अंत को जिस तरह से सुनियोजित ढंग से विभिन्न अंशों में बांटा गया हो उसे भावानुसार बिना घबराए, बिना हिचकिचाए धारा प्रवाह में प्रस्तुत करना चाहिए।

→ रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित समाचार का वाचन करते समय सबसे पहले मुख्य

समाचार सुनाये जाते हैं और उसके बाद आरोह स्वर में विस्तार से समाचार सुनाये जाते हैं।

→ रेडियो पर ध्वनि का महत्व अधिक होता है और टेलीविजन पर चित्रों और चलिचित्रों का। इसलिए टेलीविजन पर समाचार वाचन के दौरान वीडियो क्लिप अथवा चित्र के साथ ऑडियो क्लिप दिखाए जाते हैं।

प्रश्नः

1. समाचार वाचक के प्रमुख गुण क्या हैं और समाचार प्रस्तुति के दौरान किन बातों पर ध्यान देना अनिवार्य है?
2. आधुनिक युग में रेडियो, टेलीविजन और वेब मीडिया के समाचारों ने समाज को किस तरह प्रभावित किया है?
3. एक आदर्श समाचार वाचक बनने के लिए आप स्वयं को किस तरह तैयार करेंगे?

17. विज्ञापन लेखन (Advertisement Writing)

इक्कीसवीं सदी को विज्ञापन की सदी कहा जाता है। यह शब्द ज्ञापन में वि उपसर्ग लगाने से बना है। 'वि' का अर्थ है विशेष और 'ज्ञापन' का अर्थ है सूचना। इस तरह 'विज्ञापन' शब्द का अर्थ हुआ विशेष सूचना या विशिष्ट जानकारी। अंग्रेज़ी में इसे 'एडवर्टाइजमेंट'(Advertisement) कहा जाता है। इसके द्वारा किसी भी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के गुणों की जानकारी प्रदान कर उपभोक्ता को आकर्षित किया जाता है। आप समाचार पत्र में प्रकाशित होने वाले समाचारों के बारे में जानते हैं। किंतु समाचार पत्र, टेलीविजन और रेडियो तथा डिजिटल मीडिया में विज्ञापन भी प्रकाशित एवं प्रसारित होते हैं। इन माध्यमों में शुल्क अदा कर दी जाने वाली सूचना विज्ञापन होती है।

बाज़ार में वस्तु या उत्पाद की मांग बढ़ाने और उसकी अधिक से अधिक बिक्री के लिए विज्ञापन को सशक्त माध्यम माना जाता है। संचार माध्यमों की अर्थव्यवस्था विज्ञापन के आधार पर ही चलती है। छोटे-छोटे वर्गीकृत विज्ञापनों से लेकर बड़े-बड़े आकार के विज्ञापन समाचार पत्रों में छपते हैं और यही ऑडियो और वीडियो द्वारा रेडियो और टेलीविजन पर भी प्रसारित होते हैं। कंपनियों के उत्पादन की तुलनात्मक जानकारी, किसी संस्थान में रिक्त स्थान, किराए के लिए घर, नाम बदलना, गुमशुदा की तलाश, शादी हेतु वर या वधू चाहिए, स्कूल आदि में प्रवेश, दुकान में सेल, खाने-पीने की अन्य दुकान या शोरूम खोलने की सूचना, चुनाव प्रचार, जमीन खरीदना/बेचना जैसे अनेक प्रकार के विज्ञापन होते हैं। इसके माध्यम से विक्रेता की सहायता करना, व्यापारिक संबंधों में सुधार, ब्रांड छवि बनाना, उपभोक्ता को शिक्षित करना आदि महत्वपूर्ण कार्य किये जा

सकते हैं।

क्षेत्र के आधार पर मुख्य रूप से विज्ञापन छः प्रकार के होते हैं:-

1. राष्ट्रीय विज्ञापन - विक्रेता कंपनी का लक्ष्य जब अपने उत्पाद या वस्तुओं की बिक्री को पूरे देश में करना होता है तो एक ही राष्ट्रीय विज्ञापन कई भाषाओं में बनाया जाता हैं। जैसे मोबाईल फोन, फ्रिज, एसी, टीवी या कोई खाद्य उत्पाद आदि।

2. औद्योगिक विज्ञापन-औद्योगिक संस्थानों से संबंधित वस्तुओं जैसे कच्चा माल, उपकरण, कलपुर्जे या पार्ट्स आदि की बिक्री के उद्देश्य से इन विज्ञापनों का उपयोग किया जाता है।

3. जनकल्याण संबंधी विज्ञापन-जन कल्याण से संबंधित सूचनाएँ जैसे रक्तदान, एड्स या टीबी की बीमारी का इलाज, कन्या भ्रूण हत्या को रोकना, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ अभियान, स्कूल चलो अभियान, प्रदूषण की समस्या, स्वच्छ भारत अभियान आदि को लोगों तक पहुंचाने के लिए इन विज्ञापनों का सहारा लिया जाता है। यह सरकारी समस्या, स्वच्छ भारत अभियान आदि को लोगों तक पहुंचाने के लिए इन विज्ञापनों का सहारा लिया जाता है। यह सरकारी, अर्द्ध सरकारी व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा दिए जाते हैं।

4. स्थानीय विज्ञापन - यह विज्ञापन स्थानीय स्तर या किसी क्षेत्र विशेष पर वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए स्थानीय लोगों की पसंद को ध्यान में रख कर बनाये जाते हैं। इनका प्रचार-प्रसार स्थानीय समाचार पत्र, क्षेत्रीय टीवी केबल नेटवर्क, बैनर, पोस्टर आदि के द्वारा किया जाता हैं।

5. वर्गीकृत विज्ञापन-वर्गीकृत विज्ञापन जैसे किराये के लिए घर या दफ्तर, नौकरी/रोज़गार, वैवाहिक, पुराने सामान की बिक्री आदि के लिए किए जाते हैं। अंग्रेज़ी में इसको क्लासिफाइड (Classified Advertisement) कहा जाता है। आजकल ऑनलाइन ओएलएक्स और क्विकर पर भी इस प्रकार के विज्ञापन देखने को मिलते हैं।

6. सूचनाप्रद विज्ञापन - कुछ विज्ञापन किसी विशेष सूचना को लोगों तक पहुंचाने और उन्हें जागरूक करने के लिए बनाये जाते हैं। इस तरह के विज्ञापन सामूहिक विकास, सद्भावना, वन्य प्राणी रक्षा, यातायात सुरक्षा नियमों आदि से संबंधित होते हैं।

विज्ञापन के कार्य और महत्व के बारे में कहा जा सकता है कि बाजार में आयी किसी नई वस्तु या सेवा की जानकारी लोगों तक पहुंचाना, वस्तु की गुणवत्ता, उपयोगिता व उसके विशिष्ट गुणों के बारे में बताना, उत्पाद के प्रति लोगों के मन में विश्वसनीयता बढ़ाना, लोगों के मन मस्तिष्क को प्रभावित करना आदि कार्य इसके द्वारा किए जा सकते हैं।

विज्ञापन लेखन के बारे में सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि यह कम शब्दों में अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक रचना होती है। इसमें नारे/स्लोगन और प्रेरक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। चित्रों या रेखाचित्रों का प्रयोग करके इसे आकर्षक बनाया जाता है। इसमें उत्पाद या सेवा की विशेषताओं और महत्व को प्रभावशाली तरीके से बताया जाता है।

आयताकार, वर्गाकार अथवा गोल बॉक्स में लिखित सूचना सामग्री और ज़रूरत के अनुसार चित्रों का इस्तेमाल विज्ञापन लेखन को प्रभावशाली बनाता है। विज्ञापन के लिए लोक लुभावने शब्द जैसे सेल, धमाका, खुशखबरी, एक खरीदने पर एक फ्री, पहले आइए पहले पाइए, ऐसा अवसर फिर नहीं आएगा, जल्दी कीजिए, स्टॉक सीमित है, अपना सपना साकार करें, भारी छूट आदि नारों का उपयोग किया जाता है। विज्ञापन के अंत में पता, संपर्क, फोन नंबर दिया जाता है।

विज्ञापन की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए और वाक्य बहुत छोटे-छोटे होने चाहिए। अगर विज्ञापन किसी सामान खरीदने या बेचने से संबंधित है, तो उसका मूल्य और उसकी उपलब्धता के बारे में भी बताना होता है। लिखावट आकर्षक होनी चाहिए तथा अलग-अलग तरह के फांट का इस्तेमाल कर विज्ञापन को आकर्षक बनाना चाहिए। याद रखें कि सूचना देने के साथ-साथ मितव्ययता, स्पष्टता, विश्वास व आश्वासन, पसंद की स्वतंत्रता विज्ञापन के विशेष गुण होते हैं।

मुख्य बिंदु - पुनः अवलोकनः

→ 'विज्ञापन' शब्द ज्ञापन में 'वि' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वि' का अर्थ है विशेष और 'ज्ञापन' का अर्थ है सूचना। इस तरह 'विज्ञापन' शब्द का अर्थ हुआ विशेष सूचना या विशिष्ट जानकारी। अंग्रेज़ी में इसे एडवर्टाइजमेंट (Advertisement) कहा जाता है।

→ समाचार-पत्र, टेलीविजन और रेडियो तथा डिजिटल मीडिया में शुल्क अदा कर, दी जाने वाली सूचना विज्ञापन होती है।

→ विज्ञापन के माध्यम से विक्रेता की सहायता करना, व्यापारिक संबंधों में सुधार, ब्रांड छवि बनाना, उपभोक्ता को शिक्षित करना आदि महत्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं।

→ क्षेत्र के आधार पर मुख्य रूप से विज्ञापन छः प्रकार के होते हैं। 1. राष्ट्रीय विज्ञापन 2. औद्योगिक विज्ञापन 3. जनकल्याण संबंधी विज्ञापन 4. स्थानीय विज्ञापन 5. वर्गीकृत विज्ञापन और 6. सूचनाप्रद विज्ञापन।

→ विज्ञापन की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए और वाक्य बहुत छोटे-छोटे होने चाहिए। लिखावट आकर्षक होनी चाहिए। अलग-अलग तरह के फांट का इस्तेमाल कर विज्ञापन को आकर्षक बनाना चाहिए।

प्रश्नः

1. विज्ञापन लेखन के महत्व को रेखांकित करते हुए उसकी लेखन प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।
2. विज्ञापन उपभोक्ता को प्रभावित कर उसकी जेब खाली कर सकता है। - इस कथन पर अपने विचार लिखिए।
3. 'वर्षा जल संरक्षण' पर सामाजिक जागरुकता उत्पन्न करने के लिए एक विज्ञापन बनाइए।

18. संपादकीय लेखन (Editorial Writing)

'संपादकीय' किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका के लिए प्रमुख तथा महत्वपूर्ण स्तंभ होता है। यह किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका में संपादक द्वारा लिखा गया एक स्थायी स्तंभ होता है। इस लेख का एक निश्चित स्थान होता है और इसे संपादकीय कहा जाता है। यह समाचार का सार तत्व और समाचार पत्र का स्थायी समाधान वाहक होता है। समाचार पढ़कर पाठक भूल जाता है लेकिन संपादकीय उसके मन-मस्तिष्क पर लंबे समय तक छाया रहता है। इसे समाचार पत्र की धड़कन भी कहा जाता है। यह अपनी धड़कनों से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की धड़कनों को प्रभावित करता है। यह संपादक का नितांत निजी दृष्टिकोण और पत्र की रीति-नीति का स्वच्छ दर्पण होता है। अवसर और आवश्यकता अनुरूप एक या दो संपादकीय भी लिखे जाते हैं।

हालांकि संपादकीय को समाचार और लेख शैली का मिश्रित रूप कहा जाता है, फिर भी इसके बारे में कहा गया है कि संपादकीय लेखन सर्वथा स्वतंत्र विधा है। इसे किसी सिद्धांत अथवा नियम के आधार पर नहीं ढाला जा सकता, लेकिन श्रेष्ठ संपादकीय के लिए कुछ आदर्श निर्धारित किए जा सकते हैं। प्रत्येक संपादक की अपनी विशिष्ट व्यक्तित्व और शैली होती है जो संपादकीय में दृष्टिगोचर होती है। संपादकीय लेखन 'गागर में सागर' भरने की कला है। किसी महत्वपूर्ण समाचार या मुद्दे पर संक्षेप में तथ्यों और विचारों की तर्कसंगत और सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति से पाठक के विचारों को प्रभावित किया जा सकता है। सामान्य पाठक विषय विशेष के महत्व को संपादकीय द्वारा आसानी से समझ सकता है। छोटे समाचार पत्रों में जहाँ संपादक ही प्रतिदिन संपादकीय लिखता है वहीं बड़े और मध्यम समाचार पत्रों में इस कार्य के लिए कुछ सहायक होते हैं। इन्हें 'लीडर राइटर' कहा जाता है। बड़े पत्रों में सहायक विविध विषयों के विशेषज्ञ होते हैं जो अपने विषय के आधार पर संपादकीय लिखने का कार्य करते हैं। विद्वानों के अनुसार, संपादकीय का उद्देश्य जानकारी देना, सतर्क करना, शिक्षित करना, मार्गदर्शन करना, समझाना और राजी करना तथा प्रेरित और मनोरंजित करना है।

संपादकीय लेखक को इस बात का ध्यान रखना होता है कि विषय की व्याख्या करते हुए स्वयं अपने विशेष ज्ञान के सहारे या विशेषज्ञों की सलाह लेकर घटना-विशेष या स्थिति-विशेष के महत्व को रेखांकित करें। विविध बिखरी महत्वहीन लगने वाली घटनाओं को एक सूत्र में जोड़कर उनका सामूहिक महत्व एवं उनकी वास्तविक सार्थकता समझाएं। भविष्य में संभावित घटनाक्रम की ओर इशारा करते हुए वह समाज को आने वाले समय के लिए तैयार करें। लेखन विशेष रूप से भाषा एवं तर्क शैली की दृष्टि से सशक्त होना चाहिए।

संपादकीय लेखक को ईमानदारी के साथ और संपूर्ण रूप में तथ्य पेश करने चाहिए। कथित तथ्यों से प्रमाण और अधिकतम कल्याण की भावना के साथ सही निष्कर्ष निकालने चाहिए। उपलब्ध सूचना के प्रकाश में निरंतर अपने निजी निष्कर्षों की समीक्षा करते रहना चाहिए। यदि उसके लेखन में पूर्व गलत धारणाओं के कारण कोई गलती नज़र आए तो उसे भूल सुधार से नहीं हिचकिचाना चाहिए। लेखक में विश्वास की दृढ़ता और लोकतंत्री जीवनादर्शों के प्रति निष्ठा का साहस होना चाहिए। उसे कोई ऐसी बात नहीं लिखनी चाहिए जो उसकी अंतरात्मा के विरुद्ध हो। संपादकीय का आकार विषय के महत्व के अनुसार कम अधिक हो सकता है, लेकिन पाठकों को ऐसा न लगे कि इसमें कोई बिंदु छूट गया है। मूल बात कहने के पूर्व अनावश्यक शब्द-विस्तार या विचारों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए। संपादकीय में कोई-न-कोई विचार या निष्कर्ष अवश्य प्रतिपादित हो और विचारों में संतुलन हो। संपादकीय लेखन के लिए उचित प्रशिक्षण, पर्याप्त अनुभव और अभ्यास अपेक्षित है।

संपादकीय लेखन को निम्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है- 1. विषय का चयन 2. विषयानुरूप सामग्री संकलन 3. विषय की रूपरेखा का निर्माण 4. विषय-प्रवेश, 5. विषय का क्रमिक विस्तार, 6. विषय का निष्कर्ष, 7. शीर्षक और प्रथम वाक्य और 8. संपादकीय की भाषा।

सर्वप्रथम विषय खोजा जाता है, जिस पर संपादकीय लिखा जाना है। विषयानुसार सामग्री ढूँढ़ी जाती है। पुस्तकालय में रखे संदर्भ ग्रंथों और समाचार पत्रों की विषयवार संचित कतरनों की सहायता से विषय के संबंध में नवीनतम जानकारी हासिल की जाती है। ताजा समाचारों पर भी पैनी नज़र डाली जाती है। फिर विषय की रूपरेखा का निर्माण कर लेखन शुरू किया जाता है। विषय-प्रवेश संपादकीय का प्रथम अनुच्छेद होता है। इसमें विषय या समस्या का वर्णन होता है। दूसरे अनुच्छेदों में विषय का क्रमिक विस्तार किया जाता है। इसमें अपने वक्तव्य, मत और विचार के संबंध में युक्तियाँ, तर्क और कथन प्रस्तुत किए जाते हैं। निष्कर्ष में संपादक किसी महत्वपूर्ण विचार, उत्प्रेरणा, परामर्श या आदेश देने का प्रयास करता है। संपादकीय लेख लिखने के बाद लेखक स्वयं अपने लेख को पढ़ता है, देखता है, उसे संवारता है। संपादकीय के शीर्षक और पहले वाक्य का भी बहुत महत्व होता है।

संपादकीय की भाषा नपी-तुली, संयत, संतुलित और अपेक्षाकृत सरल होती है। इसमें कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है। काव्य पंक्तियों, दोहों, शेरों-शायरियों आदि का प्रयोग संपादकीय को रुचियुक्त और जीवंत बनाता है।

मुख्य बिंदु - पुनः अवलोकनः

→ किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका में संपादक द्वारा लिखे गए एक निश्चित स्थान पर प्रकाशित होने वाले स्थायी स्तंभ को संपादकीय कहा जाता है।

→ संपादकीय को समाचार पत्र की धड़कन भी कहा जाता है, जो अपनी धड़कनों से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की धड़कनों को प्रभावित करता है। यह संपादक का नितांत निजी दृष्टिकोण और पत्र की रीति-नीति का स्वच्छ दर्पण होता है।

→ संपादकीय लेखन 'गागर में सागर' भरने की कला है, जिसमें किसी महत्वपूर्ण समाचार या मुद्दे पर संक्षेप में तथ्यों और विचारों की तर्कसंगत और सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति से पाठक के विचारों को प्रभावित किया जा सकता है।

→ संपादकीय लेखक की जिम्मेदारी होती है कि वह विविध बिखरी महत्वहीन लगने वाली घटनाओं को एक सूत्र में जोड़कर उनका सामूहिक महत्व एवं उनकी वास्तविक सार्थकता आने वाले समझाएं तथा भविष्य में संभावित घटनाक्रम की ओर इशारा करते हुए वह समाज को समय के लिए तैयार करें।

→ संपादकीय की भाषा नपी-तुली, संयत, संतुलित और अपेक्षाकृत सरल होती है और इसमें कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है। काव्य पंक्तियों, दोहों, शेरों आदि का प्रयोग संपादकीय को रुचियुक्त और जीवंत बनाता है।

प्रश्नः

1. संपादकीय लेखन की भाषा, सामग्री और महत्व को रेखांकित कीजिए।
2. 'एक कुशल संपादकीय लेखक लोगों के विचारों को प्रभावित कर समाज में परिवर्तन लाने का काम कर सकता है।' इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. महंगाई के कारणों पर प्रकाश डालते हुए एक संपादकीय लिखिए।

19. पी पी टी (Power Point Presentation) – (पावर पॉइंट प्रस्तुति)

पी पी टी अर्थात पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन या प्रस्तुति (Power Point Presentation) माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित एक कंप्यूटर साधित प्रस्तुति कार्यक्रम है, जिसमें सूचनाओं को स्लाइड्स (Slides) के माध्यम से दर्शाया जाता है। इसमें पाठ, छवियाँ और अन्य मीडिया, जैसे ग्राफ़िक्स, एनीमेशन, गीत, ऑडियो क्लिप और वीडियो क्लिप इत्यादि शामिल होते हैं। यदि आपको स्कूल या कॉलेज में किसी विषय पर प्रस्तुति देनी है या आप व्यापार करते हैं और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अपनी बात समझाना चाहते हैं, तो आपके लिए पीपीटी एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है। इसका उपयोग उत्पाद, सेवा और ऑफर की जानकारी देने के लिए भी प्रभावी होता है।

पी पी टी का उपयोग मुख्य रूप से योजनाओं, परियोजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रस्तुति द्वारा देने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग शिक्षा या किसी भी तरह की सूचनाओं को प्रभावी रूप से दूसरों के समक्ष रखने के उद्देश्यों के लिए भी किया जा सकता है। यह एक प्रकार से एक्सटेंशन फाइल है, जिसमें आपको कई तरह के टूल्स भी मिलेंगे।

आइए अब जानते हैं कि पी पी टी कैसे तैयार करते हैं। पीपीटी तैयार करने से पूर्व आप सुनिश्चित कर लें कि आपने अपने विषय की सामग्री विभिन्न माध्यमों में तैयार कर ली है। पीपीटी बनाने वाले से पहले विषय पर मुख्य बिंदुओं और उससे जुड़ी जानकारी उपलब्ध होना अनिवार्य है। इससे पीपीटी बनाना सरल हो जाता है।

पी पी टी एम एस ऑफिस (MS Office) के किसी भी संस्करण (Version) से तैयार हो सकती है। इसमें स्लाइड बनाने के विभिन्न चरणों का वर्णन यहाँ किया जा रहा है।

1. स्टार्ट बटन (Start Button) पर क्लिक करें – सबसे पहले आपको पॉवर पॉइंट (Power Point) को ओपन करना है, इसके लिए स्टार्ट बटन (Start Button) पर क्लिक करके आल प्रोग्राम (All Program) या आल ऐप्स (All Apps) में जाना है।
2. पॉवर पॉइंट (Power Point) को ओपन करें – All Program में आपको MS Office का विकल्प मिलेगा, इसमें जाएँ और Power Point को Open करें।
3. न्यू ब्लैंक प्रेजेंटेशन (New Blank Presentation) पर क्लिक करें – अब New Blank Presentation" के विकल्प पर क्लिक करें।
4. इंसर्ट स्लाइड (Insert Slide) पर जाएँ – होम टैब (Home Tab) में न्यू स्लाइड (New Slide) का विकल्प है, वहाँ से आप जितनी भी चाहे Slide ले सकते हैं और इंसर्ट (Insert) कर सकते हैं।

5. आपकी प्रस्तुति का विषय टाइप करें - अब आप टेक्स्ट बॉक्स (Text Box) को इंसर्ट करके पी पी टी बना सकते हैं।
6. रंग, फॉन्ट और फोंट का आकार (Change Color, Font, Font Size) - आपने जो Text Type किया है उसका रंग, फॉन्ट और फॉन्ट का आकार भी यहाँ से बदला जा सकता है।
7. डिज़ाइन मेन्यु (Design Menu) - अब Design की Tab पर क्लिक करके Slide को Design भी कर सकते हैं। इस विकल्प में आपको कई तरह की डिज़ाइन मिलेगी, आप अपनी इच्छानुसार डिज़ाइन चुन सकते हैं।
8. इंसर्ट मेन्यु (Insert Menu) - इंसर्ट के टैब से वीडियो, ऑडियो, चित्र और ग्राफिक्स पीपीटी में शामिल कर सकते हैं। इसके द्वारा आप कई तरह के आकार भी लगा सकते हैं।
9. ट्रांजिशन मेन्यु (Transition Menu)- आप अपनी पीपीटी स्लाइड को किस तरह से दिखाना चाहते हैं, उसका चयन कर सकते हैं और फिर इफेक्ट एप्लाई (Effect Apply) कर सकते हैं।
10. एनिमेशन मेन्यु (Animation Menu) - अपने पाठ को प्रभावी बनाने के लिए एनीमेशन का प्रयोग कर सकते हैं। जिस पाठ पर आप एनीमेशन इफ़ेक्ट देना चाहते हैं, पहले उस पाठ (Text) को सेलेक्ट करें और एनिमेशन (Animation) की टैब को क्लिक करके एनीमेशन एप्लाई (Apply) करें।
11. स्लाइड शो मेन्यु (Slideshow Menu) - प्रस्तुति तैयार होने के बाद एक बार जाँच लें। इसके लिए स्लाइड शो (Slideshow) पर क्लिक करें। याद रखें कि अपना कार्य सुरक्षित रखने के लिए समय-समय पर सेव (Save) क्लिक करते रहे हैं और पीपीटी पूरा होने के बाद भी यह सुनिश्चित कर लें कि सेव किया है या नहीं।
12. स्लाइड ले आउट (Slides Layout) - पहले से कुछ बनी हुई स्लाइड भी होती हैं, जिन्हें आप प्रस्तुति बनाने में इस्तेमाल कर सकते हैं। इसमें ट्रांजिशन (Transition) फीचर भी है। इस फीचर के उपयोग से स्लाइड परिवर्तन करते समय विजुअल इफेक्ट्स (Visual Effects show) से पीपीटी को प्रभावी बनाया जा सकता है। एक और फीचर है- डिज़ाइन टेम्पलेट्स। (Design Templates) इसमें विभिन्न प्रकार के डिजाइन टेंपलेट्स और थीम उपलब्ध हैं, जो पीपीटी को आकर्षक रूप देते हैं। इस तरह पीपीटी विभिन्न उद्देश्यों से अपनी बात प्रभावी रूप से लोगों के सामने रखने में सहयोगी सिद्ध होती है।

मुख्य बिंदु – पुनः अवलोकनः

→ पी पी टी अर्थात पावर पॉईट प्रेजेंटेशन या प्रस्तुति (Power Point Presentation) माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित एक कंप्यूटर साधित प्रस्तुति कार्यक्रम है, जिसमें सूचनाओं को स्लाइड्स (Slides) के माध्यम से दर्शाया जाता है।

→ इसमें पाठ, छवियाँ और अन्य मीडिया, जैसे ग्राफ़िक्स, एनीमेशन, गीत, ऑडियो क्लिप और वीडियो क्लिप इत्यादि शामिल होते हैं।

→ पी पी टी का उपयोग शिक्षा और व्यापार सहित विभिन्न क्षेत्रों में सूचनाओं के प्रभावी प्रस्तुतीकरण के लिए किया जा सकता है।

→ पी पी टी एक प्रकार से एक्सटेंशन फाइल है, जिसमें कई तरह के टूल्स का उपयोग किया जा सकता है।

→ पी पी टी बनाने वाले से पहले विषय पर मुख्य बिंदुएँ और उससे जुड़ी जानकारी उपलब्ध होना अनिवार्य है, ताकि पी पी टी बनाना सरल हो।

प्रश्नः

1. पी पी टी के महत्व के बारे में समझाते हुए इसके बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि आप एक विभाग के प्रमुख हैं। अपने साथियों के समक्ष अपनी बात रखने के लिए पी पी टी किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकती है।
3. अपनी पाठ्य पुस्तक के किसी एक पाठ का पी पी टी तैयार कीजिए।

20. पारिभाषिक शब्दावली

पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी के 'Glossary' का अनुवाद है। 'ग्लॉस' ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है 'वाणी'। कालांतर में यह 'भाषा' या 'बोली' का वाचक हो गया। आगे चलकर इसमें एकाधिक परिवर्तन हुए। अब इसका प्रयोग किसी भी प्रकार के शब्द के लिए होने लगा। अर्थात् अब पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग सामान्य, क्षेत्रीय, प्राचीन और अप्रचलित शब्दों के लिए होने लगा है।

ज्ञान-विज्ञान और व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे-जैसे भाषा के प्रयोग का दायरा बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता भी बढ़ती जाती है। इसमें उन सुनिश्चित किये गए शब्दों के अर्थ दिए होते हैं जो शब्द शास्त्र, साहित्य, विज्ञान और तकनीकी, बैंक और शिक्षा से संबधित होते हैं।

पारिभाषिक शब्द एवं अर्थ

Absence	= अनुपस्थिति/गैर हाजिरी
Abstract	= सार, संक्षिप्त (विधि)
Admission Fee	= प्रवेश-शुल्क
Application	= आवेदन पत्र
Interview	= साक्षात्कार
Leave	= अवकाश
Casual leave	= आकस्मिक अवकाश
Cheque	= धनादेश
Clerk	= लिपिक
Lecturer	= प्रवक्ता
Vice-chancellor	= कुलपति
Office	= कार्यालय
Ministry	= मंत्रालय
Defence Ministry	= रक्षा मंत्रालय
Education Ministry	= शिक्षा मंत्रालय
Language	= भाषा
Official Language	= कार्यालयी भाषा
Editor	= संपादक
Auditor	= लेखापाल/लेखा परीक्षक
Judge	= न्यायाधीश

Chief justice	= मुख्य न्यायाधीश
Engineer	= अभियंता
Manager	= प्रबंधक
Court	= न्यायालय
Embassy	= राज दूतावास /दूतावास
Law	= कानून
Library	= पुस्तकालय
President	= राष्ट्रपति / अध्यक्ष
Collector	= जिलाधीश
Counsellor	= परामर्शदाता
Councillor	= पार्षद
Minister	= मंत्री
Employment	= रोज़गार
Unemployment	= बेरोज़गारी
Public service commission	= लोक सेवा आयोग
Journalist	= पत्रकार
Journalism	= पत्रकारिता
Mayor	= महापौर
Peon	= चपरासी
Article	= आलेख
Zoo	= चिड़ियाघर
Notification	= अधिसूचना
Map	= मानचित्र/नक्शा
Envelope	= लिफाफा
Citizen	= नागरिक
Cabinet	= मंत्रिमंडल
Cashier	= रोकड़िया
Geologist	= भू-विज्ञानी
Director	= निदेशक/निर्देशक
Approval	= अनुमोदन

मुख्य बिंदु – पुनः अवलोकन

→ पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेज़ी के 'GLOSSARY' का अनुवाद है।

→ ज्ञान-विज्ञान की किसी विशेष विधा में प्रयुक्त की जाने वाले शब्दों तथा उनकी परिभाषा आदि की सूची को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं।

→ पारिभाषिक शब्दावली को 'पारिभाषिक शब्दकोश' भी कहते हैं।

→ पारिभाषिक शब्दावली में उन सुनिश्चित किए गए शब्दों के अर्थ दिए गए होते हैं, जो शब्द शास्त्र, साहित्य, विज्ञान और तकनीकी, बैंक और शिक्षा से संबंधित होते हैं।

→ वर्तमान समय में भौतिक, रसायन, प्राणी विज्ञान, दर्शन, गणित, इंजीनियरिंग, विधि, वाणिज्य, मनोविज्ञान, भूगोल आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग हो रहा है।

प्रश्नः

1. पारिभाषिक शब्दावली किसे कहते हैं?
2. पारिभाषिक शब्दावली किन-किन क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है?
3. बैंक तथा रेल विभाग में प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली की सूची बनाइए।

इकाई-V हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास और काव्य सौंदर्य – रस, छंद, अलंकार

हिंदीः–

इसकी पाँच उपभाषाएँ हैंः- 1. पूर्वी हिंदी, 2. पश्चिमी हिंदी, 3. राजस्थानी, 4.बिहारी, 5.पहाड़ी। इन पाँच उपभाषाओं की मुख्यतः 18 ग्रामीण बोलियाँ हैं। इन बोलियों में रचित साहित्य को हिंदी भाषा का साहित्य कहते हैं। कुछ प्रमुख बोलियों के नाम इस प्रकार हैं- अवधी, ब्रज, खड़ीबोली, मैथिली आदि।

साहित्यः–

साहित्य समाज का दर्पण है। यह जनता के भावों और विचारों का लेखा है। राजनीति, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों के कारण जनता के विचारों में परिवर्तन होता रहता है। अपने समय के विचारों को साहित्यकार व्यक्त करता है। जिस प्रकार चित्रकार चित्र उतारकर, शिल्पी मूर्ति बनाकर अपने विचारों को प्रकट करता है, उसी प्रकार साहित्यकार साहित्य सृजन करके अपने विचारों को प्रकट करता है। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, गद्‌य साहित्य के अंतर्गत आते हैं। जिस समय का साहित्य हम पढ़ते हैं, उससे हमें पता चलता है कि उस समय का लोगों के आचार-विचार और रहन-सहन किस प्रकार का था।

इतिहासः–

इतिहास को हमें हिंदी भाषा के परिवेश में देखना चाहिए। हिंदी भाषा का प्रारंभ 10 वीं शताब्दी के समय से माना जाता है। अतः दसवीं शताब्दी के समय से हिंदी भाषा में रचित साहित्य का क्रमगत अध्ययन ही हिंदी साहित्य का इतिहास कहलाता है। सुविधा की दृष्टि से हिंदी साहित्य का अध्ययन चार कालों में विभाजित किया गया है।

परिस्थितियाँ सदा एक समान नहीं रहती। समय-समय पर परिस्थितियाँ परिवर्तित होती रहती हैं। इसी कारण साहित्य का रूप भी परिवर्तित होते रहता है। हिंदी भाषा का जन्म हुए लगभग एक हज़ार वर्ष हुए। तब से आज तक सामाजिक प्रवृत्तियों के कारण हिंदी साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए। इन्हीं सामाजिक प्रवृत्तियों के परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए हिंदी साहित्य के आज तक के इतिहास को मुख्य रूप से चार कालों में बाँटा गया है।

1. आदिकाल (वीरगाथाकाल) संवत् 1050 से 1375 तक
2. पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल) संवत् 1375 से 1700 तक
3. उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) संवत् 1700 से 1900 तक
4. आधुनिककाल (गद्‌यकाल) संवत् 1900 से आज तक

आदिकाल

आदिकाल के समय वीर रसात्मक ग्रंथों की रचना अधिक होने के कारण इस काल को वीरगाथाकाल नाम दिया गया।

पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल) :-

इस काल में भक्ति की भावना प्रधान थी। इस समय भक्तिभावना से संबंधित ग्रंथों की रचना अधिक होने के कारण इस काल को भक्तिकाल नाम दिया गया।

उत्तरमध्य काल (रीतिकाल) :-

इस काल में श्रृंगार रस और कलात्मकता की प्रधानता थी। इस समय रीति विशेष अर्थात पद्धति विशेष के आधार पर कवियों ने अपने ग्रंथों रचना की। इस कारण इस काल को रीतिकाल नाम दिया गया।

आधुनिक कालः-

इस काल में गद्य की प्रधानता है। पहले के तीन कालों में साहित्य का रूप पद्यबद्ध रहा है। इस काल में गद्य की प्रधानता होने के कारण इस काल को गद्यकाल नाम दिया गया।

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)

वीरगाथा काल की रचनाएँ 'रासो' नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे पृथ्वीराजरासो, वीसलदेव रासो, हम्मीर रासो, विजयपाल रासो आदि। इन रासो ग्रंथों में उस समय के राजाओं की वीरता का विपुल वर्णन है। इसी कारण इस काल का नाम वीरगाथाकाल रखा गया है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि उस काल में अन्य प्रकार की रचनाएँ हुईं ही नहीं। भक्ति, श्रृंगार संबंधी रचनाएँ भी की गई, लेकिन कम मात्रा में। वीररस प्रधान साहित्य अधिक मात्रा में होने के कारण यह नामकरण किया गया।

परिस्थितियाँ :-

वीरगाथा काल में राजनीतिक परिस्थितियाँ बड़ी शोचनीय थीं। भारत के अंतिम सम्राट हर्षवद्र्धन की मृत्यु के पश्चात कोई ऐसा शक्तिशाली राजा नहीं हुआ जो सारे भारत को एक सूत्र में रख सकता हो। भारत देश छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गया था। हर एक छोटा राजा अपने सीमित क्षेत्र को ही अपना देश समझता था और उसके विस्तार के लिए अपने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण किया करता था। ऐसी दयनीय परिस्थिति के समय ही विदेशी मुसलमानों के आक्रमण प्रारंभ हुए। गोरी और ग़ज़नवी के आक्रमण भी इसी समय हुए। भारत के राजाओं की आपसी फूट के कारण उन्हें भारत पर आक्रमण करने का अवसर मिला। एक राजपूत राजा शत्रु का डटकर सामना करता तो उसका पड़ोसी राजा प्रतिद्वंदिता के कारण शत्रु की सहायता करता था।

वीर राजपूत राजा अपने पड़ोसी राजा की कन्या का उपहरण कर उससे विवाह करने में वीरता तथा बड़प्पन समझता था। इस कारण से भी आपसी युद्ध हुआ करते थे।

इस काल के हर एक राजा के दरबार में कुछ कवि रहा करते थे। उन्हें चारण या भाट कहते थे। राजाश्रित कवि अपने आश्रयदाता की प्रशंसा में उनकी वीरता की गाथाएँ लिखा करते थे। यह काल युद्धों का था। चारण स्वयं अपने राजा के साथ युद्ध में जाते थे। अवसर पड़ने पर कलम छोड़कर तलवार लेकर शत्रु से युद्ध करते थे। आँखों देखा हाल लिखने के कारण इस काल का साहित्य सजीव बन पड़ा है। कभी-कभी चारण अपने आश्रयदाता राजा का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करते थे। इसी को अतिशयोक्ति वर्णन कहते हैं। इसी काल में मुक्तक तथा प्रबंध दोनों प्रकार के काव्य ग्रंथ लिखे गए। युद्धों के मूल में स्त्री होने के कारण श्रृंगार का वर्णन भी यत्र तत्र किया गया है। इस काल की मुख्य भाषा डिंगल थी।

इस काल के मुख्य कवि तथा उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैं :-

1. विद्यापति - कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विद्यापति पदावली
2. चंदवरदायी - पृथ्वीराज रासो (हिंदी का प्रथम महाकाव्य)
3. जगनिक - परमाल रासो या आल्ह खण्ड (गीत काव्य।)
4. दलपति विजय - खुम्मण रासो।
5. नरपति नाल्ह - वीसलदेव रासो।
6. शारंगधर - हम्मीर रासो।
7. अमीर खुसरो - पहेलियाँ, मुकरियाँ, आदि।

संक्षेप में इस काल की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

1. आश्रयदाता की वीरता, यश, दान तथा ऐश्वर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन।
2. वीररस प्रधान काव्यों की रचना - युद्धों का सजीव वर्णन।
3. युद्धों का कारण स्त्री होने के कारण रूप सौंदर्य, संयोग श्रृंगार का वर्णन।
4. ऐतिहासिक तथ्यों की अवहेलना और कल्पना की अधिकता।
5. प्रबंध और मुक्तक काव्यों की रचना।
6. साहित्य की मुख्य भाषा डिंगल।
7. प्रबंध काव्य में छंदों का परिवर्तन।
8. भाषा विकास के अध्ययन की दृष्टि से रचनाओं का महत्व।

2. भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल)

भक्तिकाल का समय संवत् 1375 से 1700 तक माना जाता है। वीरगाथा काल में पारस्परिक युद्धों के होते हुए भी राजपूत राजा विदेशी मुसलमानों का वीरतापूर्वक सामना करते थे और धीरे-धीरे उनमें शत्रुओं से लोहा लेने का उत्साह घटता गया और मुसलमान भारत में आधिपत्य जमाते गए। दिन-ब-दिन मुसलमानों के अत्याचार बढ़ते गए। हिंदुओं के मंदिर तोड़े जाने लगे और उनके स्थान पर मसजिदें बनने लगी। अब जनता ने निराश होकर भगवान की शरण ली। ऐसे समय में भक्ति की धारा दक्षिण से उत्तर की ओर बही।

दक्षिण में यह परंपरा बहुत प्राचीनकाल से आलवार संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित थी। आलवारों का भक्ति-संप्रदाय बहुत उदार था, उसमें छूआछूत आदि के जटिल बंधन नहीं थे। उनकी भक्ति जन साधारण की वस्तु थी।

श्री रामानंद और श्री वल्लभाचार्य जी ने उत्तर भारत में वैष्णव मत का प्रचार किया। रामानंद जी ने राम की सगुण भक्ति का प्रचार किया जब कि वल्लभाचार्य जी ने कृष्ण की सगुण भक्ति का। रामानंद के संप्रदाय में आगे चलकर महाकवि तुलसीदास हुए और वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग में सूरदास, नंददास इत्यादि अष्टछाप के कवियों को अपनी प्रतिभा के कारण विशेष गौरव मिला। रामानंद के शिष्यों में ही कबीर भी थे, जिन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार करके एक नया संप्रदाय चलाया जिसे संत-संप्रदाय कहते हैं। मुसलमानों की ओर से भारतवासियों से अपनत्व जोड़ने के उद्देश्य से एक नया संप्रदाय चल पड़ा जिसे सूफी संप्रदाय कहते हैं। इस प्रकार इस काल में सगुण तथा निर्गुण भक्ति भावनाओं से पूर्ण साहित्य का सृजन हुआ। इस काल का नाम भक्ति काल पड़ा। इस काल की चार शाखाएँ इस प्रकार हैं:- 1. ज्ञानमार्गी शाखा 2. प्रेममार्गी शाखा (इन दोनों शाखाओं ने निर्गुणोपासना का प्रचार किया) 3. रामभक्ति शाखा 4. कृष्ण भक्ति शाखा (इन दोनों शाखाओं ने सगुणोपासना का प्रचार किया।)

भक्ति की समान भावनाएँ

वास्तव में भक्ति साहित्य हारी हुई मनोवृत्ति का साहित्य नहीं है। इसका बीज इसी देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों में मिलता है। भक्ति के इस महान साहित्य में कुछ ऐसी समान भावनाएँ दृष्टिगोचर होती हैं जो निर्गुण-सगुण सभी प्रकार के भक्तों की रचनाओं में आदर्श रूप में रखी गई हैं। इन भक्तिपरक समान भावनाओं के आधार पर ही 14 वीं शती से 16 वीं शती के मध्य भाग तक के हिंदी साहित्य को भक्ति साहित्य की संज्ञा दी गयी है। भक्ति साहित्य में पाई जानेवाली समान भावनाएँ इस प्रकार हैं:

1. नाम की महिमा

2. गुरु महिमा

3. भक्ति-भावना का प्राधान्य

4. अहंकार का त्याग

5. आडंबरों का खण्डन

6. सादे जीवन में विश्वास

ज्ञानमार्गी शाखाः-

भक्ति काल के आरंभ की धार्मिक परिस्थितियों ने इस शाखा को जन्म दिया। हिंदू और मुसलमानों के बीच एकता पैदा करने के उद्देश्य से महात्मा कबीर ने दोनों धर्मों की आंतरिक विशेषताओं को लेकर मानवता का समर्थन किया। संत कवि ईश्वर को निर्गुण, निराकार, आदि, अनंत तथा सर्वव्यापी मानते थे। उनका विचार था कि योग, ज्ञान और भक्ति के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

इन संतों ने परमात्मा को पुरुष और आत्मा को स्त्री मानकर ईश्वर की उपासना की है। उनकी दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा नहीं था। ऊँच-नीच, जात-पाँत के झगड़ों से वे सर्वथा अलग थे। संत साहित्य में भारतीय ब्रह्मवाद, मुसलमानी एकेश्वरवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस शाखा के कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है। इस शाखा के मुख्य कवियों के नाम इस प्रकार हैं- कबीर, दादू, मलूकदास, रैदास आदि। प्रबंध काव्य की अपेक्षा इस शाखा के कवियों ने मुक्तक काव्य ग्रंथों की रचना मात्र की है।

निर्गुण संत-मत के सिद्धांत

संत मत का आविर्भाव हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। देश की विचित्र परिस्थितियों ने इस मत को जन्म दिया। संतों ने इन विचित्र परिस्थितियों का पूर्ण सामंजस्य कर के देश का बड़ा उपकार किया है। संतों ने उस सामान्य भक्ति मार्ग की स्थापना की, जो हिंदू और मुसलमान दोनों के बीच समान रूप से रखा जा सकता था। साथ ही संत मत में गोरख पंथियों के हठयोग, वेदांतियों के ज्ञानवाद, सूफियों के प्रेमवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद और प्रपत्तिवाद का भी सुंदर और सफल समन्वय हुआ है। उनमें सामाजिक समन्वय का भी विशेष महत्व है। इस प्रकार के समन्वय द्वारा संत मत ने हिंदी साहित्य और हिंदी भाषी प्रदेश दोनों को गौरवांवित किया है।

संत मत के सिद्धांत इस प्रकार हैंः-

1. ईश्वर 2. माया 3. हठयोग

4. सूफीमत 5. रहस्यवाद 6. रूपक शैली।

इस शाखा की निम्न प्रकार विशेषताएँ हैं:-

1. संत कवि निर्गुणोपासक थे।
2. जाति-पाँति के भेदभाव के विरोधी थे।
3. गुरु को गोविंद से भी बड़ा मानकर अधिक महत्त्व देते थे।
4. धर्म के बाह्याडंबरों का विरोध करते थे और मानव-धर्म को महत्त्व देते थे।
5. हिंदू और मुसलमानों में एकता लाने का प्रयत्न करते थे।
6. उनकी भाषा सधुक्कड़ी थी। संत कवियों की भाषा सरल थी।
7. संतकाव्य में भारतीय रहस्यवादी प्रवृत्ति का दर्शन होता था।
8. संत कवि माया की घोर निंदा करते थे।
9. वैयक्तिक साधना पर जोर देते थे।

प्रेममार्गी शाखा :-

भारत में मुसलमानों का शासन स्थापित हो गया था। युद्ध से हिंदू और मुसलमान दोनों ऊब गए थे। मुसलमान समझ गए थे कि भारत में वास करना है तो हिंदुओं से शत्रुता का भाव दूर करना आवश्यक है। अतः कबीर के समान ही मुसलमानों में भी कुछ ऐसे संत निकले जो कबीर का ही कार्य पूरा करना चाहते थे। इन संतों को सूफी कहते हैं। सूफी लोग सफेद ऊन के कपड़े पहना करते थे। वे एकेश्वरवादी थे तथा प्रेम को अधिक महत्त्व देते थे। इनका विश्वास था कि प्रेम के द्वारा भगवान की प्राप्ति होती है। इसके लिए गुरु का सहयोग आवश्यक है। सूफी कवियों ने आत्मा को पुरुष और परमात्मा को स्त्री माना है।

इन कवियों ने हिंदुओं की प्रसिद्ध कहानियों के आधार पर 'मधुमालती', 'मृगावती', 'पद्मावत' आदि प्रेम संबंधी कहानियों का सृजन किया है। लौकिक कहानियों के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की है। जिस प्रकार संतों ने आत्मा और परमात्मा के मिलने में माया को बाधक माना है, उसी प्रकार सूफी कवियों ने शैतान को बाधक माना है। इनका विचार था कि ईश्वर प्राप्ति के लिए आत्मा को शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारिफत नाम की चार अवस्थाएँ पार करनी पड़ती है। इनका मत इस्लाम धर्म की अपेक्षा भारतीय वेदांत के अधिक अनुकूल है। इस शाखा के कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया है। मलिक मुहम्मद जायसी, नूर, कुतुबन, उस्मान आदि इस शाखा के मुख्य कवि हैं।

सूफीमत के सिद्धांत

सूफीमत का भारत में प्रवेश मुसलमान साधुओं के साथ हुआ। भारतवर्ष का व्यापारिक संबंध मुसलमानी आक्रमण के शताब्दियों पूर्व, योरोपीय जातियों से स्थापित हो चुका था। व्यापार का मार्ग

ईरान से होता था। अतः इस्लाम विजय के शताब्दियों पूर्व बौद्ध धर्म के विचार और वेदांत ईरान में पहुँच चुके थे। इस्लाम के विजयी होने पर भी ईरान की सुसंस्कृत, भावुक और उदार मिट्टी अपने पूर्व विचारों का सर्वथा परित्याग न कर सकी और सूफी कवियों की वाणी में प्रस्फुटित होकर विश्व को प्रभावित करती रही। सूफी संतों का संप्रदाय हिंदू-धर्म से बहुत अधिक प्रभावित हुआ है। इस प्रकार सूफी धर्म में इस्लाम और हिंदू-धर्म का अपूर्व संगम हुआ। मलिक मुहम्मद जायसी इस शाखा के प्रधान कवि थे। कुतबन, मंझन, उस्मान, शेखनबी, काशिमशाह, नूरमुहम्मद, फजिलशाह आदि कवि इसी परंपरा में आते हैं।

सूफीमत के सिद्धांत इस प्रकार हैः-

1. ईश्वर (ईश्वर एक)
2. प्रेम (एकमात्र साधन)
3. शैतान और पीर (गुरु)
4. जीवन
5. सृष्टि
6. अन-अल-हक्क़ (ईश्वर और जीव एक)

इस शाखा की निम्न विशेषताएँ हैंः-

1. सूफी-कविताएँ हिंदू-कथाओं के आधार पर की गई हैं।
2. रचना में मसनवी शैली का प्रयोग किया गया है।
3. इस शाखा के सारे कवि सूफी धर्मावलंबी हैं।
4. कवियों ने लौकिक प्रेम के आधार पर अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है।
5. ठेठ अवधी भाषा का इन्होंने प्रयोग किया है।
6. आत्मा को पुरुष और परमात्मा को स्त्री माना है।
7. माया के स्थान पर शैतान को स्वीकार किया है।
8. इस शाखा में प्रबंध काव्यों की प्रधानता है।
9. सभी कवियों ने श्रृंगार रस को प्रधान रूप में स्वीकार किया है।
10. सूफी-कवियों ने दोहा-चौपाइयों में ही ग्रंथ की रचना की है।

रामभक्ति शाखा

महात्मा रामानंद ने पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रामभक्ति का प्रचार किया। रामानंद, रामानुजाचार्य की परंपरा में थे। उन्होंने राम को भगवान विष्णु का अवतार मानकर उनकी मर्यादापूर्ण भक्ति का प्रचार उत्तर भारत में किया। उपासना के क्षेत्र में ये जात-पाँत और ऊँच-नीच

के भाव को नहीं मानते थे। इनके शिष्यों में सभी जाति के लोग थे। कबीर भी इन्हें के शिष्य थे। तुलसीदास भी श्री रामानंद के ही शिष्य थे। रामभक्ति का पूर्ण विकास तुलसीदास के द्वारा हुआ। इन्होंने अपने गुरु रामानंद जी के सिद्धांतों को पूर्ण रूप से अपनाया और रामचरितमानस जनता की भाषा में लिखकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम की भक्ति का प्रचार किया। तुलसी के साहित्य में लोक मर्यादा का पालन हुआ जो जन कल्याण की भावनाओं से पूर्ण है। तुलसीदास के अतिरिक्त इस शाखा के अन्य कवियों के नाम इस प्रकार हैं: अग्रदास, नाभादास आदि। तुलसी की प्रतिभा के सामने ये सब कवि फीके पड़ गए। इस शाखा के कवियों ने शुद्ध अवधी भाषा का प्रयोग किया।

सगुण-मत के सिद्धांत

भक्ति काल में सगुण धर्म का प्रचार करने में चार महान आचार्यों ने सहयोग दिया। वे थे रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, विष्णुस्वामी और निंबार्क। इनके बाद कुछ आचार्य और हुए जिन्होंने वैष्णव धर्म को व्यापक बनाया। इनमें रामानंद, चैतन्य और वल्लभाचार्य प्रमुख हैं - रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैतवाद, माधवाचार्य ने द्वैतवाद, विष्णुस्वामी ने शुद्धाद्वैतवाद और निंबार्क ने द्वैताद्वैत वाद की स्थापना की थी।

सगुण मत के सिद्धांत इस प्रकार हैः-

1. सगुणोपासना
2. अवतार
3. भगवान की लीला
4. भक्ति का रूप
5. मोक्ष

इस शाखा की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैंः-

1. विष्णु के अवतार राम की सेव्य-सेवक भावना से भक्ति की गई।
2. ज्ञान और कर्म से भक्ति को श्रेष्ठ माना गया।
3. वर्णाश्रम धर्म के आधार पर बनी समाज व्यवस्था का समर्थन किया गया।
4. राम-काव्य में प्राय:मर्यादा की झलक मिलती है।
5. अपने कर्मों और गुणों की अपेक्षा भगवान की कृपा को अधिक महत्व दिया गया।
6. विविध शैलियों में प्रबंध तथा मुक्तक काव्य की रचनाएँ की गईं।
7. शुद्ध साहित्यिक अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया।

कृष्ण भक्ति शाखा

हिंदी साहित्य में कृष्ण काव्य का आरंभ विद्यापति से हुआ। जयदेव के 'गीत गोविंद' से प्रभावित होकर विद्यापति ने राधा और कृष्ण को अपने काव्य का विषय बनाया और उनके मिलन तथा वियोग का श्रृंगार रस पूर्ण वर्णन किया। श्री वल्लभाचार्य ने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ का मंदिर स्थापित करवाकर कृष्ण भक्ति का प्रचार किया। कृष्ण के अनन्य भक्त सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य बने। सूरदास को श्रीनाथ में मंदिर की कीर्तन-सेवा सौंपी गई। वल्लभ के आदेश से सूर ने भगवान की कथा को गाने योग्य पदों में रचकर कृष्णभक्ति को विस्तृत किया। वल्लभाचार्य के बाद उनके पुत्र विट्ठलनाथ ने कृष्ण भक्तों में से आठ श्रेष्ठ भक्तों को चुनकर 'अष्टछाप' की स्थापना की। उन आठ कवियों में सूरदास और नंददास का नाम अधिक प्रसिद्ध है। ये कवि श्री कृष्ण की लीलाओं का गान किया करते थे। इस शाखा के कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग किया। इस शाखा के कवियों में सूरदास, नंददास, रसखान, मीरा, हितहरिवंश आदि अधिक प्रसिद्ध हैं। अष्टछाप के कवि हैंः- सूरदास, परमानंददास, कुम्भनदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, कृष्णदास, नंददास, चतुर्भुजदास।

वल्लभाचार्य के सिद्धांत

वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत मत का प्रतिपादन किया। ये ब्रह्म में दो अचिन्त्य शक्तियाँ मानते हैं- एक आविर्भाव की और दूसरी तिरोभाव की। उसके सत्, चित् और आनंद तीन स्वरूप हैं। वह अपनी शक्ति द्वारा जगत के रूप में परिणत भी हो जाता है और परे भी रहता है। वह अपने स्वरूप का कहीं आविर्भाव और कहीं तिरोभाव किए रहता है। जीवन के रूप में उसका सत् और चित् आविर्भाव रहता है और आनंद तिरोभूत। जड़ में सत् ही आविर्भाव रहता है, जबकि शेष दोनों तिरोभूत। इस प्रकार उन्होंने शंकर के अद्वैत के मायावाद को शुद्ध करके अपने मत का प्रतिपादन किया। अतः इनका मत शुद्धाद्वैत कहलाता है और उसी प्रकार भक्ति के क्षेत्र में उनका साधना मार्ग, 'पुष्टि मार्ग' कहलाता है।

1. कृष्ण (परब्रह्म)
2. आत्मा (परमात्मा का अंश)
3. प्रकृति (परब्रह्म की अभिव्यक्ति)

इस शाखा की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैंः-

1. भागवत के दशमस्कंद के आधार पर श्री कृष्ण की बाल-लीलाओं का, भ्रमरगीत तथा रासलीला का विस्तृत वर्णन किया गया।

2. संगीत का विशेष ध्यान रखकर कृष्ण कथा को गीति काव्य के रूप में रचा गया। मुक्तक शैली का प्रयोग हुआ।
3. वात्सल्य रस तथा ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया।
4. साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया।
5. साख्य से कृष्ण की भक्ति की गयी।
6. ज्ञान और कर्म से भक्ति को श्रेष्ठ माना गया।
7. उत्कृष्ट प्रेम का वर्णन किया गया।

अष्टछाप

पुष्टिमार्गी कवियों में से गोसाईं विट्ठलनाथ ने अपने पिता के चार और अपने चार शिष्यों की एक मण्डली बनाई। इस मण्डली के आठों भक्त अपने समय में 'पुष्टि संप्रदाय' के सर्वश्रेष्ठ काव्यकार और कीर्तनकार थे। ये आठों भक्त कवि गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के सहवास में एक दूसरे के समकालीन थे।

ब्रज में गोवर्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथजी के मंदिर में कीर्तन-सेवा और वहीं रहकर भगवत्भक्ति की पद-रचना करते थे। पुष्टि-संप्रदाय के अनेक शिष्यों में से उन आठों का निर्वाचन करके गोसाईं विट्ठलनाथ ने उन पर अपने आशीर्वाद की छाप लगाई थी। इस मौखिक तथा प्रशंसात्मक छाप के बाद ही ये महानुभाव 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन कवियों के नाम इस प्रकार हैंः-

1. सूरदास, 2. कुम्भनदास, 3. परमानंददास, 4. कृष्णदास, 5. नंददास, 6. गोविंदस्वामी, 7. छीतस्वामी, 8. चतुर्भुजदास।

प्रथम चार कवि महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे। सूरदास अष्टछाप कवियों में सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

3. रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल)

इस काल का समय संवत् 1700 से 1900 तक माना जाता है। भक्तिकाल में मुसलमानों के आतंक के कारण भारत में अशांति फैली हुई थी। इस काल के आते-आते देश में शांति स्थापित हो चुकी थी। जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासन काल में भारत में विलासिता का वातावरण छा गया था। मुसलमानों की छत्रछाया में रहनेवाले भारतीय राजा भी विलासिताप्रिय हो गए थे। इस विलासिता का प्रभाव कवियों पर भी पड़ा। विलासप्रिय राजाओं को विलासितापूर्ण कविता सुनने के

अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं सुधरता था। अतः कवियों को राजाश्रय मिलने लगा। राजा की चित्तवृत्ति के अनुसार इस काल के कवि विलासितापूर्ण कविताएँ रचकर अपने आश्रयदाता को प्रसन्न किया करते थे। इस प्रकार श्रृंगारपूर्ण साहित्य का निर्माण होने लगा। राधा-कृष्ण को सामान्य मानव के रूप में चित्रित कर उनका अश्लील रूप से वर्णन करके कवि अपने आश्रयदाताओं को कामशास्त्र की शिक्षा देने लगे। इस काल में अधिकांशतः मुक्तक काव्य ही रचे गए। भक्तिकाल में भाव पक्ष जहाँ, प्रधान थे, वहीं रीतिकाल में कलापक्ष प्रधान हो गये। नायिकाओं का श्रृंगार वर्णन अलंकार पूर्ण छंदों में होने लगा। नायिका का नख-शिख वर्णन करना कवियों की सामान्य प्रवृत्ति हो गई थी।

आचार्यत्व पाने के उद्देश्य से अनेक कवि संस्कृत के रीतिग्रंथों के आधार पर रीति-ग्रंथ लिखने लगे। इस काल में रस, अलंकार तथा छंदों का शास्त्रीय विवेचन किया गया। इस काल में कुछ ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने श्रृंगारिक काव्य से हटकर अन्य रसों में काव्य का सृजन किया। इस काल के कवियों ने अपने साहित्यिक भावों की अभिव्यक्ति के लिए ब्रजभाषा का उपयोग किया। बिहारी, देव, भूषण, केशवदास आदि इस काल के प्रमुख कवि हैं। वैसे इस काल में तीन प्रकार के कवि मिलते हैं - रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और वीररस के कवि।

रीतिमुक्त काव्य-धारा

रीतिकाल में दो प्रकार के कवि मिलते हैं- रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कवि। इस काल में स्वच्छ मनोवृत्ति वाले ऐसे कवियों का जन्म हुआ, जो रीति के बंधनों को तोड़कर अपने उन्मुक्त हृदय के भावों की सरलता को अबाधरूप में प्रवाहित करते रहे। इस प्रकार के रीतिमुक्त कवियों में आलम, घनानंद, बोधा, ठाकुर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों की कविताओं में स्वच्छंद प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

इस काल की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं:-

1. श्रृंगार रस की प्रधानता रही। वीर तथा शांत रसों में कम रचनाएँ की गई।
2. काव्यों में अलंकरण का प्राधान्य रहा।
3. लक्षण-ग्रंथ अधिक लिखे गए।
4. मौलिकता का अभाव रहा।
5. काव्यों में नारी के प्रेमिका स्वरूप का प्राधान्य रहा।
6. ब्रजभाषा का प्राधान्य रहा।
7. प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण हुआ।
8. मुक्तक-काव्यों का निर्माण हुआ। अर्थात् इस काल में मुक्तक शैली की प्रधानता रही।
9. काव्य में चमत्कार लाने के लिए आलंकारिक प्रवृत्ति अपनायी गयी।

4. गद्‌यकाल (आधुनिक काल)

आधुनिक काल का समय संवत् 1900 से आज तक माना जाता है। इस काल को गद्‌यकाल भी कहते हैं। इस काल में गद्‌य का विकास आरंभ हुआ। गद्‌य के तेज़ी से विकसित होने का कारण अंग्रेज़ी शासन था। अंग्रेज़ों की शोषण नीति से भारतीय जनता में एक प्रकार की नवीन चेतना आई। अपने कार्य सिद्‌ध करने के उद्‌देश्य से अंग्रेज़ों ने अंग्रेज़ी शिक्षा का अधिक प्रचार किया। इससे जनता में राष्ट्रीय चेतना आई। कई गद्‌य और पद्‌य की राष्ट्रीय भावों से संबंधित ग्रंथों की रचना की जाने लगी। इससे जनता ने स्वतंत्रता का मूल्य समझा और यह नारा लगाया कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्‌ध अधिकार है। कांग्रेस तथा अन्य समाज सुधारकों ने समझा कि अपने समाज की बुराइयों को दूर करना आवश्यक है। कवि और लेखकों ने भी इसमें अपने कर्त्तव्य को निभाया। इस कारण साहित्य का रूप बदल गया। देशोद्‌धार, समाज-सुधार, धार्मिक परिस्थिति में परिवर्तन आदि से संबंधित साहित्य का निर्माण होने लगा। इस काल में पद्‌य और गद्‌य दोनों के लिए खड़ीबोली को अपनाया गया। एक प्रकार से इस काल में खड़ीबोली का एकछत्राधित्य स्थापित हुआ। खड़ी बोली को संवारकर और सजाकर प्रयोग किया जाने लगा।

आधुनिक काल में साहित्य की विशेषताएँ:-

1. गद्‌य का आविर्भाव और उसका बहुमुखी विकास इस युग की प्रमुख विशेषता है, इसी कारण इस काल का नामकरण 'गद्‌यकाल' किया गया है।
2. नवयुग की चेतना की अभिव्यक्ति के लिए काव्य में भी धीरे-धीरे खड़ीबोली का व्यवहार होने लगा और खड़ी बोली हिंदी राष्ट्रभाषा हो गई।
3. इस काल में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।
4. इस काल के साहित्य में जनवादी विचारों की अभिव्यक्ति हुई। इस प्रकार नवयुग की चेतना का विकास हुआ।
5. इस काल के साहित्य में विविध शैलियों कजरी, ठुमरी, लावनी, छायावाद, अकविता इत्यादि का विकास हुआ।
6. श्रृंगार रस की भावना का विकास की चरम परिणति छायावादी काव्य में हुई।
7. इस काल के साहित्य में प्रकृति-सौंदर्य का विशद एवं मधुर चित्रण हुआ।
8. इस काल के साहित्य में 'वादों' की प्रधानता रही।
9. इस काल में साहित्य पर अंग्रेज़ी साहित्य का प्रभाव बहुत व्यापक और बहुमुखी रहा।
10. इस काल में साधारण विषयों – कूड़ा कर्कट, धोबियों का कुकुरमुत्ता, मिल का भौंपू, रेल इंजन इत्यादि को साहित्य का विषय बनाया गया है।

सारांश में साहित्य की व्यापकता, विविधता, गहनता इत्यादि की दृष्टि से इस काल को स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

आधुनिक काल को सुविधा की दृष्टि से चार युगों में बाँटा गया है। प्रत्येक युग का नामकरण

तत्कालीन समय के प्रतिभावना साहित्यकार के नाम पर किया गया है। प्रत्येक युग को पच्चीस वर्षों के अंतर में बाँटा गया है।

1. प्राचीन युग - सं. 1900 से 1925 तक।
2. प्रथम उत्थानकाल (भारतेंदु-युग) 1925 से 1950 तक।
3. द्वितीय उत्थानकाल 1950 से 1975 तक (द्विवेदी-युग)।
4. तृतीय उत्थानकाल 1975 से आजतक (प्रसाद-प्रेमचंद-शुक्ल-युग)

हिंदी गद्य का विकासः-

संवत् 1900 तक का हिंदी साहित्य पद्यबद्ध रूप में रहा है। अंग्रेजों के आगमन के बाद ही से पद्य के साथ-साथ गद्य में भी साहित्य लिखा जाने लगा। संवत् 1900 के पूर्व गद्य के होते हुए भी साहित्य के लिए उसका उपयोग नहीं के बराबर था।

आधुनिक काल से पूर्व ब्रजभाषा में थोड़ा बहुत गद्य लिखा गया था। गोरखपंथी साहित्य में ब्रजभाषा गद्य का प्रारंभिक रूप दिखता है। इसके बाद श्री विट्ठलनाथ ने 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' ब्रजभाषा गद्य में लिखा है।

खड़ीबोली दिल्ली, मेरठ तथा उसके आस-पास बोली जाती है। इस भाषा में गद्य की रचना सर्वप्रथम गंग कवि ने 'चंद बरनन की महिमा' संवत् 1572 में की।

रामप्रसाद निरंजनी का 'भाषा योगवशिष्ट' संवत् 1798 में आता है।

आधुनिक काल में खड़ीबोली गद्य के चार आचार्यों के नाम आते हैं। वे हैं मुंशी सदासुख लाल, इंशाअल्ला खां, लल्लू लाल और सदलमिश्र। इनमें प्रथम दोनों ने स्वतंत्र रूप में हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखी और बाद के दोनों ने कलकत्ते के फोर्ट विलियम कॉलेज में सरकारी नौकरी करते हुए हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखीं।

ईसाई पादरियों ने हिंदी गद्य में अपने धर्म का प्रचार किया। छापेखानों के आने के कारण इन्हें अपने धर्म प्रचार में अधिक सुविधा मिली। सन् 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और हिंदी गद्य में 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखकर हिंदी गद्य को और आगे बढ़ाया।

भारतेंदु हरिचंद्र जी आधुनिक हिंदी गद्य के जन्मदाता कहे जाते हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य के सारे अंगों को विकसित करने का प्रयत्न किया। वे स्वयं नाटक, उपन्यास, कहानी लिखते थे और अपने साथियों को लिखने का प्रोत्साहन देते थे। उन्होंने साहित्यकारों की एक मण्डली स्थापित की। उस मण्डली के लेखकों में प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बाबू बालमकुंद गुप्त, आदि थे। इन लोगों ने नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध आदि की रचनाएँ की। भारतेंदु युग में साहित्य का निर्माण तो अच्छा हुआ, किंतु भाषा की शुद्धता पर लेखकों ने ध्यान नहीं दिया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भाषा की शुद्धता पर अधिक ध्यान दिया। द्विवेदीजी स्वयं व्याकरण सम्मत भाषा में लेख लिखते थे और अपने समय के लेखकों को भी शुद्ध भाषा में लिखने

का प्रोत्साहन देते थे। सरस्वती नामक पत्रिका का संपादन करते हुए आपने हिंदी की अद्‌वितीय ढंग से सेवा की। द्‌विवेदी जी के युग में पद्‌मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, श्याम सुंदरदास आदि उच्चकोटि के साहित्यकार हिंदी के क्षेत्र में आए और उन्होंने अपनी प्रतिभा से हिंदी गद्‌य को अधिक विकसित किया।

वर्तमान युग में हिंदी गद्‌य का महत्त्वपूर्ण विकास हुआ। श्री रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद्र, जयशंकर प्रसाद जैसे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखकों ने हिंदी साहित्य के सारे अंगों को पूर्ण विकसित करने का प्रयत्न किया।

नाटक-साहित्य का विकासः-

भारतेंदु हरिश्चंद्र से पूर्व कुछ नाटक लिखे गए, किंतु उनमें नाटकीय तत्वों का अभाव था। भारतेंदु बाबू ने स्वयं अनेक नाटक लिखकर हिंदी साहित्य का भण्डार भरा। उनके नाटकों में चंद्रावली, भारत दुर्दशा, मुद्राराक्षस आदि प्रसिद्‌ध हैं। भारतेंदु के समकालीन बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन, बाबू राधाकृष्णदास आदि ने नाटकों की रचना की। इस युग में मौलिक नाटक भी रचे गए और अनेक नाटक अनुदित हुए।

द्‌विवेदी युग में नाटक रचना में कुछ शिथिलता आ गई। मौलिक नाटकों का प्रायः अभाव ही रहा। कुछ नाटक संस्कृत, अंग्रेज़ी और बंगला से अनूदित होते रहे। द्‌विवेदी युग के अंतिम समय में जयशंकर प्रसाद इस क्षेत्र में आए।

जयशंकर प्रसाद की प्रतिभा ने भारतीय और विदेशी नाटक शैली के सम्मिश्रण से एक नवीन शैली को जन्म दिया। अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त आदि प्रसादजी के प्रसिद्‌ध नाटक हैं। श्री हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्‌ट, माखनलाल चतुर्वेदी, पं.गोविंदवल्लभ पंत आदि लेखकों ने नाटक लिखकर हिंदी नाटक साहित्य का भण्डार भरा है।

उपन्यास साहित्य का विकासः-

हिंदी साहित्य के अन्य अंगों के समान भारतेंदुबाबू हरिश्चंद्र जी के समय से ही उपन्यासों की रचना आरंभ हुई। आरंभिक समय में बंगला, मराठी और अंग्रेज़ी से अनेक उपन्यास अनूदित हुए। बाद में मौलिक उपन्यास लिखे गए। पहला मौलिक उपन्यास लालाश्रीनिवास का 'परीक्षा गुरु' है।

मनोवैज्ञानिकतापूर्ण चरित्र प्रधान उपन्यास लिखनेवाले प्रेमचंदजी साहित्य के क्षेत्र में आए। इन्हें हिंदी उपन्यासों का सम्राट कहा जाता है। इनके उपन्यासों में सेवासदन, गोदान, रंगभूमि, निर्मला, गबन आदि अधिक प्रसिद्‌ध हैं। अन्य उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, वृंदावनलाल वर्मा, जैनेंद्रकुमार, यशपाल, रांगेय राघव आदि प्रसिद्‌ध हैं।

निबंध साहित्य का विकासः-

भारतेंदुकाल में ही निबंधों की रचनाएं आरंभ हुई। स्वयं भारतेंदु ने राजनैतिक चेतना से पूर्ण कई निबंध लिखे। अतः उन्हें निबंधों का जन्मदाता माना जाता है। इस युग के निबंधकारों में बालकृष्ण भट्‌ट, प्रतापनारायण मिश्र आदि प्रसिद्‌ध हैं।

द्विवेदी युग में सरस्वती नामक पत्रिका में जीवन के विविध विषयों पर अनेक निबंध लिखे गए। इस युग के निबंधकारों में श्यामसुंदर दास, गुलाबराय, सरदार पूर्णसिंह आदि उल्लेखनीय हैं।

निबंध के क्षेत्र में रामचंद्र शुक्लजी अद्वितीय माने जाते हैं। इनके निबंध 'चिंतामणि' में संग्रहित हैं। शुक्ल जी से प्रभावित निबंधकारों में नंददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि प्रसिद्ध है, जिन्होंने विचारात्मक तथा समीक्षात्मक निबंध लिखकर हिंदी निबंध साहित्य का बहुमुखी विकास किया है।

कहानी साहित्य का विकासः—

साहित्य के अन्य अंगों के समान ही कहानी का प्रारंभ भी भारतेंदु युग से ही हुआ। इस युग में कुछ मौलिक और कुछ अनूदित कहानियाँ लिखी गईं। सर्वप्रथम कहानी लिखनेवाले इंशाअल्ला खाँ हुए।

द्विवेदी युग में आधुनिक ढंग की कहानी का प्रारंभ हुआ। द्विवेदी जी द्वारा संपादित सरस्वती नामक पत्रिका में बहुत-सी कहानियाँ प्रकाशित होती रहीं। कुछ कहानियाँ अनूदित भी थीं। इस समय के कहानी लेखकों में जयशंकर प्रसाद, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, चंद्रधर शर्मा गुलेरी विशेष प्रसिद्ध हैं।

इसके बाद प्रेमचंद्र जी ने अनेक कहानियाँ लिखकर हिंदी साहित्य का भण्डार भरा। उनकी कहानियों में नवीनता और मौलिकता पायी जाती है। इस समय के अन्य लेखकों में यशपाल, रांगेय राघव, इलाचंद्र जोशी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, जैनेंद्रकुमार आदि प्रसिद्ध हैं।

हिंदी आलोचना साहित्यः-

आधुनिक काल के गंभीर और उच्चकोटि की आलोचना शैली के प्रवर्त्तक आचार्य पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. श्यामसुंदर दास, पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि सुप्रसिद्ध आलोचक माने जाते हैं।

हिंदी-आलोचना का वर्तमान युग बहुत समृद्ध है। अनेक नवीन समीक्षा पद्धतियों का आविर्भाव हो रहा है। वर्तमान युग में मुख्य रूप से निम्नलिखित समीक्षा-पद्धतियाँ विकसित हो रही हैंः-

1. सैद्धांतिक आलोचना - पद्धति।
2. प्रभावात्मक आलोचना - पद्धति।
3. निर्णयात्मक आलोचना - पद्धति।
4. व्याख्यात्मक आलोचना - पद्धति।
5. तुलनात्मक आलोचना - पद्धति।
6. प्रगतिवादी आलोचना - पद्धति।
7. मनोविश्लेषणात्मक आलोचना - पद्धति।
8. ऐतिहासिक आलोचना - पद्धति।

हिंदी पद्य का विकास

हिंदी साहित्य के अन्य कालों की अपेक्षा आधुनिक काल की परिस्थिति सर्वदा भिन्न है। रीतिकालीन विलासिता का पर्दा हट गया। जनता में देशभक्ति की भावना जागृत हुई। आर्य समाज ने समाज-सुधार पर जोर दिया। इन्हीं परिस्थितियों के कारण विभिन्न प्रकार की भावनाओं से भरे साहित्य का सृजन हुआ। अतः आधुनिक काल की कविता को अनेक युगों में बाँटा गया है।

1. भारतेंदु युग - सन् 1868 से सन् 1903 तक।
2. द्विवेदी युग - सन् 1903 से सन् 1916 तक।
3. छायावादी युग - सन् 1916 से सन् 1936 तक।
4. प्रगतिवादी युग - सन् 1936 से सन् 1943 तक।
5. प्रयोगवादी युग - सन् 1944 से सन् 1960 तक।

1. भारतेंदु युगः-

अंग्रेज़ राज्य की प्रतिष्ठा, उनकी शिक्षा तथा उनकी विचारधारा के कारण सुधारवादी विचारों से प्रभावित होकर इस युग के कवियों ने देश-प्रेम, समाज सुधार आदि विषयों पर पद्य की रचनाएँ की। भारतेंदुजी ब्रजभाषा को ही पद्य के अनुकूल समझते थे। अतः इस युग में कविता के लिए ब्रजभाषा और गद्य के लिए खड़ी बोली का प्रयोग हुआ। इस युग के कवियों ने अपनी कविता द्वारा भारत के अतीत गौरव को जनता के सम्मुख रखा और समाज में फैली कुरीतियों को हटाकर जनता और देश से प्रेम करने का प्रयत्न किया। इस युग के कवियों में भारतेंदु, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र आदि प्रसिद्ध हैं।

2. द्विवेदी युगः-

भारतेंदु युग प्राचीन तथा नवीन का समन्वय था। उस युग में राजभक्ति, देशभक्ति, समाज-सुधार, अतीत का गौरव गान आदि प्रारंभ हो चुके थे। द्विवेदी युग में जनता अंग्रेज़ों की कूटनीति समझ गई। अतः कांग्रेस के रूप में उसका विरोध आरंभ हुआ। राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर जनता ने अंग्रेज़ों को भारत से निकालने का प्रयत्न किया। इसके प्रभाव से साहित्य में परिवर्तन आया। भाषा को व्याकरण के अनुसार व्यवस्थित किया गया। पद्य खड़ीबोली में लिखा जाने लगा। उपदेशात्मक तथा इतिवृतात्मक कविताएँ लिखी गई। कवियों ने अभिव्यक्ति के लिए संस्कृत छंदों का प्रयोग किया। इस युग की कविताओं में आशा और विश्वास पर जोर दिया गया। श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त आदि इस युग के प्रमुख कवि हैं।

3. **छायावादी युगः-**

इस युग में राजनैतिक परिवर्तन के कारण साहित्य में भी परिवर्तन उपस्थित हुआ। भारत को स्वतंत्र करना अंग्रेज़ों को अभीष्ट नहीं था। कांग्रेस के आंदोलन असफल हो रहे थे। जनता में निराशा फैल गई थी। इस प्रकार के कोलाहल से दूर हटकर एकांत में बैठकर कुछ कवि अपने सुख-दुख के गीत गाने लगे। ये कवि अंतर्मुखी होकर अपनी अतृप्त अभिलाषाओं को लेकर काल्पनिक जगत में विचरते हुए अपने मन की कोमल भावनाओं को व्यक्त करने लगे।

इस प्रकार के कवि छायावादी कवि कहलाते हैं। इनकी कविताओं में व्यक्तिगत आशा, निराशा, वेदना आदि की भावनाएँ भरी रहती हैं। छायावादी कवियों की कविताएँ स्वतंत्र ढंग से भाव और कला में क्रांति करनेवाली होने के कारण जनता उसे सहज ही समझ नहीं सकी। इस युग के प्रमुख कवि श्री जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि है।

4. **प्रगतिवादी युगः-**

रूसी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित साहित्य को प्रगतिवादी साहित्य कहते हैं। इस युग की कविताओं में किसान, मज़दूर आदि के जन्मसिद्ध अधिकारों की माँग की जाने लगी। नारी के स्वातंत्र्य और समानाधिकार का प्रश्न उठाया गया। निम्नवर्ग की समस्याओं का चित्रण और उच्चवर्ग की शोषण नीति का भण्डाफोड किया गया। आदर्श की अपेक्षा यथार्थ को महत्व दिया गया। कवियों ने चलते हुए छंदों का प्रयोग किया। सबसे पहले श्री सुमित्रानंदन पंत की प्रगतिवादी कविताएँ प्रकाशित हुई। 'युगवाणी', 'बेला', 'नये पत्ते' नामक रचनाएँ प्रगतिवादी काव्य के नाम से प्रसिद्ध हैं। अन्य प्रगतिवादी कवियों में नरेंद्र शर्मा, शिवमंगलसिंह 'सुमन', नागार्जुन आदि प्रमुख हैं।

5. **प्रयोगवादी युगः-**

प्रयोगवादी हिंदी काव्य की नवीनमत प्रवृत्ति है। प्रयोगवाद के मूल में भी प्रगतिवाद के समान ही राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक असंतोष रहा है। जहाँ तक विचारधारा का संबंध है, वहाँ वे मार्क्सवाद और मनोविश्लेषण विज्ञान से प्रभावित है। काव्य के कला-पक्ष के संबंध में प्रयोगशील कवि नवीन प्रयोगों के पक्षपाती हैं और यहीं उनकी प्रयोगशीलता का रूप देखने को मिलता है। प्रयोगवाद के कला-पक्ष के विकास में आँग्ल कवि टी.ए. इलियट का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रयोगशील कविता की विषय-सामग्री सामयिक जीवन और समाज से ग्रहीत है। उसमें यौन कल्पनाओं से लेकर सामाजिक विषय भी अपनाए गए हैं। अधिकांश प्रयोगवादी कविताएँ घोर वैयक्तिकता, बुद्धिवादिता और श्रृंगारिकता से परिपूर्ण हैं। प्रयोगवादी कविता में मनुष्य की व्याकुल चेतना के दर्शन होते हैं। कवि अज्ञेय प्रयोगवाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारत भूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा, शमशेर बहादुरसिंह, धर्मवीर भारती आदि प्रयोगवादी कवि माने जाते हैं।

हिंदी काव्य सौंदर्य-रस, छंद, अलंकार

1. रस

रस काव्य की आत्मा है। कविता पढ़ने, सुनने या नाटक देखने से जो अलौकिक आनंद मिलता है उसे काव्य में 'रस' कहते हैं।

लिखित रूप से एक शास्त्रीय रीति से रस-सिद्धांत का प्रतिपादन करनेवाले प्रथम आचर्य भरत मुनि थे। उनके उपरान्त श्री भट्ट लोल्लट, अभिनव गुप्त, श्री शकुंक, भट्ट नायक आदि ने रस का विस्तृत विवेचन किया।

हिन्दी में नौ रस माने गए हैं।

'विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति' अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। आचार्य भरत मुनि ने इनके अतिरिक्त 'स्थायी भावों' का भी अलग से निरूपण किया है। विभाव, अनुभाव और संचारी भाव मिलकर वास्तव में 'स्थायी भाव' को ही उद्बुद्ध किया करते हैं। अतः इनके मत के अनुसार स्थायी भावों की उद्बुद्धि या जागृति ही रस निष्पत्ति है।

मुख्य रस (श्रृंगार, वीर, शान्त)

सहायक रस (हास्य, अद्भुत, रौद्र, भयानक, वीभत्स, करुण)

इसके अतिरिक्त 10 वाँ रस वात्सल्य रस भी मान लिया गया है।

रस के आवश्यक अंग :-

1) स्थायीभाव - प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव है । ये भाव मनुष्य के हृदय में सदा विद्यमान रहते हैं जो अनुकूल परिस्थिति में जागृत हो जाते हैं। रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, घृणा, विस्मय और निर्वेद आदि-स्थायी भाव हैं।

2) विभाव - विभाव का अर्थ "कारण" है। रस निष्पत्ति का सबसे पहला अंग विभाव है। विभाव तीन प्रकार के हैं।

(i) आलंबन विभाव - जिस व्यक्ति के प्रति भावों का संचार होता है, वही रस का आलम्बन होता है । जैसे क्रोध को जागृत करने के लिए शत्रु, श्रृंगार में प्रेम-पत्र आदि ।

(ii) उद्दीपन विभाव - भावों को उद्दीप्त (जागरित) करनेवाले विभिन्न प्रकार के कार्यों को उद्दीपन कहते हैं । जैसे परशुराम का क्रोध लक्ष्मण के कटु-वचनों के कारण और भी उद्दीप्त हो गया।

(iii) आश्रय विभाव - जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होते हैं और संचारित होते हैं उसे आश्रय कहते हैं । जैसे शिशु की क्रीडा का प्रभाव माता-पिता पर पड़ता है ।

3) अनुभाव - आश्रय की शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते है। अनु + भाव अर्थात् विभावों की जागृति के पश्चात् होनेवाली आश्रय आदि की चेष्टाएँ अनुभाव कही जाती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विभाव यदि कारण हैं तो अनुभाव कार्य हैं।

अनुभावों की संख्या मुख्यतः चार तक मानी जाती हैं -

1) सात्विक, 2) कायिक, 3) मानसिक और 4) आहार्य।

(i) सात्विक अनुभाव - जो चेष्टाएँ स्वतः ही स्थिति के अनुरूप संभुत हो जाया करती हैं, उन्हें सात्विक भाव या अनुभाव के नाम से अभिहित किया जाता है। जैसे - स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु तथा प्रलय।

(ii) कायिक अनुभाव - आश्रय (नायक) आलंबन (नायिका) द्वारा परस्पर प्रभावित करने के लिए की जाने वाली चेष्टाएँ कायिक भाव या अनुभाव कही जाती है। कटाक्ष-विक्षेप आदि चेष्टाएँ इसी प्रकार की हुआ करती हैं।

(iii) मानसिक अनुभाव - इन्हें वाचिक अर्थात् वाणी-संबंधी अनुभाव भी कह सकते हैं।आश्रय-आलंबन द्वारा परस्पर प्रभाव में आकर मनःस्थिति व्यक्त करने के लिए बोले गये संवाद इसी के अंतर्गत आते हैं। नाटक आदि दृश्य-काव्यों में इनका पर्याप्त महत्व रहा करता है।

(iv) आहार्य अनुभाव- बनावटी अलंकरण, वेश-भूषा आदि का विन्यास आहार्य अनुभाव के अंतर्गत आता है।

4) संचारी भाव - स्थायी भावों को बढ़ावा देनेवाले अस्थायी भावों को संचारी भाव कहते है। ये भाव स्थायी भावों की अनुभूति को बढ़ाने में सहायक होते हैं, परन्तु स्थायी भावों की भाँति ये रसानुभूति तक स्थिर नहीं रहते । संचारी भावों की संख्या तैंतीस मानी गई है। जैसे-

1. निर्वेद (उदासीनता), 2. ग्लानि, 3. आवेग, 4. शंका, 5. दैन्य., 6. श्रम, 7. मद, 8. जड़ता, 9. उग्रता, 10. अमर्ण 11. मोह, 12. उन्माद, 13. असूया (डाह), 14. चिन्ता, 15. विषाद, 16. औत्सुक्य, 17. निद्रा, 18. व्याधि, 19. आलस्य, 20. हर्ष, 21. गर्व, 22. धृत, 23. मति, 24. चापल्य, 25. ब्रीडा (लज्जा), 26. अवहित्या (छिपाना), 27. स्वप्न, 28. विबोध, (जागृति), 29. अपस्मार (मृर्गी), 30. स्मृति, 31. त्रास, 32. वितर्क एवं, 33. मरण।

रस व स्थायी भाव

	रस	स्थायी भाव
1.	श्रृंगार रस	रति (प्रेम)
2.	हास्य रस	हास
3.	करुण रस	शोक
4.	रौद्ररस	क्रोध
5.	वीर रस	उत्साह
6.	भयानक रस	भय
7.	बीभत्स रस	जुगुप्सा
8.	अद्भुत रस	विस्मय
9.	शांत रस	निर्वेद
10.	वात्सल्य रस	वत्सलता
11.	भक्ति रस	भगवत भक्ति
12.	बौद्धिक रस	बौद्धिकता

विशेषः
भरत मुनि ने केवल आठ रसों की ही व्याख्या अपने 'नाट्यशास्त्र' में की है।

2. छंद

छंद-शास्त्र में पद्यरचना के नियमों, पद्यों के नाम, लक्षण, भेद आदि की विशद व्याख्या रहती है। छन्द -शास्त्र के प्रथम आचार्य महर्षि पिंगल हुए हैं। उन्हीं के नाम से इस शास्त्र को ''पिंगल शास्त्र'' भी कहा जाता है।

i) चरणः छन्द-प्रत्येक छन्द में चरण होते हैं। 'चरण' की रचना वर्णों और मात्राओं की संख्या तथा उनके नियमित प्रयोग के अनुसार होती है।

बरवै, दोहा और सोरठा दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं परन्तु उनमें चार चरण होते हैं। ऐसे छन्दों की प्रत्येक पंक्ति को 'दल' कहते हैं।

कुण्डलियाँ तथा छप्पय में छः चरण होते हैं।

ii) यति :- पढ़ते समय जिह्वा के रुकने के स्थान को विराम, विश्राम, (**Pause**) या यति कहते हैं।

iii) गति :- छन्दों में गीत - प्रवाह को गति कहते हैं।

iv) तुक :- छन्द में चरणों के अन्त में आने वाली वर्ण की एकता को तुक कहते हैं।

v) मात्रा :- किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसकी अवधि को मात्रा कहते हैं। पिंगल शास्त्र में ह्रस्व स्वर को लघु और दीर्घ स्वर को गुरु माना गया है। लघु का संकेत ''।'' तथा दीर्घ का संकेत 'ऽ' माना गया।

लघु और गुरु के संबंध में नियम

(1) अ, इ, उ, ऋ वर्ण और इनकी मात्रा वाले व्यंजन लघु पढ़े जाते हैं।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, वर्ण तथा इनकी मात्रा वाले व्यंजन गुरु वर्ण पढ़े जाते हैं।

(2) संयुक्ताक्षर के पूर्व का लघु वर्ण (जिस पर बल पड़े) गुरु माना जाता है।

जैसे - मग्न युद्ध मन्द

ऽ । ऽ । ऽ ।

(3) विसर्ग से युक्त वर्ण को भी गुरु माना जाता है; 'दुःख' तथा 'निःशेष' में 'दुः' 'निः' को गुरु पढ़ा जाता है।

(4) चन्द्र बिन्दुवाले लघु वर्णों को लघु ही पढ़ा जाता है। जैसे - 'हँसना' और 'फँसना' में 'हँ' तथा 'फँ' वर्ण लघु ही माने जाते हैं।

(5) हलन्त वर्ण के पहले का वर्ण भी गुरु माना जाता है। हलन्त की मात्रा नहीं गिनी जाती; जैसे – 'भगवान्' और 'रजन्ण में 'न्' की कोई मात्रा नहीं रहती है। उनके पूर्ववर्ती शब्द क्रमशः 'व' और 'ज' को दीर्घ माना जाता है।

(6) कभी – कभी (सदैव नहीं) लिखने में दीर्घ सा होने पर भी वर्ण लघु पढ़ा जाता हैं –

जैसे – 'मोहि उपदेश दीन्ह गुरु नीका'

। । । । ऽ ।ऽ । ऽ । ऽ ऽ

यहाँ 'मो' वर्ण लघु पढ़ा जावेगा। इसी तरह कभी – कभी ध्वनि के अनुसार भी लघु – दीर्घ का निर्णय किया जाता है।

गण :- तीन वर्णों को मिलाकर एक गण माना जाता है। लघु और गुरु के क्रम के अनुसार गणों की संख्या 8 है।

गण	संकेत
य गण	। ऽ ऽ
म गण	ऽ ऽ ऽ
त गण	ऽ ऽ ।
र गण	ऽ । ऽ
ज गण	। ऽ ।
भ गण	ऽ । ।
न गण	। । ।
स गण	। । ऽ

सूत्र :- य मा ता रा ज भा न स ल गा।

छंदों के प्रकारः

मात्रिक छंद :- मात्रिक छंद वे हैं जिनमें प्रत्येक चरण में अक्षरों की मात्राओं के योग तथा यति अनुसार नियम निर्धारित होते हैं। (इनमें केवल मात्राओं का जोड़ ही ध्यान में रखा जाता है। गणों की एकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। जैसे – दोहा, चौपाई, रोला, छप्पय आदि।

वर्णिक छंद :- वर्णिक छंद वे हैं जिनमें वर्णों के आधार पर नियम बनाये गए हैं। इनमें प्रत्येक चरण में लघु – गुरु का क्रम समान होता है। इनमें मात्राएँ भी समान होती हैं। जैसे – (तोटक वर्णिक छन्द के प्रत्येक चरण में 4 सगण (।।ऽ,।।ऽ, ।।ऽ,।।ऽ) होते हैं।) हिन्दी में वर्णिक (अर्धसम तथा वर्णिक विषम छन्दों का प्रचलन नहीं होता)

3. अलंकार

अलंकार शब्द का अर्थ है आभूषण ! आभूषण धारण करने से जिस प्रकार शरीर का सौन्दर्य द्विगुणित हो जाता है उसी प्रकार पद्य अथवा गद्य की भाषा में यथास्थान उचित अलंकार प्रयोग होने से भाषा अथवा काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है। इसीलिए काव्य के शोभाकारक धर्मों को ही अलंकार कहते हैं।

किसी बात को साधारण ढंग से न कहकर जब इस प्रकार कहा जाता है कि उक्ति में कुछ चमत्कार उत्पन्न हो जाये और उस कथन से भाषा के सौन्दर्य सुनने या पढ़ने में अभिवृद्धि हो तो उसे अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार काव्य की सीधी-सादी परिभाषा 'रसात्मक वाक्य काव्य' के रूप में कही जाती है।

अलंकारों के भेद :-

1) शब्दालंकार, 2) अर्थालंकार, 3) उभयालंकार

शब्दालंकार :- जहाँ शब्दों में चमत्कार पाया जाये वहाँ शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द रख देने से चमत्कार नष्ट हो जाता है। शब्दालंकार से भाषा की ऊपरी सजावट इस प्रकार से होती है कि पढ़ते या सुनते समय ध्यान शब्दों के चयन की ओर जाता है, तत्पश्चात् उसके भावों की ओर।

उदा - कनक कनक तें सौगुनी मादकता अधिकाय।

अर्थालंकार :- जिन विधानों के द्वारा काव्य में अर्थ-सम्बन्धी चमत्कार प्रकट होता है उसे अर्थालंकार कहते हैं।

इसमें चमत्कार अर्थ में निहित होता है। इस स्थिति में अलंकार शब्द के अर्थ पर निर्भर रहता है, इसलिए यदि प्रयुक्त शब्द के स्थान पर उसका पर्यायवाची (समान अर्थ वाला) शब्द रख दिया तो भी उसका चमत्कार नष्ट नहीं होता।

उदाहरण - राधा का मुख इन्दु सौं सुन्दर।

उभयालंकार :- जब एक ही स्थल पर शब्दालंकार एवं अर्थालंकार के शब्दगत और अर्थगत दोनों सौन्दर्य साथ-साथ पाये जाते हैं तब ऐसे स्थलों में उभयालंकार होता है।

1) दीरघ साँस न लेहि दुःख, सुख साईहिं न भूल।
दई दई क्यों करत है, दई दई सु कुबूल।।

इस उदाहरण में क्यों-करत, सुख साईहिं में छेकानुप्रास है तथा दई में यमक (दी = देव, दई = दिया हुआ) है। अतः शब्दालंकार और अर्थालंकार के सम्मिश्रण से उभयालंकार हुआ।